UNIVERSITY OF MYSORE
*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE*
SERIES-No. 168

# VĪRĀGAMOTTARAM

**First Volume**

# वीरागमोत्तरम्


CRITICALLY EDITED BY

VIDVAN Dr. H. P. MALLEDEVARU. M.A, Ph. D.

DIRECTOR

*Oriental Research Institute and Professor of Sanskrit,*
*Department of Studies in Sanskrit,*
*Manasa Gangotri, University of Mysore, Mysore.*

*Assistant Editors:*

*Vidvan R. Rama Shastri*
*Vidvan H. K. Siddagangaiah*
*Vidvan N. S. Venkatanathachar*



*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE,*
*UNIVERSITY OF MYSORE, MYSORE*
*1988*

Price : 30 Rs

Series, No.
168

# VĪRĀGAMOTTARAM

ORI
MYSORE

UNIVERSITY OF MYSORE
*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE*
SERIES-No. 168

# VĪRĀGAMOTTARAM

**First Volume**

# वीरागमोत्तरम्

CRITICALLY EDITED BY


VIDVAN Dr. H. P. MALLEDEVARU. M.A, Ph. D.
DIRECTOR
*Oriental Research Insttiute and Professor of Sanskrit,*
*Department of Studies in Sanskrit,*
*Manasa Gangotri, University of Mysore, Mysore.*

*Assistant Editors:*
*Vidvan R. Rama Shastri*
*Vidvan H. K. Siddagangaiah*
*Vidvan N. S. Venkatanathachar*



*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE,*
*UNIVERSITY OF MYSORE, MYSORE*
*1988*

प्राच्यविद्यासंशोधनालयग्रन्थमालाङ्कः १६८

# वीरागमोत्तरम्

## प्रथमः भागः

सम्पादकः

विद्वान् डा. हेच्- पि. मल्लेदेवरु. एम्. ए; पिहेच्. डि.
निर्देशकः, प्राच्यविद्यासंशोधनालयः तथा प्राध्यापकः,
स्नातकोत्तरसंस्कृताध्ययनसंशोधनविभागः,
मानसगङ्गोत्रि, मैसूरु

सहायकसम्पादकाः
विद्वान् आर्. रामशास्त्री
विद्वान् हेच्. के. सिद्धगङ्गय्यः
विद्वान् एन्. एस्. वेङ्कटनाथाचार्यः

प्राच्यविद्यासंशोधनालयः
मैसूरु विश्वविद्यानिलयः मैसूरु
१९८८

UNIVERSITY OF MYSORE
*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE*
SERIES-NO. 168

# VĪRĀGAMOTTARAM

**First Volume**

CRITICALLY EDITED BY

VIDVAN Dr. H. P. MALLEDEVARU, M.A, Ph.D.

DIRECTOR
*Oriental Research Institute and Professor of Sanskrit,*
*Department of Studies in Sanskrit,*
*Manasa Gangotri, University of Mysore, Mysore.*

*Assistant Editors:*

*Vidvan R. Rama Shastri*
*Vidvan H. K. Siddagangaiah*
*Vidvan N. S. Venkatanathachar*

*ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE*
*UNIVERSITY OF MYSORE, MYSORE*
*1988*

*First Edition 1988*

प्रथम मुद्रणम् १९८८

*Copy Right;*

The Oriental Research Institute, Mysore 1988

सर्वेऽधिकाराः स्वायत्तीकृताः

प्राच्यविद्यासंशोधनालयः मैसूरु १९८८

PUBLISHED BY

THE ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
UNIVERSITY OF MYSORE, MYSORE

मैसूरु विश्वविद्यानिलय प्राच्यविद्यासंशोधनालय-
द्वारा प्रकाशितः

PRINTED AT
JAYANTHI PRINTERS, PAMPAPATHI ROAD,
JAYANAGAR, MYSORE

ओं नमः शिवाय

# वीरागमोत्तरविषयसूचनी

## प्रथमः पटलः — तत्त्वस्वरूपदर्शनम्


| क्रम सं | विषयः | पुट सं | श्लोक सं |
|---|---|---|---|
| 1 | ईश्वरं प्रति गौर्याः वीरमाहेश्वराचार कथनप्रार्थना | 1 | 1 |
| 2 | ईश्वरेण रेणुकोक्तार्थकथनप्रतिज्ञा | 2 | 5 |
| 3 | आदौ शिवतत्त्वाविर्भावः | 3 | 11 |
| 4 | शिवतत्त्वात् रुद्रतत्त्वद्वारा आणवान्तसृष्टिः | 4 | 15 |
| 5 | पञ्चविधाणवानि | | 16 |
| 6 | तत्र प्रथमं सिद्धाणवम् | 5 | 18 |
| 7 | द्वितीयं त्याजाणवम् | 5 | 18 |
| 8 | तृतीयं मलाणवम् | 6 | 19 |
| 9 | चतुर्थं गुणाणवम् | 6 | 19 |
| 10 | पञ्चमं योगाणवम् | 6 | 20 |
| 11 | आणवमलादीनां निरसनोपायः | 6 | 22 |
| 12 | शिवाद्वैततत्त्वोपदेशः | 7 | 25 |
| 13 | मतान्तररूपमलत्यागावश्यकता | 8 | 27 |
| 14 | तत्र निरसनीयं अद्वैतमतम् | 8 | 27 |
| 15 | तन्निरसनेन स्वमतोपपादनम् | 8 | 30 |
| 16 | सांख्यमतनिरसनम् | 12 | 44 |
| 17 | वेदान्तिमतनिरसनम् | 15 | 45 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 18 | योगमतनिरसनम् | 15 | 56 |
| 19 | तार्किकमतनिरसनम् | 15 | 57 |
| 20 | व्यासमतनिरसनम् | 16 | 58 |
| 21 | पुराणवादनिरसनम् | 18 | 66 |
| 22 | स्वमतोपपादनम् | 19 | 70 |
| 23 | मीमांसकमतनिरासः | 20 | 73 |
| 24 | वैखानसमतनिरासः | 20 | 75 |
| 25 | वैष्णवमतनिरासः | 21 | 78 |
| 26 | वैष्णवेभ्यः सर्वविधोपकारनिषेधः | 22 | 82 |
| 27 | वैष्णवानां अधमत्वे इतिहासः तथा जम्बुमाल्युपाख्यानम् | 23 | 86 |
| 28 | जम्बुमालिकुलजातवैखानसकुल विशेषदूषणम् | 29 | 110 |
| 29 | पाञ्चरात्रागमनिन्दा | 30 | 113 |
| 30 | वीरमाहेश्वरमहिमा | 30 | 114 |
| 31 | वीरमाहेश्वराणां ईश्वरध्यानविधिः | 31 | 11[illegible] |
| 32 | तेषां नादानुसन्धानविधिः | 35 | 133 |
| 33 | वीरमाहेश्वराणां वैभवम् | 37 | 139 |
| 34 | शिवभक्तिविहीननिन्दा | 38 | 143 |
| 35 | नाडीपरिगणनादिक्रमनिन्दा | 39 | 150 |
| 36 | योगिभिः क्रियमाणानां कर्मणां निन्दा | 40 | 152 |
| 37 | वीरमाहेश्वरणां ज्ञानशक्तिः | 40 | 161 |
| 38 | गौर्या शिवपूजाध्यानादिमहिमाप्रश्नः | 44 | 168 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 39 | तदुत्तरत्वेन मणिभद्रोपाख्यानकथनम् | 45 | 170 |
| 40 | एतदितिहासफलश्रुतिः | 47 | 178 |
| 41 | पटलसमापनम् | 48 | 180 |


## द्वितीयः पटलः

### वीरमाहेश्वरस्वरूपमन्त्रानुवर्णनम्


| | | | |
|---|---|---|---|
| 42 | पार्वत्या वीरमाहेश्वरमहिमाप्रश्नः | 49 | 1 |
| 43 | ईश्वरेण वीरमाहेश्वरमहिमावर्णनम् वीरमाहेश्वराणां देवाधिदेवपूज्यत्वं च | 49 | 2 |
| 44 | तदन्यद्विजादिपूजायाः निषेधः | 58 | 36 |
| 45 | शिवाधिक्ये धर्मगुप्तेतिहासवर्णनम् | 60 | 47 |
| 46 | धर्मगुप्तस्तुतिः | 71 | 90 |
| 47 | धर्मगुप्तेतिहासश्रवणफलम् | 74 | 10 |
| 48 | जङ्गमानां महिमावर्णनम् | 25 | 105 |
| 49 | जङ्गमानां स्तुतिः | 79 | 118 |
| 50 | शिवदीक्षासम्पन्नवीरमाहेश्वरस्तुतिः | 85 | 144 |
| 51 | शिवेन रेणुकभक्तिप्रशंसा | 90 | 165 |
| 52 | पार्वत्या रेणुकेतिहासप्रश्नः | 91 | 168 |
| 53 | रेणुकेतिहासवर्णनम् | 91 | 169 |
| 54 | रेणुकेन मणिभद्रनृपसमीपगमनम् | 94 | 179 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 55 | मणिभद्रेण रेणुकं प्रति 'लोकेऽस्मिन् श्रेष्ठः तपस्वी कः' इति प्रश्नः | 95 | 186 |
| 56 | वीरमाहेश्वराणामेव तादृशत्वमित्युत्तरम् | 96 | 188 |
| 57 | रेणुकेन मणिभद्रं प्रत्युपदेशः | 97 | 194 |
| 58 | वेदेषु नमक-चमक-शतरुद्रीयाणामेव प्राधान्यम् | 99 | 201 |
| 59 | शिवमन्त्रमहिमा | 99 | 203 |
| 60 | षडक्षरीमन्त्रमहिमा | 101 | 208 |
| 61 | शिवमन्त्रमहिमावर्णनपूर्वकं पटलसमापनम् | 103 | 216 |



## तृतीयः पटलः

## वीरशैवदीक्षाकालनिर्णयः



| | | | |
|---|---|---|---|
| 62 | मणिभद्रेण रेणुकं प्रति दीक्षाकाल विवरणारम्भः | 105 | 1 |
| 63 | दीक्षायाः उत्तमकालनिर्णयावश्यकता | 106 | 4 |
| 64 | दीक्षाकालशुद्धिविवरणम् | 106 | 6 |
| 65 | तत्र — लग्नशुद्धिः | 106 | 7 |
| 66 | नक्षत्रबलाबलपरिशोधनम् | 109 | 19 |
| 67 | वारशुद्धिस्फुटीकरणम् | 112 | 33 |
| 68 | तिथिशुद्धिविवरणम् | 113 | 37 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 69 | योगशुद्धिपरिशोधनम् | 115 | 47 |
| 70 | लग्नशुद्धिपरिष्कारः | 121 | 71 |
| 71 | करणशुद्धिपरिशोधनम् | 125 | 89 |
| 72 | ग्रहाणां उदयास्तमयादिकालपरिशोधनम् | 129 | 98 |
| 73 | मेषादिसौरमासशुद्धि निर्णयः | 129 | 103 |
| 74 | पितृपक्षादिकालपरिशोधनम् | 132 | 116 |
| 75 | ग्रहगतिनिर्णयः | 132 | 118 |
| 76 | मलमासादिलिर्णयः | 144 | 170 |
| 77 | क्षयमासादिनिर्णयः | 145 | 173 |
| 78 | निष्पञ्चकत्वादिनिर्णयः | 148 | 187 |
| 79 | प्राकृतदीक्षापरित्यागोपदेशः | 149 | 189 |
| 80 | दीक्षावर्ज्यदिननिर्णयः | 149 | 191 |
| 81 | दीक्षानर्हधर्मनिर्णयः | 151 | 197 |
| 82 | दीक्षामहिमा | 153 | 206 |
| 83 | दीक्षायां कालशोधनस्यावश्यकता | 160 | |
| 84 | तत्र वेदाद्रिनिवासिश्रीपतिकथोदाहारः | 161 | 235 |
| 85 | तत्कृतशिवपूजामहिमा | 163 | 246 |
| 86 | सूर्यादिग्रहकृतं तत्स्तोत्रम् | 165 | 254 |
| 87 | एतत्स्तोत्रपठनफलश्रुत्या पटलार्थनिगमनम् | 168 | 268 |

## चतुर्थः पटलः

## वीरशैवदीक्षास्वरूपपादरेणुवर्णनम्


| | | | |
|---|---|---|---|
| 88 | पार्वत्या दीक्षोपयुक्तानां द्रव्याणां कथनप्रार्थना | 170 | 1 |
| 89 | ऋतुमानादिदीक्षाकालानुगुण्येन भिन्नभिन्नद्रव्यसञ्चयविधिः | 170 | 3 |
| 90 | तदङ्गजङ्गमगुरुपूजाविधिः | 171 | 5 |
| 91 | महिमान्वितगुरुस्वरूपवर्णनम् | 172 | 8 |
| 92 | गुरुपरिवारपूजनविधिः | 185 | 60 |
| 93 | दीक्षाङ्गपूजाविधिः–प्रयोगः | 185 | 62 |
| 94 | तत्र कलशपञ्चकस्थापनविधिः | 185 | 63 |
| 95 | पञ्चकलशपूजाविधिः | 188 | 71 |
| 69 | पूजोपयोगिफलपुष्पपरिगणनम् | 190 | 83 |
| 97 | गुरुमन्त्रपठनविधिः | 192 | 91 |
| 98 | पादोदकप्रसादादिना परितो विधिः | 193 | 93 |
| 99 | अतिथिसत्कारविधिः | 193 | 95 |
| 100 | आराध्यविग्रहपूजाविधिः | 194 | 97 |
| 101 | ईश्वरस्वरूपस्य गुरोः स्तोत्रम् तत्र अष्टोत्तरशतनामावलिः | 196 | 104 |
| 102 | गुरवे वस्त्रदानविधिः | 203 | 135 |
| 103 | ,, आभरणदानविधिः | 203 | 136 |
| 104 | ,, भस्मसमर्पणविधिः | 204 | 138 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 105 | गुरवे नैवेद्यसमर्पणविधिः | 204 | 139 |
| 106 | ,, धूपदीपादिसमर्पणविधिः | 205 | 143 |
| 107 | गौर्या-गुरुपूजामहिमाविषये इतिहास कथनानुयोगः | 205 | 145 |
| 108 | तदितिहासतया ओहिलचरित्र कथनारम्भः | 206 | 147 |
| 109 | शिखावतीनगरीवर्णनम् | 206 | 149 |
| 110 | तन्नगरीनिवासिनः ओहिलस्य वर्णनम् | 206 | 150 |
| 111 | गुरुणा तद्दर्शनम् | 207 | 140 |
| 112 | तस्य श्रीशिवसन्निधिप्रेषणम् | 207 | 15 |
| 113 | ओहिलस्य भक्त्यतिशयवर्णनम् | 208 | 157 |
| 114 | तदज्ञतया तस्य कीटविशेषेण जनित प्राणहिंसावर्णनम् | 212 | 170 |
| 115 | तदसहमानस्य ओहिलस्य आक्रोशप्रभावः | 215 | 816 |
| 116 | ओहिलेतिहासफलश्रुतिः | 219 | 19 |
| 117 | दीक्षाविधेरवशिष्टभागानुवृत्तिः | 220 | 199 |
| 118 | पादोदप्रसादादिस्वीकारविधिः | 221 | 212 |
| 119 | मन्त्रजपविधिः | 222 | 211 |
| 120 | दीक्षायाः महिमा | 223 | 215 |
| 121 | अदीक्षितजनदर्शनादेः महापातकहेतुत्वम् | 224 | 216 |
| 122 | दीक्षानिन्दायाः पापावहत्वम् | 225 | 223 |
| 123 | वीरमाहेश्वराणां अत्यन्तश्रेष्ठता | 226 | 226 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 124 | वीरमाहेश्वगणां सर्वतत्त्वमयत्वं सर्वदेवाताशक्तिमयत्वम् च | 228 | 234 |
| 125 | वीरमाहेश्वरकवचोपदेशः | 234 | 256 |
| 126 | वीरमाहेश्वरकवचमहिमा | 242 | 285 |
| 127 | दीक्षाकाले कवचन्यासफलम् | 244 | 293 |
| 128 | कवचपठनफलम् | 245 | 296 |
| 129 | कवचोपदेशविधिः | 246 | 300 |
| 130 | दीक्षाकाले मन्त्रोपदेशविधिः | 246 | 304 |
| 131 | लिङ्गधारणविधिः | 248 | 311 |
| 132 | प्रमादात् लिङ्गनाशे प्रायश्चित्तविधिः | 251 | 321 |
| 133 | लिङ्गशैथिल्यभ्रंशादिविषये मौढ्यस्य त्याज्यतोपदेशः | 255 | 338 |
| 134 | दीक्षापादोदकप्रसादादिरहित पूजादौ पापावाप्तिकथनम् | 258 | 351 |
| 135 | देवतान्तरभक्तनिन्दाः | 259 | 354 |
| 136 | दीक्षितस्य वीरमाहेश्वरस्य भूरुद्रसंज्ञा | 260 | 361 |
| 137 | तदङ्गतया मातङ्गयोगिकथानुयोगः | 262 | 368 |
| 138 | मातङ्गयोगितिहासकथनारम्भः | 263 | 370 |
| | तुङ्गभद्रानदीवर्णनम् | 263 | 370 |
| 140 | पम्पासरोवरवर्णनम् | 264 | 376 |
| 141 | मतङ्गाद्रिवर्णनम् | 266 | 383 |
| 142 | तत्र स्थितस्य दुर्गस्य वर्णनम् | 267 | 384 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 143 | तत्र स्थितस्य मातङ्गयोगिनः हिंसाप्रवृत्तिवर्णनम् | 267 | 387 |
| 144 | तत्र यतिविशेषागमनम् | 269 | 395 |
| 145 | मतङ्गेन आगतरेणुकयतिदर्शनम् | 270 | 398 |
| 146 | मतङ्गेन यतिनिकटात् वस्त्रादिलुण्ठनम् | 270 | 399 |
| 147 | मतङ्गं प्रति तत्कृतपापादेः कः भागी ? इति प्रश्नः | 271 | 402 |
| 148 | तेन गृहं गत्वा भार्यादर्शनम् | 271 | 404 |
| 149 | तां प्रति तेन तत्प्रश्नः | 273 | 410 |
| 150 | तया पत्युरेव पापफलभागित्वोत्तरम् | 274 | 412 |
| 151 | तेन कान्तायाः वधः | 274 | 414 |
| 152 | अनुपदमेव मतङ्गेन यतिसमीपागमनम् | 275 | 416 |
| 153 | स्वस्य कृतार्थताकथनम् | 275 | 418 |
| 154 | यतिना रेणुकेन मतङ्गं प्रत्युपदेशः दीक्षादानं च | 277 | 424 |
| 155 | रेणुकयतेरन्तर्धानम् | 278 | 427 |
| 156 | ततो मतङ्गस्य दिव्यरूपप्राप्तिः | 278 | 428 |
| 157 | देवैः कृतं मतङ्गस्तोत्रम् | 279 | 430 |
| 158 | एतदितिहासाश्रयेण दीक्षायाः महिमा | 280 | 436 |
| 159 | वीरमाहेश्वरेभ्यः दानस्य महिमा | 281 | 439 |
| 160 | शुद्धशैवात् वीरशैवस्य प्राशस्त्यम् | 283 | 448 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 161 | पुनः प्रकारान्तरेण वीरशैवदीक्षामहिमा | 284 | 450 |
| 162 | दीक्षायाः भेदाः | 286 | 457 |
| 163 | तत्र स्वरदीक्षायाः निन्दा | 286 | 458 |
| 164 | शुद्धदीक्षायाः निन्दा | 289 | 472 |
| 165 | नवदीक्षायाःमहिमा | 295 | 497 |
| 166 | शुद्धदीक्षितानां निन्दा | 296 | 502 |
| 167 | दीक्षितानां वीरमाहेश्वराणां स्तुतिः | 298 | 508 |
| 168 | एतत्प्रसङ्गे सत्येन्द्रेतिहासकथनारम्भः | 02 | 526 |
| 169 | त्रिकूटगिरिवासिसत्येन्द्रवर्णनन् | 304 | 533 |
| 170 | तत्पत्न्याः सुशीलायाः वर्णनम् | 306 | 541 |
| 171 | तत्पुत्रशिवशर्मवर्णनम् | 306 | 541 |
| 172 | तस्य रेणुकेन दीक्षादानवर्णनम् | 306 | 542 |
| 173 | तस्य षड .रीमन्त्रोददेशः | 307 | 548 |
| 174 | पादरेणुप्रशंसा | 308 | 549 |
| 175 | पादरेणुनिन्दायाः पापावहत्वम् | 312 | 569 |
| 176 | पादरेणोरेव ब्रह्मतत्त्वस्वरूपत्वम् | 312 | 571 |
| 177 | विस्तरेण पादरेणुमहिमावर्णनम् | 313 | 572 |
| 178 | दीक्षायाः पादरेणोश्च अतिशयित प्रभाववर्णनपूर्वकं चतुर्थपटलनिगमनम् | 319 | 596 |


इति वीरागमोत्तर–प्रथमभागात्मक

पटलचतुष्टय विषयसूचनी

समाप्ता

## INTRODUCTION

### ĀGAMA:

Indian culture and literature find their origin in Nigama (Veda) and Āgama. Vedas are believed to be involuntary and instantaneous revelations of God (यस्य निःश्वसितं वेदाः) Āgamas are also revelations made by God, but they are voluntary and intentional. Being an ocean of mercy, God revealed the Supreme knowledge for the good of humanity,[1] keeping His consort Pārvati[2] or one of his divine sons, Skanda or Gaṇeśa, as a nominal recipient (Nimitta). Thus, Āgamas are sacred like the Vedas, they also excel the latter because God revealed the Āgamas with the sole intention of saving the souls immersed in the sea of birth and death.

The word Āgama is derived from the root 'gam' which is prefixed with Ā. The general meaning of 'gam' is to move. Its special meaning is to know गत्यर्थानां ज्ञानार्थकत्वात्. So, the word Āgama yields many meanings :

(1) That which came from the mouth of the Lord[3],

---

1 सृष्टिकाले महेशानः पुरुषार्थप्रसिद्धये ।
विधत्ते विमलं ज्ञानं पञ्चस्रोतोऽभिलक्षितम् ॥ मृगेन्द्रागमः

2 आगतं शिववक्त्रात्तु गतं चगिरिजानने ।
मतं च वासुदेवस्य तस्मादागम उच्यते ॥ (तन्त्रसमुच्चयः)

3 शिवं शिवज्ञानात्मकं अवबोधरूपं परमशिवे विद्यते ।
(शिवयोगवर्णनम्)

(2) That into which all knowledge merges,
(3) That from which all knowledge emerges,
(4) That from which every thing is known, etc.'
This is supported bythe Āgamic statements also

Āgamas are divine revelations and so the question of the date of Āgamas does not arise. Just as the Vedas are beginningless, so also the Āgamas are time-less and beginningless according to tradition.

Āgamas may be broadly divided into Śaiva, Vaisnava, Śākta, Bauddha and Jaina. The Śaivāgamas are twenty eight in number. They are: Kāmika Yogajā, Cintya, Kāraṇa, Ajita, Dīpta, Sūkaṣm, Sahasra, Aṁśumān, Suprabheda, Vijaya, Niśvāsa, Svāyambhuva, Anala, Vīra, Raurava, Makuṭa, Vīmala, Candrajñāna, Bimba, Prodgīta, Lalita, Siddha, Santāna, Śarvokta, Pārameśvara, Kiraṇa and Vātula.

In addiiton to the above-listed twenty eight Āgamas, there are two hundred and twentyfive Upāgamas.

---

'आगच्छति परमात्मनो वक्त्रेभ्यः इत्यागमः । आसमन्ताद् गच्छति ज्ञानं यस्मिन् स आगमः । आ गच्छति निष्क्रामति ज्ञानं यस्मात् स आगमः । आ समान्ताद् गम्यते ज्ञायते सर्वं यस्मात् स आगमः । etc., are the gramatical derivations.

In the list given above, it may be noted that the first ten (Kāmika to Suprabheda) are called "Śivabheda" and the recipients in these Āgamas are three. The remaining Āgamas are called "Rudrabheda" because, there, the recipients of the divine knowledge are two Vīrāgama belongs to the Rudrabheda type. The names of all the Śaivāgamas and Upāgamas, the number of stanzas contained in each Āgama as well as the respective recipients are stated in the Tantrāvatāra paṭala of the Kāmika and some other Āgamas. Thus, the extent of Śaivāgama literature is very vast.

Different systems of Indian Philosophy like Vīraśaivism, Śaivasiddhānta, Kashmir Śaivism etc., have accepted the Śaivāgamas as the highest authority. Great scholars like Arul Nandi Śivacārya, Nīla kaṇṭha Śivācārya etc, are of the opinion that Vedas and Āgamas are equally authoritative. Sripati Pandita, author of the Śrīkarabhāṣya, states that the Ṛgveda, Yajurveda, Sāmaveda, Atharva Veda and the Āgamas emanated respectively from the five faces of Śiva which are called Sadyojāta, Vāmadeva, Aghora, Tatpuruṣa and Īśāna.

Yāmunācārya, a Śrīvaisṇavite scholar of repute, has written a book called "Āgamaprāmāṇya" to prove the validity and authority of the vaiṣṇavāgamas.

Āgamas may be Śrauta (those which are constant with the Vedas) or Aśrauta (those that do no accept the authority of the Vedas). Jaina and Buddha Āgamas belong to the second category.

A close study of the Āgamas shows that they emphasise the practical aspect of realising fundamental truth. They clearly narrate the method and procedure of worshipping God.

The Śaivāgamas consist of four chapters or divisions, viz., Kriyāpāda, Caryāpāda, Yogapāda and Jñānapāda. Kriyāpāda deals with the construction of images etc. Caryāpāad deals with the procedure of the worship of deities on ordinary and special occasions. Yogapāda describes the eight-fold Yoga and finally the Śivayoga, while the Jñāpāda (or Vidyāpāda) expounds the three philosophical concepts Viz. Pati or Linga (God), Paśu or Aṅga (Soul) and Pāśa (the bondage caused by the triple taints called Malatraya).

The present work Vīrāgama is also called Virāgamottara. This Āgama states and explicates all fundamental principles and aspects of Viraśaiva religion and philosophy, keeping various mythological stories as the background. The narration is in the form of a conversation between Lord Śiva and his consort Goddess Parvati. The first four paṭalas of Vīrāgama are included in the present volume.

The first paṭala deals with the nature of the fundamental principles; the second paṭala describes the greatness of Vīramāheśvaras and the importance of the Mantra: the third patala delineates the eligibility, qualifications and time which have to be keenly

observed for granting Viraśaiva Dīkṣā and the fourth paṭala depicts the form and procedure of the Viraśaivā Dīkṣā. The points may be summed up as follows:

In the first paṭala it is shown that Śiva is the highest principle. In the second, the greatness of Lord Śiva is stated. It is also described that Ṣivamantra is the best Mantra and Śatarudriya is the most important and essential portion of the Vedas.

The third paṭala delineates the procedure of dīkṣā. It is suggested that auspicious time should be first chosen according to Astrology. Purity of Lagna the mutual influence of celestial constellations, the nature and impact of Vāra, tithi, yoga, karaṇa etc, have been explained in detail.

Further details of Dīkṣā are given in the fourth paṭala. Shiva is asked by Pārvati to enumerate the essential procedure for Dīkṣā. Śiva gives all the required information in this regard inc uding the method of worship to be conducted before Dīkṣā.

The number of stanzas in each paṭala is as follows

| | | | |
|---|---|---|---|
| I | paṭala contains | 180 | ślokas |
| II | -do- | 221 | do |
| III | -do- | 271 | do |
| IV | -do- | 600 | do |

In all present volume contains: 1272 ślokas.

Manuscripts:

Five manuscripts ı e been utilized for preparation of this edition. The text is mainly based on

the manuscript preserved in the Oriental Research Institute, while the other four manuscipts have been used for collation.

The details of the manuscripts are as follows:

| Symbol | Place of deposit | Script | Material | whether complete | Remarks |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| Ka | Oriental Research Institute, Mysore. | Deva—nagari | Paper | Yes, complete | Ms. No. A 79 |
| Kha | Mooru ?āvira Matha, Hubli. | Kannada | Palm Leaf | Yes, complete | Microfilm obtained |
| Ga | Pancācārya press, Mysore. | Kannada | Paper | In — complete. | Manuscript obtained and microfilmed |
| Gha | Bagalakot | Kannada | Paper | In - complete | Microfilm obtained |
| Ca | Shivyoga Mandira. | Kannada | Paper | In— complete. | Microfilm obtained |

I offer my salutations with gratitude to his Holiness Jagadguru Gangadhara Rajayogindra Mahaswamiji of Moorusavira Math, and also to Sri Swamijis of Shivayoga Mandira for sparing their valuable Manuscripts. I wholeheartedly thank the late Sri Mahadevaiah, proprietor of Panchacharya Press, Mysore, and also my esteemed friend Prof. G. M Umapathi shastri, Bagalkot for kindly sparing their manuscripts to this work.

It is my pleasant duty here to note that the U. G. C. was kind enough to sanction financial assistance for the Śaivāgama Project wherein this work was critically edited and prepared for the press. I am indebted to the U. G. C. for this generous gesture.

Three Pandits, viz., Vidvan N. S. Venkatanathachar, late Vidvan R. Rama Shastri and Vidvan Siddagangaiah have given their valuable assistance in critically editing this Āgama. I thank them for making available their erudition, critical acumen and sincere efforts in preparing this text.

It is also my duty to remember with gratitude the encouragement and co-operation extended by the Vice Chancellor and other authorities of the University of Mysore and also the members of the University Syndicate. The Director, University Printing Press was kind enough to assign this work to M/s Jayanti Printers, Mysore, who have printed this volume nicely. I am thankful to all of them.

I trust that the present volume will be a useful addition to the published Āgamic literature and hope the scholars and lovers of Sanskrit will welcome this publication warmly.

H.P. Malledevaru
Eidtor

॥ श्रीगणाधिपतये नमः ॥

॥ सदाशिवाय नमः ॥

# वीरागमोत्तरम्

## प्रथमः पटलः

ईश्वरं प्रति गौर्याः वीरमाहेश्वराचार कथनप्रार्थना

कैलासशिखरे रम्ये
सर्वधातुसमन्विते ।
पुण्यवृक्षैश्च संछन्ने[1]
रत्नधातुसमन्विते ॥ १ ॥

देवदेवः शिवः शम्भुः
जयते सर्वदा विभुः ।
कदाचित् कामिनी गौरी
सुरगन्धर्वसेवितम्[2] ॥ २ ॥

शम्भुं निरञ्जनं देवं
व्योमकेशं सदाशिवम् ।
पप्रच्छ परमप्रीत्या
वीरमाहेश्वरान्वितम् ॥ ३ ॥

---

1 सम्पन्ने—क. ख.

2 सेविते—च.

देवदेव ! जगन्नाथ !
सर्वाभीष्टफलप्रद ![1]
मम प्रीत्या महादेव !
स्वाचारं[2] गुरुकल्पितम् ॥ ४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
यत् सर्वं[3] ब्रूहि[4] तत् प्रभो ![5]
ईश्वरेण रेणुकोक्तार्थकथनप्रतिज्ञा
पुरा कृतयुगे गौरि !
रेणुको मुनिपुङ्गवः ॥ ५ ॥

सर्वागमसमोपेतः
धर्मशास्त्र[6]समन्वितः ।
कलाभिज्ञो धर्मवेत्ता
मन्त्र[7]लक्षणलक्षितः ॥ ६ ॥

देशिकेन्द्रस्तत्त्वनिधिः
षट्स्थलब्रह्मपूजितः ।
तृणीकृतब्रह्मविष्णुः
दानवेन्द्रप्रपूजितः ॥ ७ ॥

---

1 फलप्रदम्—क.
2 क्षाचारं—ग.
3 तत्सर्वं—ग.
4 ब्रुव—क भुवि—च.
5 मत्प्रभो—ग
6 सर्वशास्त्र—घ. च.
7 मन्त्रवित्तन्मन्त्र—ग. च.

यक्षगन्धर्वसिद्धैश्च
पूजितः सुरसेवितः ।
आधारचक्र[1]राजानं
गणाध्यक्षो [2]गजाननः ॥ ८ ॥

भक्तमाहेश्वराणां स-
[3]चाचारमस्मदीयकम् ।
कथयामास मत्प्रीत्या
ब्रह्मानन्दरसान्वितः ॥ ९ ॥

तत्सर्वं [4]साधकोपायं
आगमाचारवारितम् ।
अहं वामि [ब्रवीमि] मे कान्ते ![5]
शृणु मद्भक्ति[6]भक्तितः ॥ १० ॥

शिवतत्त्वा
द्याविर्भावः

पातालवक्त्रे[7] मे गौरि !
पञ्चब्रह्मतिरस्कृतम् ।
शिवतत्त्वं तत्त्वनाथं[8]
जायते मम संनिधौ ॥ ११॥

---

1 राजानः—क.
2 गणाधिपः—च.
3 च आचार—ग. सदाचार—च.
तत्सत्यं—क. (पा) तच्च त्वं—(ख)
5 देवि—क.
6 भवद्भक्ति—ख; मद्भक्त—ग
7 पाताले वक्त्रं—चां
8 तत्रनादं—क. ख. ग. (पा)

अशेषप्रमथाः सर्वे
तृणीकृतपुरन्दराः ।
तत्त्वं मम भक्त्या च
धारयन्ति[1] गुरोः कृपात्[2] ॥ १२ ॥

तत्त्वानां शिवतत्त्वं च
राजानं रमणीयकम् ।
षड्वक्त्रो मम सांनिध्ये
रेणुकेन [काच्च] गुणात्मना [नः][3] ॥ १३ ॥

उपदेशं स्वीकरोती[4]-
त्याख्यानं सुरविस्मितम् ।
अहं ब्रुवामि [ब्रवीमि] हे गौरि !
शृणु कारुण्यभावतः ॥ १४ ॥

शिवतत्त्वाद्रुद्रतत्त्वं
जायते वसुधातले ।
रुद्रतत्त्वेन [तत्त्वाच्च] तत्सर्वम्
अविद्याहंमनोन्मनम् ॥ १५ ॥

---

1 धारयन्ते—क.ख.

2 कृपया इत्यस्य स्थाने कृपादिति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 रेणुकेन णुदात्मनाम्—च ?

4 करोतीति–ग

जायेत चित्रिंम लोके
आणवं पञ्चधा भवेत् ।[1]
पञ्चविधाणव निरूपणम् सिद्धाणवं त्याजमाणं[2]
मलाणवं[3] गुणाणवम् ॥ १६ ॥

योगाणवमिति प्राहुः
प्रमथाः तत्त्वपारगाः ।
आहुः सर्वगुणोपेतं[4]
पञ्चाणवमितीरितम्[5] ॥ १७ ॥

आत्मन्यनात्मताबुद्धिः[6]
सिद्धाणवमिति स्मृतम् [ता] ।
अनात्मन्यात्मताबुद्धिः[7]
त्याजमाण[8]मिति स्मृतम् [ता] ॥ १८ ॥

---

1 इदं अर्धं—.पुस्तके नास्ति । किन्तु अस्य स्थाने 'मलाणवं गुणाणवं योगाणवमिति प्राहुः' इति वर्तते ।

2 त्याजुमाणं—ग. त्याज्यमान—घ.

3 मालाणवं—ग.

4 गुणोपेताः—ग.

5 मितीरिताः—ग.

6 त्मनाबुद्धिः—ग (पा) (च).

7 त्मनाबुद्धिः—ग (पा)

8 त्याजमान—क. ख.
त्याजुमाण—ग.

जीवे आत्मवताबुद्धिः[1]
मलाणवमितीरितम् ।
अविद्यायां तथाबुद्धिः
आत्मसाधनसाधिता [का] ॥ १९ ॥

गुणाणवमिति ख्याता[2]
सा [3]तन्त्रप्रकृतिः स्मृता ।
अविद्याग्रमलं[4] जाग्रे[5]
प्राणादिदशवायवः ॥ २० ॥

उद्बोधयन्ति[6] सततं
योगाणवमिति स्मृतम् । ॥ २१ ॥

आणवानि च सर्वाणि
विविधानि मलानि च
वीरमाहेश्वराः सर्वे
शीलाचार[7]समन्विताः ॥ २२ ॥

---

1 जीव आत्मवशा बुद्धिः—क.
जीवे आत्मसत्ताबुद्धिः—(ख) जीवयात्मवताबुद्धि—च.

2 गुणा नवेति विख्याताः—ग.

3 स्व—ग.

4 अविद्या शबलं—ग. च. अविद्या तवलं—क. ख.

5 जाग्र—क. ख.

6 आद्बोधयन्ति—क. (?)

शिवाचार—क. ग.

विद्रावयन्ति[1] सततं
आगमज्ञानसाधनात् ।
योगज्ञाः[2] तत्त्वनिपुणाः
मलत्रयविवर्जिताः ॥ २३ ॥

भूरुद्रा जङ्गमाः[3] सर्वे
भूमौ तिष्ठन्ति तत्त्वतः ।
तेषां मनोहरज्ञानं[4]
मम सायुज्यदायकम् ॥ २४ ॥

तत्त्वमस्यादिनिरतं
शिवसूत्रसमन्वितम् ।
शिवाद्वैत-तत्त्वोपदेशः
शिवाद्वैतं तत्त्ववेद्यं
शृणु कारुण्यभावतः ॥ २५ ॥

देवतानां समाजेषु
ब्रह्मविष्ण्विन्द्र[5-6]पूजिताः ।
भूरुद्राः जङ्गमा[6] स्सर्वे
स्वेच्छाविग्रहधारिणः ॥ २६ ॥

---

द्रावयन्ति—क. ख. दुद्रावयन्ति—ग.

2 योगज्ञान—च.

3 भूरुद्रजङ्गमाः—क. ग.

4 मनोहरं ज्ञानं—च.

5 विणवेन्द्र—क. ख. च.

6 भूरुद्रजङ्गमाः—क. ग.

विविधानि मलान्याशु
त्यजन्ति[1] गुरुसंनिधौ ।
जीवः शिवः शिवो जीवः
इति चाद्वैत[2]वादिनः              ॥ २७ ॥

तज्ज्ञानं मलमित्याहुः
रेणुकाद्याः सनातनाः ।
अशेषप्रमथाः सर्वे
ह्यागमा[3]चारसंयुताः              ॥ २८ ॥

जीवो जड इति ज्ञात्वा[4]
रेणुको मुनिपुङ्गवः ।
मम भक्त्या[5] मनः प्रोतः
सततं धारयेत् सुधीः[7]              ॥ २९ ॥

आत्मन्यनात्मताबुद्धिः
अनात्मन्यात्मतामतिः ।
ते बुद्धी ज्ञानयोगानां[7]
भवतो नात्र निश्चलात्              ॥ ३० ॥

---

1 त्यजन्ते—क.

2 इति अद्वैत—ग.

3 सर्वे आगमा—ग.

4 ज्ञानं—ग.

5 मनोप्रीत्या—ग.

7 इतःपरं च. पुस्तके—'अथ श्रुतिः—'योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमेव मांजुहोमि स्वाहा' इत्यधिकः पाठः दृश्यते ।

8 बुद्धि ज्ञानयोगानां—क. ख.        बुद्धीज्ञानयोगीनां—ग.

आत्मनः सारसम्भूता[1]
या विद्या पूर्वकल्पिता ।
सा भवत्यात्मयोगानां[2]
मलत्रयसमन्विताः ॥ ३१ ॥

अध्यात्मं तत्त्वयोगानां[3]
आधिभौतिकमेव च ।[4]
उभावपि मलं प्राहुः
प्रमथाः तत्त्व[5]पारगाः ॥ ३२ ॥

आध्यात्मिकं सदा नृणां
प्राणापानादिषु स्थितम्[6] ।
तत्तत्त्वं[7] तत्त्वविदुषां
त्यजन्ति[8] बुध[9]सेविताः ॥ ३३ ॥

---

[1] सम्भूत्या—क. ख.

[2] साऽभवत्स्वात्मयोगानां—क. साभवत्यात्मयोगीनां—ग.
अध्यात्मतत्त्वयोगानां—च.

[3] योगीनां—ग.

[4] इतः परं—च. पुस्तके—'अथश्रुतिः—प्राणं ब्रह्मेति व्यजानात्'
इत्यधिकः पाठः दृश्यते ।

[5] सत्त्व—ग.

[6] प्राणापानेषु संस्थितम्—ग.

[7] यत्तत्त्वं—ग. च.

[8] त्यजन्ते—क. ख.

[9] बुद्ध्य—ग.

जाग्रे प्राणं प्रतिष्ठाप्य
    स्वप्ने नागं प्रबोध्य यत् ।[1]
तज्ज्ञानं मलमित्याहुः
    आगमार्थविशारदाः                    ॥ ३४ ॥

वीरमाहेश्वरास्सर्वे
    मलसंसारवर्जिताः ।
जाग्रे स्वप्नं[1] समागत्य
    स्वप्ने जाग्रं[2] बलान्वितम्          ॥ ३५ ॥

धारयन्ति सदा प्रीत्या
    त एते[3] तत्त्वपारगाः ।
मन्त्राणां मूर्तयस्साक्षात्
    भूरुद्राकारजङ्गमाः[4]                ॥ ३६ ॥

सुषुप्तौ [5]स्वप्ने [6]जाग्रेऽपि
    प्रतिष्ठन्ति (न्ते) प्रभावतः ।
त[7] एते शाम्भवं[8] ज्ञान-
    योगसारं[9] पवित्रजम्               ॥ ३७ ॥

---

1 स्वप्ने प्राणं प्रबाधकम्—क. स्वप्ने नागं प्रबोधयेत्—म.

2 स्वप्ने—च. वस्वने जाग्रं—च.

3 ते एते—ग.

4 जङ्गम—ग.

5 सुषुप्ता—ग.

6 स्यप्न—ग.

7 ते—ग.

8 शाम्भव—ग. च.

9 पारं—ग.

जाग्रे चैतन्यकं[1] ज्ञानं
बालोन्मत्तपिशाचवत् ।
तिरस्कृत्य सदानन्द-
चेतनब्र[2]ह्मसाधनम् ॥ ३८ ॥

शिवसूत्रमयं ज्ञानं
धारयन्ति धृतव्रताः ।
वीरमाहेश्वराः सर्वे
शृणु गौरि ! सुभक्तितः ॥ ३९ ॥

दिव्यं च जीव[2]चैतन्य[3]
विश्वतैजससाधनम् ।
ज्ञानस्नेहेन सततं
धुन्वन्ति गुरवःसदा ॥ ४० ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
वेदमूर्ध्नि[5] प्रतिष्ठिताः ।
देहान्तरेषु[6] सततं
अन्तर्यामीति विश्रुतः[7] ॥ ४१ ॥

---

[1] चैतन्यं—ख.
[2] दीपावचव—ग. दिवाचजीव—क.
[3] चेतनं—ख. घ. च. चैतन्य—ग.
दुन्वन्ति—ग. च.
[5] वेदमूर्ति—क.
[6] देहान्तरेक्षु—ग.
[7] विश्रुताः—क. विश्रुतं—घ.

स जीवो[1] ज्ञानचैतन्यं
यः करोति मम प्रिये ![2]
ये चान्ये वायवः सर्वे
जीवं दधति[3] देहिनाम् ॥ ४२ ॥

इति यत् सततं नृणां
ज्ञानं मोहसमन्वितम् ।
त्यजन्ति प्रमथास्सर्वे
ह्यागमा[5]चारसंयुताः ॥ ४३ ॥

हृदि प्राणं प्रतिष्ठाप्य
जाग्रेऽपि च जडात्मकम् ।
आत्मनो[7] योगसन्धानात्
सांख्यशास्त्रविशारदाः ॥ ४४ ॥

जीवः शिव इति ख्यातः[8]
सत्त्वशून्यार्थपारगाः ।
कुर्वन्ति बाह्यतत्त्वाच्च
अन्तस्तत्त्वमहं शिवम् ॥ ४५ ॥

---

[1] सजीव—ग.

[2] प्रियः—च.

[3] दधते—क.ङ.

[4] लोहसमं स्थितम्—ग. लोहसमं स्मृतम्— .पा.

[5] आगमा—ग.

[6] जाग्रेजीवं जडात्मकम्-ग. जाग्रेऽपि च उदात्तकम्—ग (पा) जाग्रतेऽपि-घ.च.

[7] आत्मनि—ग.

[8] शिवेति विख्याताः—ग.

आत्मानं सर्वदा[1] गौरि!
न पश्यन्ति[2] नराधमाः ।
जाग्रे जीवं तत्त्ववेद्यं
बोधयन्ति न मत्प्रिये! ॥ ४६ ॥

या सा[4] पुरातनाऽविद्या
जगन्मोहसमन्विता ।
करोति साधनोपायं
जगतां वेष्टितं (ता) परम्[5] ॥ ४७ ॥

शिवतत्त्वमिति प्राहुः[6]
मन्त्रमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ।[7]
वीरमाहेश्वराः सर्वे
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४८ ॥

पश्यन्ति जीवचैतन्यं
प्राणभावसमन्वितम् ।[9]
भूरुद्राः[10] जङ्गमास्सर्वे
शिखामध्ये प्रतिष्ठितम् ॥ ४० ॥

---

[1] सार्वदा–ग.
[2] दृश्यन्ते–ग.
[3] न बोधयति–ग.
[4] या सौ ग. य सा–घ. च. [5] वेष्ठिता परा–च.
[6] त्वाहुः–ग.
[7] प्रतिष्ठिताः-ग.
[8] प्राणलिङ्ग–ग. [9] समन्विताः–ग.
[10] भूरुद्र–ग. च.

आत्मानं शिवभक्त्याऽपि
तत्त्वसाधनशोधनात् ।
जडीकृतमनोज्ञानं[1]
जाग्रे पश्यन्ति मानवाः ॥ ५० ॥

तद् ज्ञानं[2] जडमित्याहुः[3]
कपिलाद्याः पुराविदः ।
तेषां निर्जीवचैतन्यं
यत्तत्त्वं ह्यात्मसाधनम्[4] ॥ ५१ ॥

भूरुद्रजङ्गमास्सर्वे
त्यजन्त्याशु वरानने ![5]
पाशबद्धो भवेज्जीवः
पाशमुक्तः सदाशिवः ॥ ५२ ॥

इति यत्तत्त्वं तत्त्वज्ञाः[6]
मन्त्रजीव[7]समन्विताः ।6
[8]भवन्ति जङ्गमास्सर्वे
शृणु गौरि वरानने ! ॥ ३५ ॥

---

[1] जडेमृतमनोज्ञानं-ग.

[2] आत्मानं-ग.

[3] जड इत्याहुः-ग. जरा इत्याहुः-क. जरामित्याहुः-च.

[4] आत्मसाधनाः-ग.

[5] पद्यार्धमिदं-क. ख. च. पुस्तकयोः न दृश्यते ।

[6] यत्तत्वतत्त्वज्ञाः-ग.

[7] मन्त्राबीज-ग. मन्त्रबीज-गः (पा.

[8] इतः पर-ग. पुस्तके 'कथयन्ति' इत्याधिकः पाटः दृश्यते ।
भवन्ति जङ्गमाः सर्वे' इत्यारभ्य 'प्राचीनं कर्मवेष्ठितं' इत्यन्तो भाग;-घ. पुस्तकेलुप्तः ।

विज्ञान ब्रह्म इत्याहुः[1]
वेदतत्त्वार्थपारगाः ।
वेदान्तिनः सदा[2] जाग्रे
विद्यावाद[3]समन्विताः ॥ ५४ ॥

तत्तेषां ज्ञानचैतन्यं
त्यजन्त्याशु महेश्वराः ।
वीरमाहेश्वरास्सर्वे
ज्ञानतत्त्वविशारदाः ॥ ५५ ॥

आनन्दं ब्रह्म इत्याहुः[4]
योगिनः पुरुषाधमाः ।
पतन्ति पापसंसार-
कूपमध्ये निरन्तरम् ॥ ५६ ॥

दुःखध्वंसः सदा मुक्तिः
गौतमाद्याः महर्षयः[5] ।
तेषां वितर्कितं ज्ञानं[6]
त्यजन्ति बुधसेविताः ॥ ५७ ॥

---

1 ब्रह्ममित्याहुः—क. ख.
2 वेदान्तिनोसदा—क.
3 मिथ्यावाद—रि.
4 ब्रह्ममित्याहुः—क ख.
5 दुरात्मनः—ग. (अस्मिन् छन्दोऽनुरोधेनैवम्)
6 विवर्जितज्ञान—ग. वितर्कित ज्ञान—च.

भूरुद्रा जङ्गमाः[1] सर्वे
दुःखातीताः दृढव्रताः ।[2]
अन्नं ब्रह्मेति विख्याताः
व्याससूत्रसमन्विताः ॥ ५८ ॥

तेषां जडीकृतं ज्ञानं[3]
मलत्रयसमन्वितम् ।[4]
षट्स्थलज्ञानसम्पन्नाः
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठिताः ॥ ५९ ॥

भूरुद्राः जङ्गमाः[5] तद्धि[6]
मिथ्यां कुर्वन्ति भक्तितः ।
प्राणो ब्रह्मेति[7] विख्यातः
प्राणहोमसमन्विताः ॥ ६० ॥

निरीश्वरार्थ[8]तत्त्वज्ञाः
अपूर्वफलदायकाः ।
कर्मचण्डालविख्याताः[9]
ये सर्वे ऋषयः शिवे ![10] ॥ ६१ ॥

---

1 भूरुद्रजङ्गमाः—ग.

2 दुःखातीतदृढव्रताः—ग.

3 कृतज्ञानं—ग. च. 4 इतःपरं च पुस्तके 'अथ ब्रह्म जिज्ञासा' इत्यधिकः 4 पाठः दृश्यते ।

5 भूरुद्रजङ्गमाः—ग.

6 सर्वै—ग.

7 प्राणान् ब्रह्मेति—ग. च.

8 गिरिश्वरार्थ—च.

9 कर्ममार्गप्रवतकाः—क.

10 सदा—ग.

तेषां प्रपञ्चितं ज्ञानं[1]
मलसाधनवेष्टितम्[2] ।
निरासयन्ति सततं
रेणुकाद्याः पुरातनाः ॥ ६२ ॥

भूरुद्रा जङ्गमाः[3] सर्वे
भूपावनकराः शिवे ।
जाग्रे जाग्रं प्रतिष्ठाप्य
स्वप्ने स्वप्नं तथा सदा ॥ ६३ ॥

सुषुप्तौ[4] मोहं सुप्तिं[5] च
त्यजन्ति[6] बुधसेविताः ।
वीरमाहेश्वराः सर्वे
त्रिषष्टिशीलसंयुताः ॥ ६४ ॥

जीवज्ञानं मनोज्ञानं
प्राचीनं विरमन्ति हि[7] ।
प्राचि[8] [च्य] साधनतत्त्वज्ञाः
ऋषयः पूर्वदेहिकाः[9] ॥ ६५ ॥

---

1 तज्ज्ञानं—ग. च.

2 वेष्टितः—क.

3 भूरुद्रजङ्गमाः—क. ग.

4 सुषुप्तां—क. ख.

5 मोहसुप्तिं—ग. मोहसुप्त्यां—च

6 त्यजन्ते—ग.

7 प्राचीनमिति विश्रुताः—ग.

8 प्राची—च.

9 पूर्वदेशिकाः—क.

पुराणवादनिरताः
सुराः[1] पूर्वपुरातनाः ।
मेघ[2]तत्त्वगुणोपेताः
पतिताः[3]पापपा[4]रगाः ॥ ६६ ॥

तेषां मोहात्मकं ज्ञानं
दूरीकृत्य[5] बुधोत्तमाः ।
भूरुद्राः जङ्गमाः[6] सर्वे
जयन्ति[7] मम सन्निधौ ॥ ६७ ॥

चित्ते जाग्रं प्रतिष्ठाप्य
चान्नकोशे[8] सदा द्विजाः[9] ।
भवन्ति ह्यन्न[10]संस्कारं
अन्नसेचनतत्पराः ॥ ६८ ॥

तेषां प्रपञ्चित[11]ज्ञानं
मन्त्रहोमसमन्वितम् ।

---

1 पुरा—ग.
2 मोघ—ग.
3 परिताः—क. ख.
4 पारगः सदा—क. ग. (प१)
5 दूरीकृत—च.
6 भूरुद्रजङ्गमाः—ग.
7 त्यजन्ति—क
8 अन्नकोशे—ग.
9 द्विजः—क.
10 अन्न—ग.
11 प्रापञ्चित—ग. प्रापञ्चिक—च.

त्यजन्ति मे[1] प्रिये गौरि !
वीरमाहेश्वराः सदा ॥ ६९ ॥

सादाख्यतत्त्वं तत्त्वानां
तत्त्वशास्त्रसमन्वितम् ।
मोक्षानन्दकरं नृणां
पाशविच्छेदनं परम् ॥ ७० ॥

[2]वीरमाहेश्वराः सर्वे
ह्यागम[3]ज्ञानहेतवः ।
संसारसागरोत्तीर्ण-
सेतवः पुण्यमूर्तयः ॥ ७१ ॥

भक्त्या[4] दधति[5] मे गौरि !
सृष्टिस्थितिलयोर्जि [ज्झि] ताः[6] ।
गुरूणां गुरवः साक्षात्
कारयन्ति सदाशिवम् ॥ ७२ ॥

भावतत्त्वं मनोज्ञानं
प्राचीनमिति विश्रुताः ।

---

1 ये—ग.
2 ज्ञानहितावहाः—च.
3 आगम—ग.
4 भक्ता—ग. प
5 दधते—ख. दधीति—च.
6 सृष्टिस्थितिलयार्जिताः—क
सृष्टिस्थितिलयार्चिताः—ख.
सृष्टिस्थितिविवर्जित ः—ग

श्रौताधिकाः[1] सदा गौरि
ह्याहु[2]स्तत्त्ववित्रर्जिताः ॥ ७३ ॥

तेष । मलत्रय[3]ज्ञानं
प्राचीनं कर्मवेष्टितम् ।
तत्त्वं सर्वदा[4] सर्वे
वीरमाहेश्वरव्रताः[5] ॥ ७४ ॥

त्यजन्ति[6] भावतत्त्वज्ञाः
पुराणपुरुषोत्तमाः ।
आपो नारायणः साक्षात्
इति वैखानसद्विजाः ॥ ७५ ॥

तप्तसंस्कारसंयुक्ताः
ऊर्ध्वपुण्ड्रसमन्विताः ।
तुलसीकाष्ठसंछन्न[7]-
ग्रीवा[8] विग्रहधारिणः ॥ ७६ ॥

कालशासनसंस्काराः
कामक्रोधसमन्विताः ।

---

1 तौतादिकाः—ग
2 आहु—ग.
3 मलत्रयं—क
4 सर्वदा—ग.
5 श्वरावृताः—च.
6 त्यज्यन्ते—ग (पा)
7 सच्छन्न—क॰ख॰
8 शिरो—ग.

दग्धबाहु[1]समोपेताः[2]
शङ्खचक्रादि[3]लाञ्छनाः ॥ ७७ ॥

वैष्णवाः कर्मचण्डालाः
भवन्ति कृतबुद्धितः ।
वैष्णवान् तान् सदा लोके
मम भक्ता[4] महेश्वराः ॥ ७८ ॥

न ताडयन्ति सततं
ते यान्ति यममन्दिरम् ।
तान् वैष्णवान् सदा गौरि !
प्रीतिं कुर्वन्ति ये नराः[5] ॥ ७९ ॥

ते यान्ति पूतिगन्धस्थं
कूपं मूत्रसमन्वितम् ।
कदाचिद्वैष्णवानां च
लोके भक्तिसमन्विताः ॥ ८० ॥

स्वर्णवस्त्राणि दिव्यानि
दापयन्ति नराधमाः[6] ।

---

1 बाहू—क. ख.
2 समावेताः—ख.
3 चक्रवि—ग.
4 भक्त्या—ग. (पा) च.
5 जनाः—ग. नरः—क.
6 इतः परं 'व्रजन्ति' इत्यारभ्य 'यममन्दिरं' इत्यन्तं पद्यं—क.ख पुस्तकयोः न दृश्यते ।

व्रजन्ति रौरवं घोरं
कूपं मूत्रसमन्वितम् ॥८१॥

वैष्णवेभ्यः प्रदात्यन्नं
स यांति यमसन्दिरम् ।
वैष्णवैः कर्मचण्डालैः
पठन्ति[1] ये जनाधमाः ॥८२॥

पुराणानि विचित्राणि
ते यान्ति यममन्दिरम् ।
अथवा वैष्णवानां च
कन्यागोभूमिदापकाः ॥ ॥८३॥

ते यान्ति रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ[2] ।
वैष्णवांस्तम[3]संस्कारान्
विष्णुध्यानपरायणान् ॥ ॥८४॥

तान् राक्षसान् सदा[4] गौरि
हिंसां कुर्वन्ति ये जनाः ।
ते यान्ति मम[5] सांनिध्यं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥८५॥

---

1 पठ्यन्ते—ग

2 दिवाकराः—क दिवाकरं—घ

3 वैष्णवान् सम—क

4 यथा—क

5 यम—ग

पुरा कृतयुगे गौरि
मायावत्यां दृढव्रतः ।
शिवदीक्षासमोपेतः
तत्त्वज्ञो[1] राजसत्तमः ॥८६॥

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च
सर्वप्राणिहितान्वितः ।
वेदवित् शास्त्रतत्त्वज्ञः
शिवपूजादृढव्रतः ॥८७॥

आत्मवान् सात्त्विकोपेतः
सुललाटः सुविक्रमः[2] ।
पीनवक्षो [क्षा] विशालाक्षः
स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ॥८८॥

वीरमाहेश्वराचार
दीक्षाज्ञानसन्वितः ।
जम्बुमाल्युपाख्यानम्– जम्बुमालीति विख्यातः
सर्वशास्त्रार्थकोविदः ॥८९॥

तद्देशं पालितुं[3] लोके
व्रजते[4] सर्वदा[5] प्रिय ।

1 समोपेतस्तज्ञो–क
2 सुललाटसुविक्रमः–क
3 पावितुं–ग पालकं–च
4 'व्रजते' इति छन्दोनुरोधेन
5 सार्वदा–ग.

तस्य दूताः [1]महाश्रेष्ठाः
दुद्रुवुः धरणीतले ॥ ९० ॥
तप्तमुद्राङ्कितं विप्रं
विष्णुपूजासमन्वितम् ।
दग्धकीटतनुं दृष्ट्वा
ते जघ्नुः वसुधातले ॥ ९१ ॥

तस्य विप्रस्य तान् पुत्रान्
गुरुशीलसमन्वितान् ।
विरोधयन्ते[2] ते दूताः
खेदयन्ते[3] पुनः पुनः ॥ ९२ ॥

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा
स राजा क्रोधमूर्छितः ।
अहो[4] पापं मम प्राप्तं
इति कारुण्यभावतः ॥ ९३ ॥

तान् दूतान् प्रतिजग्राह
जघान च पुनः पुनः ।
ते दूताः कोपदग्धाङ्गाः
तं नृपं पापचारिणम् ॥ ९४ ॥

---

1 माता–क

2 रुरोधयन्ते–ग. विरोधयन्ति–च.

3 वेदयन्ति–ग खेदयन्ति–च.
छेदयन्ति–ग (पा)

4 आहा–क इदं–च

चिच्छेदयन्ति[1] मे[2] मत्त्या
मशकीव [3]तदा प्रिये ।
विसंज्ञितं नृपं दृष्ट्वा
सचिवः शास्त्र[4]पारगः ॥९५॥

ब्रह्मास्त्रेण जघानाशु
तान् दूतान्[4] मन्त्र[5]वि ह न्‌ ।
हर शम्भो महादेव
इति ये ते[6] स्मरन्ति मे ॥९६॥

शस्त्रघातसमोपेताः
निपेतुर्धरणीतले ।
यमदूतास्तदा गौरि!
गच्छन्ति वसुधातलम् ॥९७॥

पतिते[7] मम दूताश्च
भद्र[8]मुद्रितविक्रमाः ।

---

1 विचछेदयन्ति—ग
2 ये क. ग
3 सदाप्रिये—च. एतदनन्तरं च— तुर्थपटलस्य "तस्य योगीश्वरस्यापि' इत्यारभ्य 'कम्बुग्रीवां कलान्वितां' इत्यन्तो भागः घ पुस्तके दृश्यते ।
4 दूतांस्तान् क. ख सुतान् च
5 शास्त्र क
6 इति एते—ग
7 प्रतीते क प्रतिमे—च
8 भद्रं ग

वीरभद्र विरूपाक्ष
  शिंशुमारगणाधिपाः ॥९८॥

व्रजन्ति तान् विमानेषु[1]
  प्रतिष्ठाप्य ममाज्ञया ।
यमदूताः रोषवशात्
  तत्र तान् गणनायकान् ॥९९॥

विशोधयन्ति[2] सूर्यस्य
  बिम्ब तिमिरसन्ततिः ।
यथा तथा महाक्रोधात्
  तुमुल घोरघोषितम् ॥१००॥

युद्धं बभूव मे दूताः
  वैवस्वतकुलोद्भवान्[3] ।
परेतराज[4]निलय
  रुरुधुः दृढविक्रमाः[4] ॥१०१॥

चित्रगुप्तसमोपेतः[5]
  कालाग्निसदृशाननः ।

---

1 ते विमानेषु–च०
2 रुरोधयन्ति–ग०
3 कुलोद्भवाः–च.
4 परेतुराज–क० प्रेतराज च०
5 समोपेताः–च०

परेतराजः[1] तान् दूतान्
गुरुक्रोधसमन्वितः[2] ॥१०२॥

भर्जयामास[3] मे प्रीत्य
शान्ति कुरुते हे गणाः ।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
गच्छन्ति मम संनिधिम् ॥१०३॥

रुद्रकन्या[4]समोपेतं
सिद्धगन्धर्वसेवितम् ।
विमानं सूर्यसङ्काशं
रेणुको मुनिपुङ्गवः ॥१०४॥

दृष्ट्वा मनोहराकारान्
नृपदूतान् शिवव्रतान् ।[5]
पूजयामास मे प्रीत्या
महाक्रोध[6]समन्वितः[7] ॥१०५॥

---

1 परेतराजा–ख. म
2 समन्विताः च
3 भर्त्सयामास च
4 रुद्रकन्य ग
5 शिवेतरान् च
6 महोक्रोध ग
7 समन्विताः क

तस्य राज्ञः तदा[1] लोके
शापं दत्त्वा पुनः पुनः ।
विष्णुयोगि[2] समुद्भूतः
विष्णुव्रतपरायणः[3] ॥१०६॥

त्वं याहि रौरवमिति
शशाप[4] रेणुकः शिवे ।
त्वं शृणुष्व[5] परप्रीत्या[6]
इतिहासं सुविस्मितम्[7] ॥१०७॥

तदारभ्य महादेवि!
वैष्णवान् मन्त्रवर्जितान् ।
ये पूजयन्ति सततं
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥१०८॥

जायन्ते वैष्णवाः सर्वे
वैखानसकुलोद्भवाः[8] ।

---

1 तथा–क
सदा–ग
2 विष्णुयोनि ग
3 'स याति रोरवं घोरमिति शापं वरानने' इत्यर्धं इतः परं दृश्यते ।
4 स शापः ग
5 शृणु ग
परमप्रीत्या–ग
7 सविस्मितम्–ग
वीरमाहेश्वराः सदा–ग

त्यजन्ति [1]विमलज्ञानात्
मम भक्तिसमन्वितान् ॥ १०९ ॥

खानसनिन्दा—

जम्बुमालिकुले जाताः
वैखानसकुलोद्भवाः ।
तेषां प्रपञ्चितं ज्ञानं[3]
मिथ्या[4] कुर्वन्ति योगिनः ॥ ११० ॥

जीवान्तरात्मसन्धानं
जडचैतन्यवेष्टितम् ।
तज्ज्ञानं शाम्भवाः सर्वे
वीरमाहेश्वराः सदा ॥ १११ ॥

त्यजन्ति विमलज्ञानात्
मम भक्तिसमन्वितात् ।[5]
जम्बुमालिकुले जाताः ।[6]
विष्णुपूजासमन्विताः[7] ॥ ११२ ॥

---

न्ती' त्यारभ्य "वैखानसकुलोद्भवाः' इत्यन्तं पद्य अधिकं 'ग' स्तके दृश्यते ।

2 प्रपञ्चितज्ञानं ग. प्रपञ्चिकं ग

3 मिथ्यां ग

4 समन्विताः च

जातः च

6 समन्वितः च

पाञ्चरात्रागमोपेताः[1]
मिथ्याज्ञानं पुराणजम् ।
दश्यते सर्वदा[2] लोके
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ११३ ॥

पुण्ड्रेक्षुं मक्षिका[3] देवि[4]
यथा स्पृशन्ति सर्वदा[5] ।
सादाख्यतत्त्वं [त्त्व] सर्वज्ञाः
योगिनः तत्त्वपारगाः ॥ ११४ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
जगतां जन्मवर्जिताः ।
[प्रभवा विभवा लोके
इन्द्रियान्यानि मे प्रिये ।][6]
प्रभवो विभवो लोके
इन्द्रियाणि मम प्रिये ॥ ११५ ॥

जयन्ति तत्तसंस्कारैः
ज्ञानज्योतिर्निरञ्जनम्[1]

---

1 ऋसमोपेत:-च
2 सार्वदा–
3 मक्षकाः-क. ख
4 लोके–ग
5 सार्वदा–ग
6 पद्यार्धमिदं–ग पुस्तके न दृश्यते ।

शुद्धिं कुर्वन्ति सततं
मम प्रीत्या वरानने ॥ ११६ ॥

ललाटमध्ये चात्मानं[2]
सम्प्राप्य[3] तत्त्वसाधनम् ।
ज्ञानाञ्जनं नेत्रमध्ये
भक्तिदूती[4]समन्विताः[5] ॥११७॥

ये पश्यन्ति सदा लोके
एते माहेश्वराः स्मृताः ।
प्रकृतिं विकृतिं त्यक्त्वा[6]
तथा जीवं जडीकृतम् ॥११८॥

आत्मानं तत्त्वराजानं
भ्रूमध्ये सु[7]प्रतिष्ठिताः ।

---

1 ज्योतिनिरञ्जनम्–क
ज्योतिं निरञ्जनम्–ख
ज्योतिर्निरञ्जनाः–ग

2 ध्ये आत्मान–ग

3 सम्प्राप्य:–ग

4 भक्तिदूत–ख· ग

5 समन्वित:–ग

6 प्रकृतीर्विकृतीकृत्वा–ग

भ्रूमध्येषु–ग
भ्रूमध्ये सं–क

त एते सर्वदा[1] लोके
वीरमाहेश्वराः स्मृताः ॥ ११९ ॥

निरञ्जनं निर्विकल्पं
नादबिन्दुकलान्वितम् ।
आत्मानं मन्त्रराजानं
उत्थाप्य वसुधातले ॥ १२० ॥

ये पश्यन्ति सदा गौरि !
एते माहेश्वराः स्मृताः ।
दशवायून् तिरस्कृत्य[2]
अथो[3] मूर्ध्नि प्रतिष्ठिताम् ॥ १२१ ॥

कुण्डलीं[4] ज्ञानविख्यातां
उत्थाप्य वसुधातले ।
षट्चक्रचक्रराजानं
सहस्रारं सदा प्रिये ॥ १२२ ॥

ये पश्यन्ति मनो ज्ञान[5]
नेत्ररूपाः महेश्वराः ।

---

1 सार्वदा–ग
2 दशवायु स्थिरं कृत्वा–क स्थिरान् कृत्वा–च
3 अधो–ख.
4 कुण्डिर्लीं–क
कण्डलिं–ख
5 मनोज्ञानं–क

ते यान्ति मम सायुज्यं
एते माहेश्वराः स्मृताः ॥१२३॥

याऽविद्याकल्पिताज्ञानात्[1]
अहम्भावसमन्विताः ।
[2]साऽविद्या प्रकृतीत्याहुः[3]
सिद्धगन्धर्वसेविताः ॥१२४॥

नासामूले मनोध्यानं[4]
आक्षिप्य वसुधातले ।
प्राणलिङ्गं सदा ध्यात्वा
आत्मानं मूर्ध्नि संस्थितम् ॥१२५॥

ये पश्यन्ति यदा[5] गौरि
एते माहेश्वराः स्मृताः ।[6]
जाग्रे कुण्डलिनं शान्तं
लिङ्गमूर्तिं जगत्पतिम् ॥१२६॥

---

1 कल्पितज्ञानात्–क· ख.

2 इदमर्धं–च पुस्तके नास्ति

3 अत्र 'प्रकृतिरित्याहुः' इति वक्तव्ये 'प्रकृतीत्याहुः इति छन्दोऽनुरोधेन।

4 मनोज्ञानम्–क. ग :

5 यथा–क

5 एतदर्धस्थाने–ग. चपुस्तकयोः

ये पश्यन्ति यदा गौरि शृणु त्वं निश्चलाशयात् ।
वीरमाहेश्वराश्चैव ममसायुज्यहेतवः ॥"

इति दृश्यते अत्र । 'वीरमाहेश्वरा एते' इति–च. पाठः दृश्यते ।

गुरुं सदाशिवं ध्यात्वा
भ्रूमध्ये दशवायुगम्[1] ।
एते माहेश्वराः सर्वे
ध्यानधारणधार्मिकाः ॥१२७॥

प्रतिष्ठाप्य महादेवं
शान्तिं कुर्वन्ति सर्वदा[2] ।
प्रणवं मन्त्रराजानं
वेदमूर्ध्निप्रतिष्ठितम् ॥१२८॥

सर्वतत्त्वात्मकं ध्येयं[3]
नादबिन्दुकलान्वितम् ।
चतुष्षष्टिकलातीतं
निर्विकल्पं निरंजनम् ॥१२९॥

मोक्षदं शुभदं दीप्तं
फलभोगविवर्जितम्[4] ।
सर्वमन्त्रार्थपन्थानं[5]
सर्वशास्त्रसमन्वितम्[6] ॥ १३० ॥

---

1 वायवः–ग
2 सार्वदा–ग
3 दिव्यं–ग
4 विवर्जिताः–क
5 सन्धानं–क. ख
6 इतः पर 'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म' इत्यधिकः पाठः–च. पुस्तके दृश्यते

योगिनां योगजं ध्यानं
धारिणं[1] रुद्रसेवितम् ।
लयोत्पत्तिपरित्यागं
मातृकान्यास[2]पूर्वकम् ॥ १३१ ॥

गुरोः कारुण्यभावेन
उपदिश्यन्ते[3] ये जनाः ।
त एते[4] मानुषश्रेष्ठाः[5]
वीरमाहेश्वराः स्मृताः ॥ १३२ ॥

प्रणवाज्जायते लोके
नाद आत्मसमन्वितः ।[6]
तं नादं हृदये प्रीत्या
ये स्मरन्ति बुधोत्तमाः ॥ १३३ ॥

त एते सर्वदा[7] गौरि !
वीरमाहेश्वराः स्मृताः ।

---

1 ध्यानधारिणं–ख
ध्यानधारणम्–च
2 मातृकन्यास–क
3 उपदिश्यन्ति–ख
4 ते एते–क, ख
5 मानुषाः श्रेष्ठाः–च
6 नादमात्मसमन्वितम्–ग
नादमात्मसमन्विताः–क
7 सार्वदा–ग

नादाद्वेदास्त्रयस्सर्वे
ऋग्यजुस्सामपूर्वकाः ॥ १३४ ॥

जायन्ते मम सांनिध्ये[8]
यन्त्र[9]मन्त्रार्थगर्भिताः ।
तान् वेदान् शत[1]शाखाख्यान्
आश्वलायनपूर्वकान् ॥ १३५ ॥

हृत्पद्ममध्ये मे प्रीत्या
ये पठन्ति बुधोत्तमाः ।
त एते सर्वदा[1] गौरि
विप्रनामान्विताः बुधाः ॥ १३६ ॥

भवन्ति नादसम्भूताः
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
तान् नादाद्यान्[6] यथा लोके
विष्णुपूजासमन्विताः ॥ १३७ ॥

पठन्ति विष्णुभक्त्याऽपि
त एते गार्दभाः स्मृताः ।

---

1 सांनिध्यं–ग [पा] सामीप्यं–क
2 मन्त्र–ग
3 तावेदा मत–क
4 सार्वदा–ग
5 सम्भूतात्–ग
6 तान् नादान्–क तानाद्याय–च

वेदादौ वेदमध्येऽपि
वेदान्ते च प्रतिष्ठितम् ॥ १३८॥

स्वरातीतं गुणनिधिं
भूरुद्रं पु[1]रुषर्षभम्
वीरमाहेश्वरं लोके
सर्वदा देवदानवाः ॥ १३९ ॥

सिद्धविद्याधराः सर्वे[2]
यक्षकिन्नरपन्नगाः ।
विश्वेदेवाः पितृगणाः
ये चान्ये देवयोनयः ॥ १४० ॥

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये
प्रतिष्ठाप्य मुदान्विताः ।
पूजां कुर्वन्ति सततं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १४१ ॥

सर्वासां मातृकान्यासं
देवतानां सभान्तरे ।
ये जनाः सर्वदा[3] गौरि
उपदेश्यति[4] ते बुधाः ॥ १४२ ॥

---

1 रुद्रपु–क
2 भूताः–क च
3 सार्वदा–ग
4 'उपदेश्यन्ति' इति छन्दोनुरोधेन स्यात् ।

भवन्ति[1] न्यासवीर्येण
मम सायुज्यसंमुखाः[2] ।
न प्राप्नुवन्ति ते सर्वे
स्वर्गं रम्भासमन्वितम् ॥ १४३ ॥

प्राप्नुवन्ति बुधश्रेष्ठाः[3]
पुण्ये क्षीणे तदा[4] प्रिये ।
विशन्ति मानवं[5] लोके
मनुजाः काममोहिताः ॥ १४४ ॥

दुराचाराः पापरताः
शिवभक्तिविवर्जिताः ।
क्षुद्रदेवार्चनरताः
क्षुद्रध्यानसमन्विताः ॥ १४५ ॥

सप्त संस्थापनप्रीताः[6]
द्विजाः पापसमन्विताः ।
भवन्ति सर्वदा[7] लोके
तेषां कर्मपुरस्कृतम्[8] ॥ १४६ ॥

---

[1] भ्रमन्ति–च
[2] संनिधिं–ग
[3] बुधाः श्रेष्ठाः–च
[4] –ग(प)
[5] मानवाः–ग(पा) नवं लोके–च
[6] प्रीत्या–क
[7] सार्वदा–क
[8] तिरस्कृतम्–ग

वीरमाहेश्वराः सर्वे
त्यजन्ति मम भक्तितः ।
बिन्दुमूले बिन्दुमध्ये
चारिणं[1] रुद्रलाञ्छनम् ॥ १४७ ॥

भूरुद्र[2]जङ्गमं लोके
ये जनाः पुरुषोत्तमाः ।
पूजां कुर्वन्ति मे प्रीत्या
त एते सुरपूजिताः ॥ १४८ ॥

भवन्ति[3] मम सामीप्यं
देहान्ते जन्मवर्जितम्[3] ।
व्रजन्ति सर्वदा[4] गौरि
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १४९ ॥

द्विसप्ततिसहस्राणि
नाडीनि[5] विविधान्यपि ।

---

1 जारिणम्-क.ग

2 भूरुद्रं-च

3 भजन्ति-

4 एतदनन्तरं —
वीरमाहेश्वरं लोके सर्वदा देवदानवाः ।
सिद्धविद्याधराः भूताः यक्षकिन्नरपन्नगाः ॥
इत्यधिकः पाठः घ. पुस्तके दृश्यते

5 सार्वदा-ग

6 नाडीनि इति आगमानुरोधेन ।

अविद्याशबलं[1] जाग्रे
पुष्टिं करोति[2] सर्वदा[8] ॥ १५० ॥

प्रधान[3]नाडीभेदेन
देहमध्ये प्रतिष्ठितम् ।
जीवं वहति तद्ज्ञानं
इति यत्तदसाम्प्रतम् ॥ १५१ ॥

इळा[4]मध्ये सुषुम्नान्ते[5]
वायून् रुन्धन्ति[6] योगिनः ।
तेषां तपोविधिं ज्ञानं[7]
योगिनां[6] तत्त्वपारगाः ॥ १५२ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
ध्वंसीकुर्वन्ति मे प्रिये ।
चित्तं मनसि संस्थाप्य
मनोऽहङ्कारमण्डले ॥ १५३ ॥

---

1 अविद्याश्वबलं–क.ख
2 कुर्वन्ति–ग
 जन्मवर्जिता:–च
3 प्राधान्य–ग
4 ईळा–क. ख
5 सुषुम्नान्ते-ग (पा)
6 रुन्धेति–ग
6 विधिज्ञानां--क: ख. ग
7 योगिनः--ग

बुद्धिं चित्ते प्रतिष्ठाप्य
जीवमात्मनि[1] साधकः[2] ।
राजयोगीति विख्यातः[3]
इति यत्तदसाम्प्रतम् ॥ १५४ ॥

तालुमूले भवेच्चन्द्रं[4]
नासामूले प्रतिष्ठितम्[5] ।
स सूर्य[6]ज्ञानवीर्येण
वृद्धिं तेषां मनोहराम्[7] ॥ १५५ ॥

करोति देहिनां लोके
इति यत्तदसाम्प्रतम् ।
इळा[8]पिङ्गळयोर्मध्ये
या चरा खेचरी तथा ॥ १५६ ॥

सा विद्या खेचरी नाम
नामं[9] वहति मे प्रिये ।
नासामूले प्रतिष्ठाप्य
दृष्टिं कुर्वन्ति योगिनः ॥ १५७ ॥

---

1 जीव आत्मनि–ग
2 साधकाः–ग
3 विख्याताः–क
4 चन्द्रः–च
5 मनोहरम्–ग(पा)
6 प्रतिष्ठितः–च
7 संसूर्यो–च
8 ईडा–क:ख
9 नाममिति प्रयोगः छन्दोनुरोधेन । नाम–च

यद्ध्यानं योगमूलं च
इति यत्तदसाम्प्रतम् ।
सोऽहं शम्भुरिति ख्यातः
जडचैतन्यसाधकः ॥ १५८ ॥

स योगी पततीत्याहुः[1]
शिवतत्त्वविशारदाः ।
असङ्गतिं जीववृत्तिं
मनोध्यान[2] समन्विताः ॥ १५९ ॥

ऋषयः[3] सर्वदा[4] लोके
मिथ्या कुर्वन्ति तत्त्वतः ।
इदं पवित्रं यत्तत्त्वं
तेषां ज्ञानविवर्जितम्[5] ॥ १६० ॥

यत्तत्त्वं[6] सर्वदा[7] लोके
वीरमाहेश्वराः शुभाः[8] ।
मोघीकुर्वन्ति मे प्रीत्या
सत्यं[9] ज्ञानं पुरातनम् ॥ १६१ ॥

---

1 पतितेत्याहुः–
2 मनोज्ञान–क
3 भूतयः–ग(पा)
4 सार्वदा–ग
5 विवर्धनम्
6 तत्तत्त्वं–क
7 सार्वदा–ग
8 सुखाः–च
9 वत्स !–ग(पा)

चक्रेषु बिम्बितं ध्येयं
आत्मानं दुःखवर्जितम् ।
स्वातन्त्रिकं स्वस्वरूपं
इच्छाकांक्षाविवर्जितम् ॥१६२॥

ये पश्यन्ति सदा गौरि !
एते माहेश्वराः स्मृताः
हृन्मध्यें तत्त्वनिलयं
ध्यानगम्य परात्परम् ॥ १६३ ॥

शान्तं भद्रगुणोपेतं
अक्षमालाधरं शिवम् ।*
भस्मोद्धूलितंसर्वाङ्गं
शिवलाञ्छनलक्षितम् ॥ १६४ ॥

मुक्तिमूर्तिं[2] गुणनिधिं
कारुण्यप्रणमप्रियम्[3] ।
भूरुद्रजङ्गमं[4] लोके
ध्यानं कुर्वन्ति ये जनाः ॥ १६५ ॥

---

1 शान्तगम्यगुणोपेतम्–क,ग (पा) शान्तं भद्रं गुणोपेतं–च
2 मुक्तमूर्तिम् –क
3 प्रणवप्रियम्–ग
4 भूरुद्रजङ्गम–ग
* 'भूरुद्राणां पदद्वन्द्व' इत्यारभ्य 'वरानने' इत्यन्तः षष्ठपटल भागः घ पुस्तके दृश्यते ॥

त एते मम लीलास्थाः[1]
वीरमाहेश्वराः स्मृताः ।
गुणातीताय शान्ताय
रुद्रदेवाय मानवाः ॥ १६६ ॥

भक्तिं कुर्वन्ति सततं
एते माहेश्वराः स्मृताः ।
हृन्मध्यवासिनं देवं[2]
जङ्गमं ब्रह्मपूजितम्[3] ॥ १६७ ॥

जगतां पितरं गौरि !
पूजां कुरु सुभक्तितः ।
देवदेव जगन्नाथ
भक्ताभीष्टफलप्रद[4] । १६८ ॥

तेषां माहेश्वराणां[5] च
पूजाध्यानं करोति यः ।
तस्य चारित्र[6]तत्पूजां
वर्णयेच्छामि मे प्रभो[7] ॥ १६९ ॥

---

1 लीलस्था
2 जीवं-क
3 सेवितः-क
5 फलप्रद-ग-च
5 महेश्वराणां-क-ख
6 चारित्रं-च
7 वर्णितुं इच्छसि प्रभो-ग

पुरा कृतयुगे गौरि ।
कुण्डिन्यां वीरनायकः ।
धर्मज्ञ आत्मवान्[1] त्यागी
सत्यशीलसमन्वितः ॥ १७० ॥

सर्वास्त्रशस्त्र[2]सन्धारी
आयुश्शास्त्रविशारदः ।
मणिभद्रोपाख्यानम् मणिभद्र इति ख्यातः[3]
शिवदीक्षासमन्वितः ॥ १७१ ॥

दिने दिने च मे प्रीत्या
भूरुद्रान् जङ्गमान्[4] गुरून् ।
लक्षसंख्यान् महाश्रेष्ठान्
पूजां मन्त्रसमन्विताम् ॥ १७२ ॥

करोति कालवीर्येण
कर्मणा महता शिवे ।
एकेन लक्षसंख्यानां[5]
पूजां मोक्षप्रदायिनीम्[6] ॥ १७३ ॥

---

1 आत्मनः–क
आत्मानां– . आत्मानं–च
2 शास्त्र–ग
3 मणिभद्रेति विख्यातः–ग
4 जङ्गमो–क
5 संख्यातान्–ग सङ्ख्यानं–च
6 प्रदान्विताम्–ग:च

करोति जङ्गमं चैकं[1]
न दृष्ट्वा[2] व्रतभङ्गि[ङ्ग]तः ।
करोति चेति[3] तत्त्वज्ञः
रेणुको मुनिपुङ्गवः ॥ १७४ ॥

तद्ग्रामे भक्तियुक्तं च
नरं प्राकृतदेहिनम्[4] ।
मन्त्रसंस्कारपूर्वेण
दीक्षाङ्गं मन्त्रगर्भितम् ॥ १७५ ॥

करोति स गुरुः[5] शिष्यं[6]
पूजां भक्ति[7]समन्विताम् ।
मणिभद्रो महाराजः
लक्षजङ्गमपूजितः[9] ॥ १७६ ॥

---

1 जङ्गमं एकं–ग
2 दृष्टो–ग
3 करोति इति–ग
4 देहिनां–क.च
5 गुरुं–ग
6 तद्गुरोः शिष्यः–च
7 भक्तिं–क
8 समन्वितः–क
9 पूजकः–च

मणिभद्रो महाराजः
लक्षजङ्गमपूजितः[1] ।
करोति कृतकृत्योऽसौ
मोक्षकान्तापतिर्भवेत् ॥ १७७ ॥

इदं माहात्म्यं[1] पापघ्नं
भुक्ति[2]मुक्तिप्रदायकम् ।
यः शृणोति पठत्याशु
मम लोकं व्रजेत् प्रिये ॥ १७८ ॥

जिह्वाग्रे शिवमन्त्रजाप्यपठनं
फाले त्रिपुण्ड्राङ्कनम्
रुद्राक्षावलयं गले ह्युरसि लि·
ङ्गायत्तसज्ञां पराम् ।
चित्ते त्वत्पद[3]चिन्तनं शिव
सदाधत्ते मुदा योगिराट्[4]
तं स्तोतुं मन उत्सवत्युत[5] मम
श्रीवीरमाहेश्वरम् ॥ १७९ ॥

---

10 पद्यार्धमिदं–ग·पुस्तके नास्ति

1 माहात्म्यं–क·ख

2 भक्ति–च

3 तत्पद्–ग

4 योगिनरः–क·ख

5 उत्सवयुतः–ग

[1]सदाऽध्यापनं तद्ध्रस्म
सुखविस्मितं च निपुणम् ।

. . . .

मन्त्रात्मिकं मोक्षदम् ॥

यद्धत्ते सुरपुङ्गवैश्च निपुणैः
प्रख्यातमन्त्रात्मभिः
तत्सर्वं गुणवर्णितुं मम
मनोध्यानात्मकं देहिनम् ॥ १८० ॥

इति श्रीवीरागमोत्तरभागस्य वीरमाहेश्वरतन्त्रस्य
तत्त्वस्वरूपदर्शनं नाम[1] प्रथमः पटलः

---

1 पद्यमिदं–क. ख. च पुस्तकेषु न दृश्यते ।

2 वीरागमे तत्त्वस्वरूपवर्णनं ना प्रथमः पटलः–ग

# वीरागमोत्तरे द्वितीयः पटलः*

देवदेव जगन्नाथ !
    भक्ताभीष्टफलप्रद ।
वीरमाहेश्वराणां च
    स्वरूपं ब्रूहि मे प्रभो ![1] ॥ १ ॥

वीरमाहेश्वर स्वरूपम्

अहं ब्रुवामि[ब्रवीमि] तच्चित्रं
    स्वरूपं सुरविस्मितम् ।
लयकाले जगल्लीला
    माया सा कामिनि प्रिये ! ॥ २ ॥

जायते तां मनोलीला[2]
    कामिनीं प्रकृतिं स्त्रियम्[3]
विसृज्य मम भक्त्याऽपि
    वीरमाहेश्वराः सदा ॥ ३ ॥

प्रकृतिं विकृतिं कृत्वा
    एते कल्पसमन्विताम् ।

---

* च. पुस्तकरीत्या अयं पटलः चतुर्थः

1 ब्रुव मत्प्रभो–ग

2 मनोलील–ग

3 श्रियम्–ग(पा)

जयन्ति मम सांनिध्येऽ-
प्यशेष[1] प्रमथाः शुभाः ॥ ४ ॥

तेषां माहेश्वराणां[2] च
पीडितं[3] प्रेतनायकः ।
न समर्थः करोतीति
आहुस्तत्त्वपुराविदः ॥ ५ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
शिवदीक्षासमन्विताः ।
कैवल्यकारणज्ञान[4]
त्रिलोक[5]जनवन्दिताः ॥ ६ ॥

भवन्ति मम सांनिध्ये
जगतां मोक्षदायकाः ।
ग्रीवासु[6] पञ्चसूत्रस्थं
पीतवर्णशिलान्वितम् ॥ ७ ॥

शक्तिगोलकसंयुक्तं
मां च माधवसेवितम् ।

---

1 ध्ये अशेष—ग

2 महेश्वराणां—ग

3 पीडितुं—ग

4 ज्ञानं—क कारणं ज्ञानं त्रिलोक—च

5 त्रैलोक्य—ग

6 ग्रीवेषु ग

धारयन्ति[1] सदा पूजां
कुर्वन्ति पुरुषोत्तमाः ॥ ८ ॥

तृणीकुर्वन्ति ब्रह्माणं
जडीकुर्वन्ति माधवम् ।
वीरमाहेश्वराः सर्वे
भक्ताभीष्टफलप्रदाः ॥ ९ ॥

अहं सदा महाश्रेष्ठान्
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितान् ।
भूरुद्रान्[2] जङ्गमान् देवि !
पूजां मन्त्रसमन्विताम् ॥ १० ॥

करोमि तावतीं[3] पूजां
रेणुको[4] मुनिसत्तमः ।
विस्तारयति तत्सर्वां[5]
ध्यानध्यातृबलान्विताम्[6] ॥ ११ ॥

तेषां माहेश्वराणां[7] च
वीरशैवप्रवर्तकाः ।

---

1 धारयन्ते–ग
2 भूरुद्र–ग
3 तव तां–ग
4 रेणुका–ग
5 तत्सर्वं–च
6 बलान्वितः–च
7 महेश्वराणां–क. च

तिष्ठन्ति शीलसम्पन्नाः
पूजां कुर्वन्ति सन्ततम् ॥ १२ ॥

व्रतिनो मन्त्रकायस्थान्
सुधादीधितिमूर्तयः ।
भक्ताः परं परज्ञान-
साधनान् वसुधातले ॥ १३ ॥

पूजां कुर्वन्ति सततं
एते ब्रह्मादिवन्दिताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
गुरुदीक्षासमन्विताः ॥ १४ ॥

ये भक्ताः परमप्रीत्या
पूजां कुर्वन्ति सन्ततम् ।
त एते ऋषिभिः सर्वैः
पूजिताः खलु[1] मे प्रिये ॥ १५ ॥

भूरुद्रात्[2] जङ्गमादन्यत्
तत्त्वं नास्ति जगत्त्रये ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
पूजां कुरु वरानने ॥ १६ ॥

---

1 पूजां कुर्वन्ति—ग

2 भूरुद्र—ग

भूरुद्राणां[1] जङ्गमानां
पादमूले प्रतिष्ठिताः ।
कालिन्दी गौतमी गङ्गा
नर्मदा वृद्धकौशिकाः ॥ १७ ॥

आवासयन्ति याः सर्वाः[2]
जगत्पावनवाहिताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
रोमकूपेषु सर्वदा ॥ १८ ॥

ब्रह्माण्डततयः सर्वाः
तिष्ठन्ति मम वल्लभे ।
वेदान्तवेद्याः [ते] सर्वे
शिवध्यानपरायणाः ॥ १९ ॥

षट्स्थलब्रह्मिण[3]स्तत्त्व-
ब्रह्मविद्याविवर्धकाः ।
गच्छन्ति मम सांनिध्यं
वेदातीतं परात्परम् ॥ २० ॥

---

1 भूरुद्र—ग
2 सर्वे—क
3 ब्रह्मण—ग

भूरुद्रं[1] जङ्गमं लोके
ये निन्दन्ति द्विजाधमाः ।
ते यान्ति रौरवं घोरं[2]
यावच्चन्द्रदिवाकरौ[3] ॥ २१ ॥

वेदान्तवेद्यं तत्त्वज्ञं[4]
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ।
महेश्वरं गुणातीतं
मदनास्त्रविवर्जितम् ॥ २२ ॥

जितेन्द्रियं तत्त्वनिधिं
कुण्डलीकृतकुण्डलम् ।
रुद्राक्षधारिणं शान्तं
मन्त्रमातृषडक्षरीम्[5] ॥ २३ ॥

धारिणं योगनिलयं[6]
अक्षमालासमन्वितम् ।
नवभक्तिसमोपेतं
श्रद्धामेधाप्रतिष्ठितम् ॥ २४ ॥

---

1 भूरुद्र—ग
2 रौरवं नरकं
3 दिवाकरः—क
4 तत्त्वज्ञां—क
5 षडक्षरम्—क. ख
6 निलयां—क

भूरुद्रं[1] जङ्गमं लोके
पूजां कुर्वंति ये नराः ।
ते यान्ति मम सायुज्यं
ब्रह्मदिक्पालसेविताः[2] ॥ २५ ॥

रुद्रकन्यासमोपेताः[3]
सिद्धगन्धर्वसेविताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
तेषां पादरजः सदा ॥ २६ ॥

शङ्खचक्रगदापाणिः
स शौरिः मन्त्र[4]वर्जितः ।
मूर्ध्नि मध्ये प्रतिष्ठाप्य
विष्णुत्वं व्रजति[5] प्रिये ॥ २७ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
तद्रजः[6] कमलासनः ।
मूर्ध्नि मध्ये प्रतिष्ठाप्य
ब्रह्मत्वं लभते सदा ॥ २८ ॥

---

1 भूरुद्र–ग
2 ब्रह्मदीक्षादिसेविताः–च
3 समोपेतम्–क
4 शौरिमन्त्र–क. ग
5 व्रजते–ग
6 यद्रज–ग. पद्रजः–च

षट्स्थलब्रह्मिणां[1] पाद
धूलिंस्वर्गाधिपः सदा ।
मूर्ध्नि मध्ये प्रतिष्ठाप्य
स्वर्गभोगं लभेत्[2] प्रिये ॥ २९ ॥

तेषां पादरजः सर्वे
दिक्पालाः पावकादयः ।
मूर्ध्नि मध्ये प्रतिष्ठाप्य
स्वान् स्वान् भोगांश्च शाश्वतान्[3] ॥ ३० ॥

लभन्ते[4] सर्वदा[5] गौरि !
ध्रुवं कान्ताजनोत्तमे ।
वीरमाहेश्वराणां च
पादधूलिं पवित्रिकाम्[6] ॥ ३१ ॥

हेरम्बः सर्वदा[7] मूर्ध्नि
धत्ते कारुण्यभावतः ।

---

1 ब्रह्मणां–ग
2 अत्र 'लभेत्' इति परस्मैपदप्रयोगः छन्दोऽनुरोधेन ।
3 तानि भोगानि शाश्वतम्–ग
4 लभ्यन्ते–ग.
5 सार्वदा–ग.
6 पवित्रकम्–क. ख
7 सार्वदा–ग.

अग्निभूः सर्वदा गौरि[1] !
यद्रजः शिरसा[2] धृतम्[3] ॥ ३२ ॥

करोति मम पुत्रत्वं
सेनानित्वं[4] लभेत्[5] प्रिये ।
अहं सदा महापूज्यं[6]
तेषां पादरजः शुभम् ॥ ॥ ३३ ॥

मस्तके धृतवान् गौरि !
करोमि संहृतिं सदा[7] ।
तेषां पादरजः सर्वे
यक्षगन्धर्वकिन्नराः[8] ॥ ३४॥

मस्तकेषु प्रतिष्ठाप्य
नानाभोगफलान्यपि ।
लभन्ते[9] सर्वदा[10] गौरि !
शृणु भक्तिवशा सती[11] ॥ ३५ ॥

---

1 अग्निभूरपि भो गौरि–च.
2 शिरसि-ग. शिरसा–च.
3 धृतः–क.
4 सेनान्वितं–च.
5 लभेत्[1] इति छन्दोनुरोधेन ।
6 महापूज्यः–च.
7 करोमि मम वल्लभे ! –ग.
8 गन्धर्ववल्लभाः–ग.
9 लभ्यन्ते–ग.
1 सार्वदा–ग.
11 वशात् प्रिये–ग. वशास्त्वमु–च.

चतुर्वेदधरान् विप्रान्
होमकर्मसमन्वितान् ।
प्राकृतान्[1] प्रकृतिज्ञान-
साधनाचारतत्परान् ॥ ३६ ॥

पञ्चसूतकसम्पन्नान्[2]
शिवाचरविवर्जितान् ।
वैदिकाचारनिरतान्
गाधासूत्र[3]समन्वितान् ॥ ३७ ॥

कश्यपात्रिभरद्वाज-
विश्वामित्रादिगोत्रजान्[4] ।
कुलाहङ्कारगोत्रज्ञान्
ये[5] नृपाः सर्वदा[6] प्रिये ॥ ३८ ॥

पूजां कुर्वन्ति ते सर्वे
व्रजन्ति यममन्दिरम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
द्विजपूजाप्रवर्तकान् ॥ ३९ ॥

---

1 प्राकृताः–क.
2 सम्पूर्णान्–ग.
3 नाथासूत्र–क नाथसूत्र–च.
4 विश्वामित्रकुलोद्भवान्–ग.
5 वै–क.
6 सार्वदा–ग.

नृपान् परमपापिष्ठान्
परदाररतिप्रियान् ।
पुराणगाधा[1]संतुष्टान्
दुरहङ्कारवेष्टितान् ॥ ४० ॥

राज्यार्थिन[2] सततं[3] लोके
मदनास्त्रप्रपीडितान् ।
धर्मराजस्य ये दूताः
कशादण्डाग्रताडनैः ॥ ४ १

हिंसां कुर्वन्ति हे गौरि !
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
भक्ताः तत्त्वार्थपारगाः ॥ ४२ ॥

सुखदुःखानि तान्यानि [तान्तानि]
न लभन्ते सदा प्रिये !
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
पूजय त्वं चरन्तिनः[4] ॥ ४३ ॥

---

1 गाध-क. ख, ग,
2 राज्यार्थस्य तत-क
3 राजार्थ-च
राज्यार्थ-क. ख
4 इदमर्धं क्तं दृश्यते ।

हेरम्बप्रमुखाः सर्वे
गणाध्यक्षाः परात्पराः ।

भूरुद्राणां जङ्गमानां[1]
भक्तिं दधति[2] सर्वदा[3] ।
चण्डालः पुल्कसो स्वल्पः[4]
ब्रह्मघ्नो वा कुलाधमः ॥ ४४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
भक्तिं धृत्वा[5] द्विजोत्तमः[6] ।
भवते[7] सर्वदा[8] लोके
इति तत्त्वं वरानने ! ॥ ४५ ॥

पुरा कृतयुगे गौरि !
इतिहासं सुविस्मितम् ।
अहं ब्रुवामि [ब्रवीमि] तत्सर्वं[9]
शृणु भक्तिसमन्विते ॥ ४७ ॥

---

1 भूरुद्रजङ्गमानां च–ग.
2 दधते–क.ख.
3 सार्वदा–ग
4 पुल्कसो वापि–ग. पुल्कसः स्वल्पो–च
5 धत्ते–ग
6 द्विज़ोत्तमाः–क.
7 भवन्ति–च
8 सार्वदा–ग
9 तं सर्वं–च

इलावर्षे[1] गन्धवती
पुरी[2] पुण्यजनान्विता ।[3]
रत्नसाल[4] समोपेता
परिघावलयाङ्किता[5] ॥ ४७ ॥

रत्नसंकीर्ण [हेमादि] संछन्न[6]
गोपुरैश्च[7] विराजिता । धर्मगुप्तोपाख्यानम्
गजवाजिरथाकीर्णा
वारनारीसमन्विता ॥ ४८ ॥

अनेकशिवभक्तानां
आलयैः मन्त्र[8] गर्भितैः ।
अनेकराजपुत्राणां
सौधैः पर्वतसन्निभैः ॥ ४९ ॥

विचित्रैमैः[9] श्वेतवर्णैः
पुण्यपुञ्जीकृतैः शुभैः ।
स्वर्णहर्म्यैः सहस्रैश्च
अयुतैः[10] कनकादिभिः ॥ ५० ॥

---

1 ईषावृते–क. ख इलावृते–च.
2 पुरि–क. ख. 3 न्विताः–क. ख.
4 शाला–क. ख, सानु–च 5 वलयमण्डिता–ग
6 संछिन्न. च 7 गोपुरेण–ग
विचित्रमैः–क. ख. च.
9 मणि –
10 स्वर्णहर्म्यसहस्रश्चोपयुतै–च

रत्नशृङ्गैः स्वर्णचित्रैः
नानाधातुसमन्वितैः ।
कृतकैश्चित्रिमैर्गेहैः
वेष्टिताया जलान्तरे ॥ ५१ ॥

चतुर्भिस्त्वष्टृक्षेत्रज्ञ
मयविश्वसुतैः कृता ।
परेषां शत्रुराजानां
दुर्गदुर्घट[1] मुद्रिता ॥ ५२ ॥

अस्ति गौरि ! सुरैः सिद्धैः
गन्धर्वैः पन्नगैः शुभैः ।
अभेद्या वज्रशीलाया[2]
नारी साध्वी[3] मनोरमा ॥ ५३ ॥

तां पुरीं पालयत्यादौ[4]
धर्मशास्त्रसमन्विता ।
तस्याः[5] सुतो धर्मगुप्तः
शिवदीक्षासमन्वितः ॥ ५४ ॥

---

1 दुर्गमद्धुर—ख, दुर्गमद्धट—ग
2 शिलयाा—ग अभेद्यवज्रशीलाया—च०
3 नारिसाध्वि—ग
4 पालयेद्याथ—क
पालयेत्साधो—ग पालयेसाध्वी—च
5 तस्य—ग

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च
सर्वशस्त्रास्त्र[1]कोविदः ।
नवयौवनसम्पन्नः
आगमार्थविशारदः ॥ ५५ ॥

श्रीमान् मन्त्रनिधिर्गौरि !
द्वितीयः[2] परमेश्वरः ।
मन्त्रज्ञः[3] सात्त्विको धर्मी
धर्माधर्मविचारकः ॥ ५६ ॥

मतन्ज्ञो[4] मन्त्रिणां मन्त्री[5]
मन्त्रालोचनतत्परः ।
चतुष्षष्टिकलाविद्या-
नारीं पत्नीकृतां कृतः[6] ॥ ५७ ॥

दुराचारान् दुरालापान्
गूढपापान्वितान् द्विजान् ।
सोमपानव्रतासक्तान्
छागमांसप्रवर्तकान् ॥ ५८ ॥

---

1 शास्त्रार्थ—ग
2 द्वितीय—ग
3 यन्त्रज्ञः—ग. च
4 मन्त्रज्ञः—ग
5 मन्तृ—ग
6 पत्नीकृताकृतः—ग.

कुलाभिमानसम्पन्नान्
शिवसंस्कारवर्जितान् ।
पापात्मनः पापरतान्
पुराणार्थविशारदान् ॥ ५९ ॥

ऋषिगोत्रान्वयोद्भूतान्
कुतिसतान्[1] कुलपालकान्[2] ।
विद्रावयति तद्देशात्
शिवभक्तिसमन्वितः ॥ ६० ॥

माहेश्वरः शिवो देवः
शिवादन्यं न चेत्सुत[3] ।
इति तद्वचनं श्रुत्वा
माता क्रोधसमन्विता ॥ ६१ ॥

वज्रशीला तदा गौरि !
कोपाद्वचनमब्रवीत् ।
मन्त्राधीनं जगत्सर्वं
तन्मन्त्रं मन्त्रलक्षितात्[4] ॥ ६२ ॥

---

1 तुच्छितान्—क. ख.

2 कुलपावकान्—च.

3 नवेत्सुत—क. ग. न विद्यते—ग

4 यन्त्रलक्षितम् —

द्विजाधीनमिति सर्वैः
पुराणार्थैः[1] विवक्षितः ।
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा
रोषावेशसमन्वितः ॥ ६३ ॥

चिच्छेद तान्[2] द्विजान् सर्वान्
मातरं च तदा[3] प्रिये ।
ते नृपं तत्त्वतत्त्वार्थ-
साधनं कारणात्मकम्[4] ॥ ६४ ॥

विगृह्य देवताः सर्वाः[5]
युद्धं[6] चक्रुरहोऽद्भुतम् ।
भूपतेर्भीमदण्डेन[7]
विष्णुप्रभृतिदेवताः ॥ ६५ ॥

निपेतुर्गगने शीघ्रं
मुष्टिपातेन[8] मे प्रिये !
एतस्मिन्नन्तरे सर्वे
अशेषगणनायकाः ॥ ६६ ॥

---

1 पुराणार्थः—च
2 चिच्छेदयति—च.
3 तथा—ग (पा)
4 तत्त्वार्थसाधनकारणात्मकम्—च
5 सर्वे—क. ख
6 मुर्द—ग
बाहुदण्डेन—ग.
8 पादेन—ग.

गच्छन्ति तां पुरीं दृष्ट्वा
तं नृपं सुरघातिनम् ।
तस्य मूर्ध्नितले सर्वाः
रुद्रकन्याः मुदान्विताः[1] ॥ ६७ ॥

पुष्पवृष्टिं बवुः सर्वे
वायवे दक्षिणा[2]पगाः ।
तं नृपं प्रतिजग्राह
अग्निभूर्मन्त्रपारगः ॥ ६८ ॥

तस्याङ्गं तप्तसौवर्ण-
च्छायं (या)[3] चम्पककोमलम् ।
आलिङ्ग्य नूतनं दीप्तं
शतकौस्तुभसन्निभम् ॥ ६९ ॥

बबन्ध तस्य[4] ग्रीवायां
कार्तिकेय उमासुतः ।
चिन्तामणिं तत्त्वनिधिः
धर्मगुप्तमहीपतिः[5] ॥ ७० ॥

---

1 न्यासमन्विताः–क

2 वायवोद्क्षिणा–क·ख·

3 सौवर्णकार्य–क· ख

4 तस्यां–क

5 महापतिः–ग

विसृज्य मुक्तिमूलस्थं
एकवस्त्रं सुविस्मितम् ।
रुद्राक्ष[1]धारिणं मां च
किं करिष्यन्ति देवताः ॥ ७१ ॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
विष्णुप्रभृतिदेवताः ।
तप्तहाटकसङ्काशं[2]
धर्मगुप्तनृपं भयात्[3] ॥ ७२ ॥

तं वीक्ष्य चान्धकाः सर्वाः[4]
भवन्ति कुरु[रू]त[5]प्रियाः ।
न विचार्य महायुद्धं
तस्य वैरं महात्मनः ॥ ७३ ॥

धर्मगुप्तस्य नृपतेः
वयं कुर्म इतीरिताः ।
स्तुत्वा[6] तं नृपतिं दीप्तं
महात्मानं परात्परम् ॥ ७४ ॥

---

1 रुद्रांक्ष–ग
2 सङ्काशा–ग
3 अनात्–ग
4 सर्वे–क
5 सुरत–ग
6 स्तोतुं–ग

वीरमाहेश्वरं[5] सर्वे
विश्महे गगनान्तरे ।
वीरमाहेश्वराणां च
वैरं प्राकृतदेहिनाम् ॥ ७५ ॥

अनर्थसाधकं[2] लोके
इति चाहु[3] मनीषिणः ।
नारदप्रमुखाः सर्वे
ऋषयो देवयोनयः ॥ ७६ ॥

शान्तं[4] भक्तिगुणोपेतं
धर्मगुप्तं नृपं प्रति ।
क्रौञ्चरन्ध्रे तपःक्षेत्रे
ध्यानं कुर्वन्ति सर्वदा[5] ॥ ७७ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
भक्तानामुत्तमोत्तमम् ।
तं नृपं पितरः सर्वे
अग्निष्वात्तपुरस्कृताः[6] ॥ ७८ ॥

---

1 माहेश्वराः–क
2 साधनं–क
3 इतिराहु–ग
4 शान्ति–क
5 सार्वदा–ग
6 पुरस्कृतः–क

स्तोत्रं कुर्वन्ति सतत
वीरव्रतसमन्वितम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
भक्तान् मन्त्रव्रतान्वितान् ॥ ७९ ॥

ये निन्दन्ति सदा क्रोधात्
अन्धकारबिलं प्रति ।
प्रविशन्ति सदा लोके
इति चाहु[1]र्मनीषिणः ॥ ८० ॥

तेषां माहेश्वराणां [2]च
भक्तानांप्रीतिपूर्वकम् ।
नृणां सम्पत्करं स्तोत्रं
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ॥ ८१ ॥

ये कुर्वन्ति सदा प्रीत्या
तेषां स्तोत्रशरीरिणाम् ।
तदङ्गं स्पर्शितुं लोके
मृत्युर्भीतिवशं[3] गतः ॥ ८२ ॥

---

1 इति आहु–
इत्याहुश्च–ग ( पा)
इत्याहु–क

2 महेश्वराणां–क

3 मृत्युभीतिप –क

भवतीति सुरस्तोमाः
आहुः[1] प्राकृतवेदिनः ।
अविचार्य[2] मुनिश्रेष्ठान्
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितान् ॥ ८३ ॥

वीरमाहेश्वरान् मोहात्
निन्दन्ति वसुधातले ।
एते सर्वगुणोपेताः
यान्ति प्रेतबिलं प्रति ॥ ८४ ॥

इत्याहुस्सर्वदा[3] वेदाः
तथा आगमसंहिताः ।
वेदागमानां प्राधान्यं
वीरमाहेश्वरं स्थितम् ॥ ८५ ॥

भूरुद्रं जङ्गमं[4] शान्तं
प्राणलिङ्गसमन्वितम् ।
आधारचक्रराजानं[5]
स्वेच्छाविग्रहधारिणम्[6] ॥ ८६ ॥

---

1 सर्वे-ग प्राहुः-च
2 न विचार्य-क
3 सार्वदा-ग
4 भूरुद्रजङ्गमं-ग
5 राजानां-क
6 धारिणाम् क.

मुक्तिमूलं [1]तत्त्वमूलं
शीलव्रतसमन्वितम् ।
आराधितुं सदा लोके
कांक्षन्ते गणनायकाः ॥ ८७ ॥

इति चाहु[2]र्महाश्रेष्ठाः
उपमन्युपुरस्कृताः ।
ऋषयः पूर्वतत्त्वज्ञाः
शम्भुध्यानपरायणाः ॥ ८८ ॥

एतस्मिन्नन्तरे देवाः
विष्णुब्रह्मेन्द्रवायवः ।
अन्धकाः प्राकृतज्ञानाः
आगमाचारवर्जिताः ॥ ८९ ॥

धर्मगुप्तं नृपं स्तोतुं
कांक्षन्ते[3] गगनान्तरे ।
नमो वेदान्तवेद्याय
तत्त्वसाधनमूर्तये ॥ ९० ॥

नमः सोमविभूषाय
वीराचारव्रताय ते ।

---

1 मुक्तिबीजम्—ख. ग

2 इति धाहु—

3 कांक्षन्ति—ख. म.

प्राणलिङ्गाय रुद्राय
प्राणभूताय[1] ते नमः ॥ ९१ ॥

भक्तिसागरसोमाय
धर्मगुप्ताय ते नमः ।
एतत् स्तोत्रं सुरस्तोमाः
कुर्वन्ति[2] गगनान्तरे ॥ ९२ ॥

ब्रह्मविष्णुसुरेन्द्राणां
पूर्ववद् दृष्टयोऽभवन्[3] ।
भवन्ति कृतपुण्येन
स्तोत्रेण च महात्मनः ॥ ९३ ॥

मन्दं कुर्वन्तस्त एते[4]
विष्णुब्रह्मेन्द्रवायवः ।
नृपतेः धर्मगुप्तस्य
मातरं यमकिङ्कराः[5] ॥ ९४ ॥

---

1 हताय–ग

2 बभूवुः–म

3 पूर्ववद्दृष्टये भवान्.क. च.
पूर्ववद्दृष्टिदृष्टयः–ग

4 मुदं कुर्वन्ति ते–च

5 यमकिङ्करः–क.

तान् द्विजान् पाप[1]कर्मिष्ठान्
मेषमांसाशनव्रतान् ।
यातनादेहमध्येषु
प्रविश्य च[2] पुनः पुनः ॥ ९५ ॥

इति बाधाः[3] प्रकुर्वन्ति
किं करिष्यन्ति किङ्कराः ।
धर्मराजस्य ते सर्वे
धर्मगुप्तस्य मातरम् ॥९६॥

अग्निमध्ये प्रतिष्ठाप्य
भस्मीकुर्वन्ति तान् द्विजान् ।
अब्दकोटिसहस्राणां
दिवसेषु दुरात्मनः ॥ ९७ ॥

तान् द्विजान् रौरवं घोर-
नरकं यान[4] विग्रहान् ।
प्रदापयन्ति[5] ते सर्वे
किङ्करा यमशासनात् ॥ ९८ ॥

---

1 साम—क. हैम. च
2 प्रदेशाय—क
प्रवेशाय .
3 इतिबाध . इति बोधं—च
4 यान्ति—ग
5 प्रदापयन्ते—क. ख

धर्मगुप्तस्य नृपतेः
विष्णुब्रह्मेन्द्रवायवः ।
नमस्कुर्वन्ति तद्दूताः[1]
वयं कुर्मः सदा प्रिये ॥ ९९ ॥

धर्मगुप्तस्य नृपतेः
प्रख्यातं आगमान्वितम् ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
समाजेषु जितेन्द्रियाः ॥ १०० ॥

ये पठन्ति सदा प्रीत्या[3]
सायुज्यं मम हे प्रिये !
प्राप्नुवन्ति धनं गौरि
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १०१ ॥

देवतानां समाजेषु
धर्मगुप्तस्य भूपतेः[4] ।
चरितं चित्रचैतन्यं[6]
वीराचारैकसम्भवम्[7] ॥ १०२ ॥

---

1 ते दूताः--क. ख.
2 भूरुद्रजङ्गमानां च
3 प्रेत्य--क. ख
4 भूपते–क. ख
5 चरित्रं–च
6 चित्तचैतन्यं–ङ
7 विकाराद्वैतसम्भवम्

मनोहरं महावीर्यं[1]
गीयन्ते[2] किन्नरस्त्रियः ।
दानवानां समूहेषु[3]
उशना[4] मन्त्रवेष्टितः ॥ १०३ ॥

धर्मगुप्तस्य नृपतेः
चरितं[5] धृतविक्रमम् ।
वर्णयामास हे कान्ते[6] !
अत्यद्भुततरं परम् ॥ १०४ ॥

यस्मिन् चरित्रे ये देवाः
प्रीतिं कुर्वन्ति सन्ततम् ।
तेषां मनोहरं ज्ञानं
वर्णितुं वसुधातले ॥ १०५ ॥

न भवन्ति महाश्रेष्ठाः
अत्रिजाबालिकश्यपाः ।
नृपतेरस्य[6] तां भक्तिं
मर्त्यलोके मनोहराम् ॥ १०६ ॥

---

1 महादेव्यं–ग
2 गायन्तीत्यत्रार्थे– 'गीयन्ते' इति छन्दोऽनुरोधेन
3 समाजेषु–ळ
4 उशनो–ग.
5 चरित्रं–च.
6 मे कान्ते–क
एकान्ते–ग
7 नृपतेस्तस्य–ख

दधते जङ्गमाः सर्वे
दीक्षातन्त्रविशारदाः ।
तेषां मनोहर[1]ज्ञानं
भूरुद्राणां दिने दिने ॥ १०७ ॥

ये कांक्षन्ति सदा गौरि !
ते हि[2] ब्रह्मादिषण्दिताः ।
भूरुद्रजङ्गमान्[3] लोके
स्तुवन्ति पितरः सदा ॥ १०८ ॥

आनन्दयन्ति ये सर्वे
विश्वेदेव[4]पुरातनाः[5] ।
जन्मसंसार[6]दावाग्निं
शान्तं[7]कुर्वन्ति जङ्गमाः ॥ १०९ ॥

तेषां मनोहर[8]ज्ञानं
उपदिश्यन्ति[9] किन्नराः[10] ।

1 मनोहरं—च

2 एते—ग

3 भूरुद्रान् जङ्गमान्—ख॰ च.

4 विश्वेदेवाः-च

5 पुरातनः—क. ख.

6 संस्कार—क

7 शान्ति—क. ख

8 मनोहरं—च

9 उपदिशन्ति इत्यस्य स्थाने उपदिश्यन्तीति
छन्दोनुरोधेन ।

1 उपदिश्य तु किन्नरान्—च

यक्षाधिपं गुणनिधिं[1]
सखायं मम हे प्रिये ! ॥ ११० ॥

सरीसृपाणां राजानं
सहस्रफण[2] वेष्टितम् ।
शेषं प्रति महाज्ञानं
भूरुद्राणां च पार्वति[3] ॥ १११ ॥

जीवः सुरेन्द्रमन्त्री च
भार्गवो भक्तिदायकः ।
उपदेशं तथा चक्रे
सर्वं लिङ्गमयं जगत् ॥ ११२ ॥

शिवाधीनं जगत्सर्वं
जङ्गमाधीन ईश्वरः[4] ।
ज्ञानं च मन्त्रमित्याहुः[5]
वेदवेदान्त[6]पारगाः ॥ ११३ ॥

संसारसागरोत्तीर्णं[4]
मन्त्रमायाविवर्जितम्[5] ।

---

1 गूढनिधिं–च

2 फणि–क. ख

3 पार्वती–ग

4 धीनशाम्भवम्–ग

5 ज्ञानं मनसीत्याहुः–ग

6 वेदाङ्ग–ग.ख

7 रोत्तीर्णाः–ख

8 मन्त्रों मायाविवर्जितः–क. ख

भूरुद्राणां जङ्गमानां[1]
स्तोत्रं सम्पत्करं नृणाम् ॥ ११४ ॥

ईत्याहुर्मम सांनिध्ये
रेणुकाद्याः सनातनाः ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
कार्यं कल्मषनाशनम् ॥ ११५ ॥

आराधयन्ति[3] मे कान्ते !
षण्मुखप्रमुखाः[4] सुताः ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[5]
विष्टपेषु महात्मनाम्[6] ॥ ११६ ॥

भक्तिं कुर्वन्ति मे[7] गौरि !
त एते ब्रह्मचारिणः ।
भवन्ति कृतपुण्ये
पापराशिं पुराऽर्जितम् ॥ ११७ ॥

भस्मीकुर्वन्ति सततं
भस्मपुण्ड्समन्विताः ।

---

1 भूरुद्रजङ्गमानां च–ग
भूरुद्रजङ्गमानां च
3 आराधयन्ते–ग
4 प्रभृतीः–ग
5 भूरुद्रजङ्गमानां च–ग
6 महात्मनः–क
7 हे–ग.

पिङ्गकेशजटाजूटं
प्राण[1] लिङ्गसमन्वितम् ॥ ११८ ॥

भूरुद्रं जङ्गमं[2] शान्तं
चक्राणां चक्रिणं गुरुम् ।
अभेद्यवज्रकायस्थं
साधनत्रयवेष्टितम् ॥ ११९ ॥

[3]मुमुक्षुज्ञाननिरतं
मुक्तिकान्तामनोहरम् ।
षड्दीक्षदीक्षासम्पन्नं
वेदषड्भि प्रतिष्ठितम् ॥ १२० ॥

वेदान्तवेद्यं तत्त्वज्ञं
पादोदकसमन्वितम् ।
नवभक्तिसमोपेतं
वैराग्यनिलयं प्रभुम् ॥ १२१ ॥

सदानन्दं नित्यतृप्तं[4]
निष्कलङ्कं निरञ्जनम् ।
अक्षमालासमोपेतं
रुद्राक्षवलयीकृतम् ॥ १२२ ॥

---

1 जूटप्राण—ग.
2 भूरुद्रजङ्गमं—क, ग
3 मुमोक्षु—ग.
4 तृप्ति—क.

ब्रह्माण्डभाण्डनिर्भेद्यं
ब्रह्मज्ञानसमन्वितम् ।
मम पूजारतं देवं
मदनास्त्रविवर्जितम् ॥ १२३ ॥

ऋषीणामग्निकल्पानां
जडाजडविभेदनम् ।
मुक्तिमूर्तिं मुनिश्रेष्ठं
ज्ञानमूलं[1] तपोनिधिम् ॥ १२४ ॥

भस्मत्रिपुण्ड्रसञ्छन्नं
लयभैरवपीडितम् ।
कालरुद्रसमोपेतं
कल्पकोटिसमन्वितम् ॥ १२५ ॥

विडम्बिनं मन्त्रकायं
पञ्चसूतकवर्जितम् ।

पञ्चब्रह्मसमोपेतं
पञ्चरात्र[1] समन्वितम् ।
कृतकृत्यं परं श्रेष्ठं
सांख्ययोगविवर्जितम् । ॥ १२६ ॥

---

1 ध्यानमूलं–ग

2 पाञ्चरात्र-

षट्तर्कतार्किकं[1] तातं
लोकानां लोकवेष्टितम् ।
नादबिन्दुकलातीतं
कुलगोत्रविवर्जितम् ॥ १२७ ॥

सहस्रदलमध्यस्थं
यमिनां शमदायकम् ।
नृणां परमसंस्कार-
क्रियारूपगुणान्वितम् ॥ १२८ ॥

धर्मकोशं दमोपेतं[2]
धर्मार्थफलवर्जितम् ।
कामत्यागं कलाज्ञानं
कालकूटधरं प्रभुम् ॥ १२९ ॥

पितरं देवतानां च
धातारं[3] नाकिनां शिवम् ।
ईशितारं सुरेशानां
होतारं होमपूर्वकम् ॥ १३० ॥

भक्तानामर्भकं लोके
भक्तिज्ञानसमन्वितम् ।

---

[1] तर्कितं—क
[2] दयोपेतं—ख
[3] दातारं—क. ग

वादिनां वादनिलयं[1]
वेदाङ्गं तत्त्ववेदिनाम् ॥ १३१ ॥

दानवानां बलनिधिं
भोगिनां[2] भोग[3]दायकम् ।
मुनीनां मननध्येयं
गुरूणां गुणकल्पितम् ।
कामिनां कामविद्रावं
कवीनां कविदायकम् ॥ १३२ ॥

क्रमिणां क्रमविक्षेपं
हव्यकानां हविर्भुजम् ।
प्रसादिनां[4] प्रसादस्थं
अचिन्त्यं योगमुद्रितम् ॥ १३३॥

लोकानां लोकसन्धानं
धर्मिणां धर्मवेष्टितम् ।
प्रत्यभिज्ञाननिलयं
प्रेममोह[5]विवर्जितम् ॥ १३४ ॥

---

1 वादिनिलयम्—क
2 भोगानां–ग
3 भोगि—क
4 प्रसादीनां–क
5 प्रेमामोह–क

पावनानां[1] पवित्राङ्गं
विद्यानां विदुषं[2] किल ।
युगानां युगसन्धानं
स्थावराणां स्थिरप्रदम् ॥ १३५ ॥

खगानां गमिसन्धानं
तारकाणां प्रदीपकम्[3] ।
ज्योतिषां रुचिदातारं
प्रेतलिङ्गतिरस्कृतम् ॥ १३६ ॥

ग्रहाणां नायकं ग्राह्यं
ग्रहस्थानां[4] प्रपूजितम् ।
वीरमाहेश्वरं गौरि !
स्तोतुं चन्द्रार्धशेखरम् ॥१३७॥

नेश्महे हे प्रिये शान्ते !
वयं गुहगणान्विताः ।
तेषामङ्गानि रुद्राणां
जङ्गमानां दिनेदिने ॥ १३८ ॥

---

1 पावकानां—ग

2 विदुषमिति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 प्रदीपिकाम्—क

4 गृहस्थानां—ग

स्तोतुं सुरेन्द्रदिक्पालाः
काङ्क्षन्ति गगनान्तरे ।
यानि तानि[1] सुरस्तोमाः[2]
भूरुद्राणां पुरातनाः ॥ १३९ ॥

अङ्गानि जन्मशून्यानि
नमः कुर्वन्ति नाकिनः ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[3]
पादमूले पवित्रके ॥ १४० ॥

आपगा यमुना सिन्धु-
शोणाभद्राः ससिन्धवः[4] ।
आवासयन्ति मे कान्ते[5]
नवभक्तिसमन्विताः ॥ १४१ ॥

सर्वलोकेषु पूज्यानां
जङ्गमानां बुधोत्तमाः ।
पादाब्जानि पवित्राणि
चतुर्वर्गप्रदानि हे ![6] ॥ १४२ ॥

---

1 कानि—ग
2 सुरस्तोम—क
3 भूरुद्रजङ्गमानां—च
4 ससिन्धुजाः—म
5 एकान्ते—ग
6 प्रदानि मे—ग

हृत्पद्मपीठकोशेषु
ध्यानं[1] कुर्वन्ति सर्वदा[2] ।
उपमन्युदधीच्यत्रि-
दूर्वासतृणबिन्दवः ॥ १४३ ॥

शिवदीक्षासमोपेतं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ।
वीरमाहेश्वरं गौरि !
नमः कुर्वन्ति सर्वदा[3] ॥ १४४ ॥

नमस्कारप्रभावेन
ऋषिमध्येषु पूजिताः ।
भवन्ति ते परं दीप्तं
सायुज्यं साक्षिवर्जितम् ॥ १४५ ॥

यान्ति यानगणोपेताः
इन्द्राग्नियम[4]सेविताः ।
सूर्येन्दुकुण्डलीकर्ण-
धारिणं चक्रनायकम् ।
वीरमाहेश्वरः विश्वः
प्रपूजयति सन्ततम् ॥ १४६ ॥

---

1 दानं—क
2 सार्वदा—ग
3 सार्वदा—ग
4 यमइन्द्राग्नि—ग

कुण्डलीकृतसूर्येन्दुं
फाले भस्मविलेपनम् ।
भूरुद्रं जङ्गमं[1] शान्तं
ध्यातुं को वा जनाधिपः ॥ १४७ ॥

न समर्थो हि मे कान्ते !
भवति ध्यानवर्जितः[2] ।
कवलीकृतभक्तान्नं
प्रसादमुखपूर्वकम् ॥ १४८ ॥

स्निग्धमन्त्रगुणोपेतं
जङ्गमं जगतां जनाः ।
न ध्यायन्ति मम प्रीत्या
ते यान्ति यममन्दिरम्[3] ॥ १४९ ॥

सर्वदा[4] जङ्गमं श्रेष्ठं
इत्याहुः ब्रह्मसेविताः ।
अशेषप्रमथाः कान्ते !
तृणीकृतपुरन्दराः ॥ १५० ॥

बिभ्रन्ते[बिभ्रते] तस्य तत्त्वं
वेदातीतं गुरूदयम् ।

---

1 भूरुद्रजङ्गमं—क. ग

2 ज्ञानवर्जिताः –

3 मम मन्दिरम्—क

4 सार्वदा—ग

सद्योजातमुखाज्जातं
वामदेवमुखोद्भवम् ॥ १५१ ॥

अघोरवक्त्रसम्भूतं
तत्पुरुषमुखोद्भवम्[1] ।
आनन्दममलं शान्तं
दमं च दधते सति[2] !
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
दमं [3]कुर्वन्ति शाम्भवाः ॥ १५२ ॥

दमादन्यत्[4] परं तत्त्वं
नास्ति लोके वरानने !
तत्त्वानां करणाद्धेतोः[5]
कार्याणां सविकल्पकम् ॥ १५३ ॥

निर्विकल्पं गुणातीतं
ज्ञानं त्यक्त्वा महर्षयः ।
दमं[6] धर्मार्थदं लोके
दधते नात्र संशयः ॥ १५४ ॥

---

1 इदमर्धं अधिकं-ग. पुस्तके
2 सिति-ग
सते-ग (पा)
3 शार्मं-ग
4 दन्यं-ग
5 कारणाद्धेतोः-क० ग
6 दम-ग

दमाच्छमं शान्तिरूपं[1]
जायते मम सन्निधौ ।
तच्छमं मोक्षनिलयं
भक्तिज्ञानसमन्वितम् ॥ १५५ ॥

विडम्बयन्तं कामारिं
वीरमाहेश्वरं शिवम् ।
भूरुद्रं[2] जङ्गम देवाः
स्तोतुं कांक्षन्ति मे प्रिये ! ॥ १५६ ॥

शमादन्यजग[3]न्मध्ये
तत्त्वं[4] तत्त्वविदो बुधाः ।
न धारयन्ति मे भक्त्या
इदं सत्यं वरानने ! ॥ १५७ ॥

शमेन जायते ज्ञानं
योगिनां तत्त्वसाधनं ।
ज्ञानधर्मोऽत आत्मानं[5]
अन्तर्व्यापिनमीश्वरम् ॥ १५८ ॥

---

1 शान्तरूपं–क
2 भूरुद्र–ग
3 दन्यजग–
4 तत्त्व–क
ज्ञानाद्धर्ममहात्मानं–ग

पश्यन्ति[1] जङ्गमाः सर्वे
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठिताः ।
प्राणलिङ्गप्रयुक्तेन
भ्रूरुद्रेण महाऽऽत्मना ॥ १५९ ॥

आत्मानमात्मनात्मा तु
दृश्यते सुरपूजिते !
इडापिङ्गलयोर्मध्ये
प्राणवायून् दश प्रिये ॥ १६० ॥

निरोधयन्ति तान् वायून्
विसृज्य च पुनः पुनः !
वसिष्ठवालखिल्याद्याः
ऋषयः क र्मदेहिनः[2]

अखण्डज्योतिषां नाथं
प्रणवं[3] ब्रह्मरूपिणम् ।
वीरमाहेश्वरं शान्तं
ऊर्ध्वरेतं जनाधिपम् ॥ १६२ ॥

---

1 दृश्यन्ते—ग
2 देहिकाः—ग
3 प्रणव—ग

ध्यानं चक्रुः सदा गौरि !
मम भक्तमनोरमम्[1] ।
हृत्पुण्डरीककोशेषु
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठिताः ॥ १६३॥

वायून् चलनसंस्कारान्
उद्भूतस्पर्शसाधनान्[2] ।
अनुद्भूतप्रभावज्ञान्
आत्मसाधनसाधकान् ॥ १६४ ॥

न निरुध्य महाश्रेष्ठाः[3]
योगं दधति मे प्रिये !
अष्टाङ्गयोगराजानं[4]
षट्स्थलब्रह्मपूजितम् ॥ १६५ ॥

वीरमाहेश्वरं विद्वान्
रेणुको मुनिपुङ्गवः ।
मे गुरुः सात्त्विकः शान्तः
जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ १६६ ॥

---

1 भक्त्या मनोरमे—ग
भक्तमनोरमम्—क
भक्ता मनोरमम्—ग (पा)

2 साधनात्—क

3 महिश्रेष्ठान्—क.

4 राजानाम्—क
अत्र योगराजमित्यस्य स्थाने योगराजानमिति छन्दोऽनुरोधेन ।

स्तोत्रं[1] करोति मे कान्ते !
इदं सत्यं वरानने !
गौरीवल्लभ कामारे !
कालकूटहरा[2] हर ॥ १६७ ॥

रेणुकस्य यदाख्यानं
श्रोतुं कौतूहलं परम् ।
इच्छामहे[3] महाभाग !
वद मे प्राणनायक ! ॥ १६८ ॥

ब्रह्माण्डजननात्पूर्वं
अहं[4] मायाविवर्जितम् ।
रेणुकं भक्तभक्तिस्थं[5]
देशिकेन्द्रं गुरुं प्रभुम् ॥ १६९ ॥

तत्त्वमस्यादिनिरतं
शिवसूत्रसमन्वितम् ।
कथयामि पुरा कान्ते !
इतिहासं सुविस्मितम्[6] ॥ १७० ॥

---

1 स्तोतुं—ग
2 हर इत्यस्यस्थाने दीर्घः
छन्दोऽनुरोधेन
3 इच्छयामि—ग
इच्छामहे—क
4 गुहं—ग
5 भक्तिभक्तस्थं—ग
6 सुवेष्टितम्—क

चरमाद्रिपुरोभागे
अष्टप्राकारवेष्टिता ।
अगाधपरिघाखात[1]-
वलयेन विराजिता ॥ १७१ ॥

दशद्वारान्विता सौधा[2]
उपद्वारशतान्विता ।
नवलक्षमहावीथी
विधिरञ्जित[3]मालिका ॥ १७२ ॥

केतुमाला पुरी[4] गौरि !
पावकत्रयवेष्टिता ।
ब्रह्माण्डसूत्रसङ्घट्ट-
ज्योतिश्चक्रविराजिता ॥ १७३ ॥

ध्रुव[5]तारासमोपेत-
गोपुरेण विराजिता[6] ।
अनूरुसारथेरश्व-
खुरताडनतोरणा ॥ १७४ ॥

---

1 परिघापाद्–क.ख
2 ता या सा–ग
3 वीथीरचित–ग
4 पुरे–ग
5 ध्रुवं–ग
6 विडम्बका–क

रत्नाकरस्य साहस्र--
वीचिमालोपशोभिता ।
नाकिनां निलयं नित्यं
हसतीव वरानने ! ॥ १७५ ॥

वारनारीसमोपेता
वरदानववेष्टिता ।
चन्द्रकान्तशिलाबद्ध[1]-
कोटिहर्म्यविराजिता ॥ १७६ ॥

रत्नकुट्टिमसंकीर्णा
गन्धमारुतसेविता ।
चन्द्रमालासमोपेता[2]
ध्वजकोटिसमन्विता ॥ १७७ ॥

कुजादिपञ्चभगणा[3]
भगतारासमन्विता ।
लसद्रथाश्वसङ्कीर्णा[4]
कान्ताजनसमन्विता ॥ १७८ ॥

---

1 बद्धा—ख

2 समोपेत—ख

3 भगण—क

4 सङ्कीर्ण—ग

तस्याः प्रभावसम्पन्नः
विद्वान् वीर्यसमन्वितः ।
देशिकेन्द्रो मुनिश्रेष्ठः
रेणुको मुनिपुङ्गवः ॥ १७९ ॥

आगम्य[1] मन्त्रसारेण
तोयेन च पुनः पुनः ।
पुरीं तां पावनीकृत्य
मणिभद्रनृपं गुरुम् ॥ १८० ॥

शिवदीक्षाप्रयुक्ताङ्गं
शिवसंस्कारसाधनम् ।
प्रतिष्ठाप्य द्विजान् सर्वान्
शिवदीक्षासमन्विताम्[2] ॥ १८१ ॥

वीरमाहेश्वरान् गौरि !
गणयामास रेणुकः ।
द्विजानां कोटिसंख्याकं
शिवसंस्कारवर्जितम् ॥ १८२ ॥

देशिकेन्द्रो मुनिश्रेष्ठं
चक्रे दीक्षाऽऽगमार्थकैः ।

---

[1] आ त्य–ग (पा)
[2] दीक्षागमान्विता –ग

मणिभद्रस्य नृपतेः
दारा धर्मसमन्विता ॥ १८३ ॥

अपांसुला मतिवती
दमयन्तीति विश्रुता ।
बिम्बाधरी पीनकुचा
कण्ठरागसमन्विता ॥ १८४ ॥

तां रेणुको मुनिश्रेष्ठः
दीक्षां[1] पूर्वपुरातनीम् ।
स चक्रे धुरि नारीणां
कीर्तनीयां करोति हे[2] ॥ १८५ ॥

नृपतिः मणिभद्रोऽसौ
देवदानवपूजितः[3] ।
देशिकेन्द्रममुं[4] शान्तं
रेणुकं गुरुमागतम्[5] ॥ १८६ ॥

पप्रच्छ भक्तिभावेन
लोके श्रेष्ठतपस्वि कः[6] ।

---

1 दीक्षा–क. ख
2 मे–ग
3 पूजितम्–
4 न्द्रमुनिं–क
5 गुरुपुङ्गवम्–ग
6 अत्र तपस्वी कः इत्यस्य स्थाने तपस्विकः इति छन्दोऽशोधेन ।

इति तद्वचनं श्रुत्वा
मणिभद्रमहीपतेः ॥ १८७ ॥

स्मितवानात्मसम्पन्नः
रेणुको मुनिसत्तमः ।
वाचं वदति मे कान्ते !
नृणां मुक्तिप्रदाय[यि]काम् ॥ १८ ॥

दीक्षाङ्गं[1] मन्त्रसंयुक्तं
प्राणलिङ्गसमन्वितम् ।
वीरमाहेश्वरं शान्तं
पूजां कुरु महीपते ! ॥१८९ ॥

वीरमाहेश्वरादन्यत्
नास्ति सत्त्वं जगत्त्रये ।
वीरमाहेश्वराणां च
विमलाङ्गेषु भूपते ! ॥ १९० ॥

आवासयन्ति ऋषयः
कामक्रोधविवर्जिताः[2] ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
पूजां कुरु महीपते ! ॥ १९१ ॥

---

1 दीक्षाङ्ग—ग

2 क्रोधसमन्विताः—क. ख

इति तद्वचनं श्रुत्वा
नवभक्तिसमन्वितः ।
मणिभद्रो नृपश्रेष्ठः
उवाच गुरुसन्निधौ ॥ १९२ ॥

वीरमाहेश्वरं वाऽपि
केन संस्कारकेण मे ।
भक्त्या माहेश्वरं[1] देवं
पूजादानफलप्रदम् ॥ १९३ ॥

तत्सर्वं साधकोपायं
वद मे गुरुपुङ्गव !
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
तुष्टात्मा रेणुको गुरुः ॥ १९४ ॥

नृपं प्रति दमोपेतं
वाक्यं ब्रह्मेन्द्रविस्मितम् ।
उवाच[2] मे प्रिये गौरि !
मन्त्रध्यानसमन्वितम् ॥ १९५ ॥

आत्मानन्दं[3] शिवं शान्तं
नित्यतृप्तं निरञ्जनम् ।

---

1 महेश्वरं—ग
2 पुरा च—क
3 आत्मानन्द—क

वीरमाहेश्वरं वीर !
मामिव[1] क्षत्रियोत्तम ! ॥ १९६ ॥

अवेहि[2] तत्त्वसंकाशात्
देशिकेन्द्रप्रभावतः ।
आज्ञां चक्रे भ्रुवोर्मध्ये
हं क्षं दिग्दलसंयुते ॥ १९७ ॥

वीरमाहेश्वरं शान्तं
आरुह्य वसुधाधिप !
पूजां कुरु मम प्रीत्या
शृणु कारुण्यभावतः ॥ १९८ ॥

विकारा[3]ज्जायते पुण्यं
रेफाद्धर्मः[4] प्रतिष्ठितः[5] ।
मकाराज्जायते मन्त्रः[6]
हकारादात्मसंनिभम् ॥ १९९ ॥

महातत्त्वं शिवकरं[7]
जायते वसुधातले ।

---

1 नमामि–ग
2 अवैहि–ग(पा)
3 वकारा–ग
4 धर्मं–ग
5 प्रतिष्ठितम्–ग
6 मन्त्रं–ग
7 तत्त्वमीश्वराद्धि–क.ख

अनुलोमविलोमेन
शिव इत्यक्षरद्वयम् ॥ २०० ॥

जगताऽऽवेष्टितं[1] गौरि !
शिवादन्यन्न विद्यते ।
वेदागमानां तद्वेद्यं
वेदमध्ये प्रतिष्ठितम् ॥ २०१ ॥

रुद्रसूक्तेन संयुक्तं
शिव इत्यक्षरद्वयम् ।
वेदानां याजुषं श्रेष्ठं
काण्डानां रौहिणं[2] तथा ॥ २०२ ॥

तत्रापि पञ्चमः प्रश्नः
शतरुद्रमिति[3] प्रिये !
शतरुद्रे महामन्त्रः[4]
शिव इत्यक्षरद्वयम् ॥ २०३ ॥

---

1 जगतांवेष्टित -ग

2 काहिंण—ग
औक्षिनं—ग (पा)
काक्षिनं—क

3 शतरुद्र इति—क, ख

4 महामन्त्रं—ग

वेदाश्च[1] सर्वशास्त्राणि[2]
जायन्ते जगतीतले ।
वकाराद्दागमाः सर्वे
जायन्ते मेनकात्मजे[3] । ॥ २०४ ॥

केनचिन्मनुजेनापि
शिव इत्यक्षरद्वयम् ।
मेलनं ज्ञानभावेन
चक्रे मन्त्रात्मकः[4] शिवः[5] ॥ २०५ ॥

शिव इत्यक्षरे लोके
नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्
वीरमाहेश्वरं मन्त्रं
जपन्ति प्रमथोत्तमाः ॥ २०६ ॥

सप्तकोटिमहामन्त्रं
चित्तविभ्रमकारणम्[6] ।
इति त्यक्त्वा महापूज्यं
भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ २०७ ॥

---

1 शकारात्–ग
2 सर्ववेदाश्च–क. ख
वसुधातले–ग
4 मन्त्रात्मकं–ग
5 शिवम्–ग
6 विभ्रमकारकम्–ग(पा)

षडक्षरसमोपेतं
वीरमाहेश्वरं विभुम् ।
अङ्गन्यासैः करन्यासैः
तं मन्त्रं[1] कीलकान्वितम् ॥ २०८ ॥

अर्गळेन समोपेतं
बीजन्याससमन्वितम् ।
पठन्ति[2] प्रमथाः सर्वे
इति सत्यं महीपते ! ॥ २०९ ॥

सर्वमन्त्रान्[3] परित्यज्य
तं मन्त्रं[4] मुक्तिदायकम् ।
नृणां सम्पत्करं श्रेष्ठं
पवित्रमघनाशनम् ॥ २१० ॥

पठस्व [त्वं] परमप्रीत्या
वीरमाहेश्वरं शिवम् ।
आदिमध्यावसानेषु
प्रणवं मेलनीकृतम् ॥ २११ ॥

---

1 तन्मन्त्रं–ग

2 पठथन्ते–ग

3 सर्वधर्मान्–ग

सर्वान् मन्त्रान्–ख

4 तन्मन्त्रं–

दलबीजसमोपेतं
तं मन्त्रं[1] नाकिनः सदा ।
कांक्षन्ति सर्वदा[2] स्वर्गे
विष्णुतुल्यपराक्रमाः[3] ॥ २१२ ॥

वीरमाहेश्वरो मन्त्रः
गन्धर्वैः सुरसत्तमैः[4] ।
गीयते[5] सर्वदा[6] प्रीत्या
इत्याहुः षण्मुखादयः ॥ २१३ ॥

वेदादौ वेदमध्ये च
वेदान्ते च प्रतिष्ठितम् ।
ऋग्यजुस्सामसङ्घेषु[7]
प्रणवं[8] न्यासपूर्वकम् । ॥ २१४ ॥

सनत्कुमारो विद्वान् [द्वांस्तु]
गानतानसमन्वितः[9] ।

---

1 तन्मन्त्रे–ग
2 सर्वथा–ख
3 पराक्रम–क
4 स्वरसत्तमैः
5 गीयन्ते–क, ख
6 सार्वदा–ग
7 संख्येषु–क
8 प्रणामं–ग
9 समन्वितम्–क, ख

जपते[1] सर्वदा[2] गौरि !
प्रत्यर्थिजयकांक्षया[3] ॥ २१५ ॥

जाग्रे स्वप्ने सुषुप्तौ च
तं मन्त्रं[4] मन्त्रनायकम् ।
बीजन्याससमोपेतं
शक्तिकीलकसंयुतम् ॥ २१६ ॥

विधातृप्रमुखाः सर्वे
श्रद्धाभक्तिसमन्विताः[5] ।
उपदेश्यन्ति[6] [दिशन्ति] ये चान्ये
ऋषयो ब्रह्मपूजिताः ॥
तेन मन्त्रप्रभावेण
सृष्टिं कुर्वन्ति सन्ततम् ॥ २१७ ॥

अखण्डमद्वैतमचिन्त्यवैभवं
बुधोत्तमाः सर्व[7]पुराणपूजिताः ।
मन्त्राक्षर[8]न्यासमहामयं शिवं
ते वीरमाहेश्वरमन्त्रनायकम् ॥ २१८ ॥

---

1 जप्यते—ग
2 सार्वदा—ग
3 कांक्षितः—ग
4 तन्मन्त्रं—ग
5 समन्वितः—क
6 उपदेश्यन्ति—ग
7 सार्व—ग
8 मन्त्राक्षरं—ग

भुक्तिप्रदं मुक्तिपथं प्रविश्य
ते दैवताः[1] सन्ततकामचारिणः ।
अन्यानि शास्त्राणि तिरस्कृतानि
त्यक्त्वाऽऽशुमन्त्रं
सुरवल्लभासुतम्[2] ॥ २१९ ॥

महीपते ! मन्त्रगुणान्वितं शिवं
माहेश्वरं[3] मोक्षपथैक[4]गामिनम् ।
गुरूत्तमं वेदशिखामणिं प्रभुं
भूपावनं पिङ्गजटावभासम् ॥ २२० ॥

आद्यन्तशून्यं[5]पुरुषं पुरातनं
शीलान्वितं तत्त्वनिधिं सदाशिवम् ।
यं जङ्गमं[6] ज्ञानमयं सनातनं
ध्यानं कुरु प्रीतिकलान्विते[7] शिवे ॥ २२१ ॥

इति श्रीवीरागमोत्तरभागस्य वीरमाहेश्वरतंत्रस्य
वीरमाहेश्वरस्वरूपमन्त्रानुवर्णनं नाम
द्वितीयः पटलः समाप्तः[9]

---

1 देवताः–ग

2 सुरवल्लभाः सुधाम्–ग

3 महेश्वरं–ग

4 पदैक–ग

5 आद्यान्त–क

6 भावयन् जङ्गमं–ग

7 कथाग

वीरागमे–ग

9 इति श्रीवीरागमोत्तरभाग—द्वादशसहस्रग्रन्थ-वीरमाहेश्वरतन्त्रस्य (कर्नाट कटीकायां )वीरमाहेश्वरस्वरूपमन्त्रानुवर्णनं नाम द्वितीय पटलः—क. ग

# अथ तृतीयः पटलः

ईश्वर उवाच—

मणिभद्रो गुरुं शान्तं
रेणुकं मुनिपुङ्गवम् ।
पप्रच्छ तत्क्रियारूपं
अहं वेद्मि मम प्रिये ! ॥ १ ॥

शम्भोर्महात्मनस्तस्य
वाक्यं[1] वेदागमान्वितम् ।
श्रुत्वा सा कामिनी गौरी
मुदं धत्ते गुणान्विता ॥ २ ॥

व्योमकेशः शिवः शम्भुः[2]
तां प्रियां प्राणवल्लभाम् ।
आलिङ्ग्य[3] चुम्बनं कृत्वा
इदं वचनमब्रवीत् ॥ ३ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षां शृणु वरानने !

---

1 वचनं—ग
2 शम्भोः—क
3 आलिङ्ग—क

सवितर्यप्युत्तरं[1] मार्गं
गते सति महात्मनः[2] ॥ ४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षां मुक्तिप्रदातरम् [यिनीम्] ।
कांक्षन्ति ज्ञानभावेन
शुभलग्नतिथौ प्रिये ! ॥ ५ ॥

दीक्षाकुलादि

चन्द्रताराबलोपेतं
पञ्चेष्टिकसमन्वितम् ।
निष्पञ्चकं महालग्नं[3]
गुरुदृष्टिसमन्वितम् ॥ ६ ॥

केन्द्रत्रिकोणयामित्र[4] [जामित्र]
पापग्रहविवर्जितम् ।
स्थानान्युपचयान्याहुः[5]
भूपुत्रेण समन्वितम्[6] ॥ ७ ॥

षड्वर्गशुद्धिं तं लग्नं
शोधयेद्देशिकः प्रिये !

---

1 सवित्र उत्तरं–ग सवितर्यप्यत्र–क
2 अत्र महात्मानः इत्यस्य स्थाने महात्मनः इति छन्दोऽनुरोधेन ।
3 निःपञ्चकमहालग्न–क
4 त्रिकोणगामित्र–क
यान्शु–ग
6 समन्वितः–क

इन्द्ररुद्रभगस्वाति-<br>
पूषज्येष्ठाग्नियान्यपि[1] ॥ ८ ॥

ऋक्षाण्यपि परित्यज्य<br>
दस्राहिर्मध्यतारकाः ।<br>
यमं विष्णुं गुरुं वारि<br>
पितृपूर्वात्रयं[2] तथा ॥ ९ ॥

उत्तरात्रयऋक्षाणि<br>
शोधयेत् तत्त्व[3]पारगः ।<br>
चरलग्नं परित्यज्य<br>
स्थिरलग्नं विशोधयेत् ॥ १० ॥

गुरु[1]काव्यबुधश्चन्द्र[2]<br>
दृष्टियुक्तं शुभात्मकम् ।[3]<br>
दोषस्वल्पं[4] गुणाधिक्यं<br>
तं लग्नं शोधयेत् सुधीः ॥ ११ ॥

---

1 अत्र आग्नियान्यपि इत्यस्य स्थाने आग्नियान्यपि इति छन्दोनुरोधेन ।

2 पूर्वाश्रयं-क· ख

3 तत्र–क

4 गुरोः–क

5 बुधचन्द्र इत्यस्य स्थाने बुधश्चन्द्रेति छन्दोऽनुरोधेन ।

6 शुभात्मकः–क

7 दोषं स्वल्पं–क

एकपादं द्विपादं वा
त्रिपादं वा गुहान्वितम्[1] ।
पाददृष्टिबली सौरिः
द्विपादो बलवान् गुरुः ॥ १२ ॥

त्रिपादो बलवान् भौमः
सम्पूर्णाः[2] सकलग्रहाः ।
बलाबलं विचार्याशु
ग्रहचेष्टाविवर्जितम् ॥ १३ ॥

नैसर्गिकं[3] बलोपेतं
चेष्टाकालबलान्वितम् ।
रिष्फं चन्द्राष्टमं लग्नं
त्यजेत् तत्त्वार्थपारगः ॥ १४ ॥

सम्पत्तारासमोपेतं
गुरुकेन्द्रसमन्वितम् ।
शुक्रस्थ चन्द्रदशमं
तं लग्नं शोधयेत् सुधीः ॥ १५ ॥

ग्रहैश्चन्द्रगुरुभौमैः[4]
असूर्यैर्भगणान्वितम् ।

---

1 गृहान्वितम्—$ख_2$

2 सम्पूर्ण—ग

3 नैसर्गिक—ग

4 अत्र गुरुभौमैरिति वक्तव्ये गुरुभौमैरिति छन्दोनुरोधेन

चिंयं कमण्डलं[1] त्यक्त्वा
कण्टकं ग्रहरक्षकम् ॥ ॥ १६ ॥

त्रियं कमण्डलं होरा
पन्था राहुश्च कण्टकम् ।
ललाटपरिघा दण्डं
परित्यज्य शुभान्वितम् । ॥ १७ ॥

अखण्डं[2] चन्द्रदशमं
भद्राविष्टिविवर्जितम् ।
तद्दिनं तत्त्वसम्पन्नः
देशिकेन्द्रो विशोधयेत्[3] ॥ १८ ॥

क्षेमतारासमोपेतं
गुरुकाव्यादिनाऽन्वितम् ।
अश्विनी हरते पापं
यमो ज्ञानविनाशनम् [नः] ॥ १९ ॥

अग्निं क्रोधं [अग्नेःक्रोधः] भवेदाशु
रोहिणी ज्ञानसाधनम् ।
करोति, सोमनक्षत्रं [त्रात्]
क्रियाभक्तिः[4] प्रजायते ॥ २० ॥

---

1 कमडलं-
2 अखण्ड-ग
3 विबोधयेत्-क
4 क्रियाभक्ति-क

रौद्रर्क्षे[1] मम सायुज्यं
प्रदापयति हे प्रिये ।
अदितिस्तत्त्वसन्धानं
ज्ञानं चक्रे [2]वरानने ॥ २१ ॥

तिष्यर्क्षे [क्षात्] गुरोर्भक्तिः
जायते जगतीतले ।
सर्पर्क्षे [क्षात्] तामसज्ञानं
जायते हे प्रिये शिवे[3] ! ॥ २२ ॥

पित्रर्क्षे आयुषः क्षीणं
करोतीति महात्मनः ।
अशेषप्रमथाः सर्वे
आहुस्तत्त्वार्थपारगाः ॥ २३ ॥

फल्गुनी [न्यां][4] भक्तिवैराग्यं
नश्यतीति तथा प्रिये ।
उत्तरादुत्तरज्ञानं[5]
जायते वसुधातले ॥ २४ ॥

भगर्क्षमिन्द्रियज्ञानं
प्रदापयति सन्ततम् ।

---

1 आर्द्रक्षे–ग.

2 अत्र करोतीत्यर्थे चक्रे इति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 पद्यमिदं क पुस्तके न दृश्यते

4 फाल्गुणे–ग

5 उत्तरा उत्तरज्ञानं–क

चित्रा चैतन्यवैकारं
प्रदापयति हे प्रिये ॥ २५ ॥

वायुयोगक्षयकरं
ज्ञानं जन्मान्तरान्वितम् ।
चक्रे,[1] इन्द्राग्निनक्ष[त्रात्] त्रं
लिङ्गद्रोहं[हः] प्रजायते ॥ २६ ॥

मैत्रं [त्रात्] माहेश्वरज्ञानं
जायते इन्द्रनामकम् ।
तदृक्षं मम भक्तिं च
प्रदापयति सर्वदा[2] ॥ २७ ॥

मूला[त्] मनोहरं ज्ञानं[3]
जायते सलिलं [लात्] तथा ।
उत्तराषाढतो ज्ञानं
नश्यतीति तपस्विनः ॥ २८ ॥

आहुः सर्वगुणोपेताः
आगमार्थविशारदाः ।
वैष्णवं विष्णुभक्तिं च
शिवसंस्कारवर्जितम्[4] ॥ २९ ॥

---

1 अत्र चक्रे इति छन्दोऽनुरोधेन,

2 सार्वदा–ग

3 मूलं मनोहरज्ञानं–ग

4 वर्जितः–क. ख. ग (पा)

प्रदापयति हे गौरि !
वसुतारातपःक्षयम् ।
तज्ज्ञानं जायतेऽप्याशु[1]
शततारा भिषक्प्रदा ॥ ३० ॥

पूर्वाभाद्रा[त्] शिवाद्वैत-
ज्ञानं नश्यति हे प्रिये ।
उत्तराभाद्रनक्षत्रं
षट्स्थलब्रह्मसाधनम् ॥ ३१ ॥

तज्ज्ञानं जायते[2]ऽप्याशु
रेवती मुक्तिदायकम् ।
षट्शाम्भवमयं[3] ज्ञानं
प्रदापयति सर्वदा[4] ॥ ३२ ॥

अर्को व्याधिं करोत्याशु
सोमवारो [रात्] निरंजनम्
शिवसंस्कारसंयुक्तं
नित्यज्ञानं प्रजायते ॥ ३३ ॥

---

1 जायते ह्याशु–ग
अत्र जनयतीत्यर्थे जायते इति छन्दोऽनुरोधेन ।

2 अत्र जनयतीत्यस्य स्थाने
जायते इति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 षष्ट्यां भवमयं–ग

4 सार्वदा–ग

भौमवारः पापरतिं
प्राणिहिंसापरः सदा ।
जायते[1] सौम्यवारोऽपि
सौम्यज्ञानं प्रजायते ॥ ३४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
भुक्तिमुक्तिप्रदायिकाम्[2] ।
करोति गुरुवारोऽपि
भृगुवारोऽपि हे प्रिये! ॥ ३५ ॥

मलिनं मन्दवारोऽपि
आणवं तत्त्ववर्जितम् ।
तज्ज्ञानं दापयत्याशु
वाराणां वेष्टितं फलम् ॥ ३६ ॥

शृणु गौरि ! मम प्रीत्या
श्रद्धाभक्तिसमन्विते ।
प्रतिपत्पापसंयुक्तं
ज्ञानं दापयति प्रिये ! ॥ ३७ ॥

द्वितीया द्वैतसन्धान
आत्मज्ञानं निरञ्जनम् ।
प्रदापयति मे कान्ते !
तृतीया तृप्तिदायकम् ॥ ३८ ॥

---

1 अत्राप्येवंछन्दोऽनुरोधेन । जनयतीति यावत् ।
2 प्रदायकम्-ख

अन्नकोशं तत्त्ववर्जं
विकासयति सर्वदा[1] ।
चतुर्थी प्राणकोशस्थं
वायुमुद्धारयेत् सदा ॥३९॥

पञ्चमी पञ्चकोशस्थं
पञ्चतत्त्वसमन्वितम् ।
अहङ्कारं करोत्याशु
षष्ठी षट्चक्रभेदनम् ॥ ४० ॥

आत्मज्ञान तत्त्ववेद्यं
जायते[2] वसुधातले ।
सप्तमी तप्तसंस्कारं[3]
वैष्णवद्रवसाधनम् ॥ ४१ ॥

ज्ञानं सदा करोत्याशु
अष्टमीमदवेष्टितम् ।
प्राणापानसमायुक्तं
मनोज्ञानं प्रजायते[3] ॥४२॥

---

[1] सार्वदा—ग

[2] जनयतीत्यस्य स्थाने जायते इति छन्दोनुरोधेन ।

[3] संस्कारा—ग

[3] जनयतीति यावत् ॥

नवमीप्राणलिङ्गस्य
पटल गोलकान्वितम् ।
जायते[1] जगतां मध्ये
दशमी तत्त्वसाधनम् ॥ ४३ ॥

करोत्येकादशी कान्ते !
एकज्ञानं निरन्तरम् ।
प्रदापयति हे गौरि !
द्वादशी ध्वान्तसाधनम् ॥ ४४ ॥

तिमिरं जायते[2]ऽप्याशु
तथा लोके वरानने !
त्रयोदशी महामायां
निद्रां दापयति प्रिये ॥ ४५ ॥

चतुर्दशी भक्तिमूलं
शिवज्ञानं प्रजायते[3] ।
राकामन्त्राक्षरन्यास
राजानं रामणीयकम्[4] ॥ ४६ ॥

वेदमूर्ध्निगतं मन्त्रं
विकासयति हे प्रिये !

---

1 जनयतीति यावत् ॥
2 जनयतीति यावत् ।
3 जनयतीति यावत् ।
4 रमणीयकम्–क. ख

सिनीवली महामायां
बोधयेदाशु मे प्रिये ! ॥ ४७ ॥

कुहूः तुच्छित[2] संयुक्ता[3]
बुद्धिं दापयति[4] प्रिये ।
तपः क्षयकरंज्ञानं
अमावास्यां प्रजायते ॥ ४८ ॥

विष्कम्भं[म्भा] वीर्यवृद्धित्वं [श्च]
जायते वसुधातले ।
प्रीतिर्माहेश्वराणां च
प्रीतिं दापयति प्रिये ॥ ४९ ॥

आयुष्मान् मानशतकं[5]
आयुर्दापयति प्रिये !
सौभाग्य शो[ग्याच्छो]भनं चाशु
ब्रह्मज्ञानं प्रजायते ॥ ५० ॥

अतिगण्डं[ण्डो] महाव्याधिं
प्रदापयति सर्वदा[6] ।

---

1 मे सति–क. ख.ग(पा)
2 कुच्छित–क
कुजेन–ख
कुच्छेन–ग
3 संयुक्तां–ग
4 दापयते–क
5 शततां–क
6 सार्दा - ग

सुकर्मज्ञा[मा]नवैराग्यं
नवभक्तिसमन्वितम् ॥ ५१ ॥

प्रदापयति हे गौरि !
धृति[ते]र्धृतिकरं शुभम्
जायते जगतां मध्ये
शूलो[ला]रोगं[1] [गः] प्रजायते ॥ ५२ ॥

गण्डो[ण्डात्] गण्डान्तरज्ञानं
तत्त्वनाशं[शः] प्रजायते ।
वृद्धिवीर्यं प्रकुरुते[2]
ध्रुवं[वात्] सत्यं प्रतिष्ठितम् ॥ ५३ ॥

प्रदापयति हे गौरि !
व्याघातो[3] व्याधिसम्भवम् ।
हननं जायते लोके
हर्षणं[णात्]आत्मसंभवम् ॥ ५४ ॥

मनोज्ञानं नित्यतृप्ति
प्रदापयति सन्ततम् ।
वज्रं[ः] मनोभवं तत्त्वं
दीक्षाकाले प्रजायते ॥ ५५ ॥

---

1 रागं–क

2 वीर्य च कुरुते–क
वीर्यं प्रजायन्ते–ग

3 व्याहतः–क
व्यागतः–ख

सिद्धि[द्धेः] तत्त्वयुतं सर्वं[1]
जीवब्रह्मात्मशोधनम् ।
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठानं
प्राणबीजसमन्वितम् ॥ ५६ ॥

भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
तत्त्वं मोक्ष[3]प्रदायकम् ।
जायते जगतां मध्ये
जन्मसम्पत्तिकारणम् ॥ ५७ ॥

व्यतिपातो व्याधिरूपं
काय[4]कल्मषदायकम् ।
वीर्यनाशं च यत्तत्त्वं
प्रदापयति सन्ततम् ॥ ५८ ॥

वरीयानात्मसन्धानं
यत्तत्त्वं तत्त्वनायकम् ।
प्रदापयति मे कान्ते !
प्राणलिङ्गसमन्वितम् ॥ ५९ ॥

परिघः[घात्] पावनज्ञानं[5]
तत्त्वं माहेश्वरान्वितम् ।

---

1 सिद्धिः सर्वं तत्त्वयुतम्-क
2 भूरुद्रजङ्गमानां च-ग
3 तत्त्वमोक्ष-क
4 कामकल्मष-क. ग
5 पवनज्ञानम्--ग

वीरमाहेश्वराणां च
  वीर्यवृद्धिः प्रजायते ॥ ६० ॥

शिवः शिववतां बुद्धिं
  मायातीतां मनोरमाम् ।
प्रचक्रे तत्त्वनिलयं
  सिद्धो मायाविवर्जिताम्[1] ॥ ६१ ॥

यत्तत्त्वं प्रददात्यार्ये[3]
  साध्यं कालसमन्वितम् ।
कल्पान्तरमनोज्ञानं
  कल्पकोटिसमन्वितम् ॥ ६२ ॥

रुद्राणि[3] जगतां मध्ये
  सुकर्म मम साधनम् ।
आत्मतत्त्वं लिङ्गयुतं
  ददाति[4] प्रमथान्वितम् ॥ ६३ ॥

तद्योगं योगविदुषां
  शुभज्ञानं वरानने !
शुकः[क्रः] शुचिमतां[5] बुद्धिं
  तत्त्वसम्पत्तिवेष्टिताम् ॥ ६४ ॥

---

1 सिद्धमायाविवर्ज़ितः–ग

2 यत्तत्वसाध्यदात्सर्वे–ग.क

2 दीयन्ते–ग

5 दीयते–ग

4 सुखः सुखितां–

तेषां माहेश्वराणां[1] च
दधते[2] [दधाते]दिव्यदेहिनाम् ।
ब्रह्म ब्रह्मवतां बुद्धिं
ब्रह्मतत्त्वार्थसाधनम्[3] ॥ ६५ ॥

वीर्यवृद्धिं विदां लोके
वीरमाहेश्वरे परे[4] ।
महामायां मनोरूपाम्
मदनास्त्रसमन्विताम् ॥ ६६ ॥

कोपभीतिसमायुक्तां
क्रोधडम्भसमन्विताम् ।
पुत्रदारद्रव्ययुतां
ददाति हि[5] मतिं [मम[ प्रिये ॥ ६७ ॥

ऐन्द्रं[न्द्रात्[6]]मायाविनिर्मुक्तं
तत्तत्त्वं तत्त्वपारगम् ।
प्राणापामसयायुक्तं
जीवज्ञानं प्रजायते ॥ ६८ ॥

---

1 महेश्वराणां—क
2 दीयते—ग.
3 साधनाम्—ग
4 माहेश्वरै परैः —ग
5 दधाति हि—ग (पा)
दीयते तां—ग
6 ऐन्द्रो

वैधृतिर्धृतिनाशं च
    यत्कर्म[1] फलदायकम् ।
तत्तत्त्वं तत्त्वविदुषां
    जङ्गमानां मनोहरम् ॥ ६९ ॥

प्रदापयति हे गौरि !
    योगानां योगसाधकम् ।
फलं त्वं शृणु मत्प्रीत्या
    मम सायुज्यदायकम् ॥ ७० ॥

मेषलग्ने महाव्याधिः
    जायते योगिनां प्रिये !
वृषभे योगिनां योगः
    भवेत् तत्त्वार्थसाधनम् ॥ ७१ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
    विलासं लयवर्जितम् ।
मिथुने तत्त्वसम्पत्तिः
    सर्वशीलसमन्विता ॥ ७२ ॥

कलातीता[2] कामहता
    मायातीता मनोरमा ।

---

1 सत्कर्म–च
2 कलात्मिका–क. ख. ग
काकात्मिका–च

या सा मनोहरा विद्या
जायते प्राणलिङ्गिनाम् ॥ ७३ ॥

कर्कटके कान्तियुता
आत्मपुष्टिप्रसाधिता[1] ।
या क्रियासारसम्पत्तिः
योगिनां विदुषां प्रिये ॥ ७४ ॥

भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
लोके तत्त्वबलान्विता ।
जायते इति यत् तत्त्वं
ध्रुवं भवति शाम्भवि[3] ! ॥ ७५ ॥

सिंहलग्ने स्वरमयं
त्विला[4] पिङ्गल[5]वेष्टितम् ।
पञ्चाक्षरसमायुक्तं
पञ्चब्रह्मसमन्वितम् ॥ ७६ ॥

यत्तत्त्वं वेदवेदाङ्ग
पारगाणां महीतले ।
सत्यानन्दमनोबुद्धि
प्राणलिङ्गधृतां परम् ॥ ७७ ॥

---

1 प्रसादितः–क
2 भूरुद्रजङ्गमानां च–ग
3 भवति हे प्रिये –ग
4 इला–ग
5 अत्र 'पिङ्गला' शब्दस्थाने पिङ्गल इति ह्रस्वप्रयोगः छन्दोऽनुरोधेन ।

जायते सिंहलग्नेऽपि
तत्त्वशोधनदीपितम् ।
विज्ञानं विमलं शान्तं
ब्रह्मविद्यासमन्वितम्[1] ॥ ७८ ॥

तन्मन्त्रं मन्त्रविदुषां
जायते वसुधातले ।
कन्यायां कामसम्पत्तिः
मदनास्त्रसमन्विता[2] ॥ ७९ ॥

या मतिस्तत्त्वविदुषां
जङ्गमानां दिनेदिने ।
सा भवत्या[3]शु मे कान्ते
शृणु कारुण्यभावतः ॥ ८० ॥

तुलायां तु[4] महादीप्ता[5]
वीर्यवृद्धिमनोरमा[6] ।
पूर्णा परात्परा विद्या
वीरमाहेश्वरान्विता[7] । ॥ ८१ ॥

---

1 समन्वितम्–क.
2 या सा भवति–ग
3 पद्यमिदं क ख पुरतकयोः 'या मतिः' इतिपद्यानन्तरं दृश्यते ॥
4 च–च
5 ततो भूज्जायते दीप्तां–ग
6 बुद्धिमनोहराम्–ग
7 पूर्णां परात्परां· विद्यां वीरमहेश्वरान्विताम्–ग. च

षट्शाम्भवमयी नित्या
षडध्व[1]सहिता शिवा[2] ।
वीरमाहेश्वराणां तु
सम्भवेत् सर्वदा प्रिये[3] ॥ ८२ ॥

वृश्चिके [कः] तत्त्वकोशस्थं
आधारनिलयं विभुम्[4] ।
प्रदापयति हे गौरि
प्राणलिङ्गसमुद्भवम् ॥ ८३ ॥

यत्तत्त्वं यततां[5] लोके
इत्याहुर्मुनिपुङ्गवाः ।
धनुर्लग्ने महाव्याधिः
जायते प्राणलिङ्गिनाम् ॥ ८४ ॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
धनुर्लग्नं परित्यजेत् ।
मकरे मन्त्रविदुषां
या दीक्षा चित्तवेष्टिता[6] ॥ ८५ ॥

---

1 षडध्वा–क. ख. ग.
2 षट्शाम्भवमयां दीप्त षडध्वसहितां शिवाम्–ग च
3 वीरमाहेश्वराः सर्वे ग्राहयन्ति सदा प्रिये–ग
4 प्रभुम्–च
5 यतिनां–ग
6 या दीक्षान्वितवेष्टिता–च

आगमाचारसंयुक्ता
भवति ब्रह्मवादिनाम् ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[1]
भुवनेषु कदाचन ॥ ८६ ॥

घटे दीक्षान्विते लग्ने
वीरमाहेश्वराः शुभाः ।
दीक्षां दधति मे कान्ते !
इत्याहुः प्रमथाधिपाः ॥ ८७ ॥

मीनलग्ने तत्त्वनाशं
हरते या महेश्वरी[2] ।
सा दीक्षा यतिराजानां
जङ्गमानां जगत्प्रिये ॥ ८८ ॥

बवे[3] बान्धवताबुद्धिम्
दीक्षां दधति योगिनः ।
बालवा [वं] बलभद्रस्थ
क्रियाज्ञानं प्रदापयत् ॥ ८९ ॥

---

1 भूरुद्रजङ्गमानां च-ग

2 महेश्वराः-क, ख
महेश्वरः-च

3 भवे-क, ख, ग

यतीनां तत्त्वविदुषां[1]
वेदावास[2] शरीरिणाम् ।
षट्स्थलब्रह्मिणां[3] कान्ते !
कौलवं कामनाशनम् ॥ ९० ॥

इत्याहुः दीक्ष[4]सम्पन्नाः
प्रमथाः ब्रह्मसेविताः ।
किंस्तुघ्नं भक्तिवैराग्यं
सम्पत्तिं च प्रदास्यति ॥ ९१ ॥

भद्रविष्टेर्भद्र[6]गुणं
तथा तैतुलमूहते ।[7]
गरजा [जं] वणजा [णिजं] लोके
वणिक्कर्म प्रदापयेत् ॥ ९२ ॥

शकुनिः शाम्भवं तत्त्वं
दास्यते[8] योगवादिनाम् ।

---

1 यतिराज्ञां तत्त्वविदां–ग
2 वेदवास–क. ख
4 ब्रह्मणां–ग
5 अत्र दीक्षा इत्यस्य स्थाने दीक्ष इति ह्रस्वपाठः छन्दोऽनुरोधेन ।
प्रदीयते-ग
6 विष्टिर्भद्र–च
7 तैतुलदीयते–ग
तैतिलईयते–च
8 दीयते–ग

चतुष्पाद्धर्ममोक्षत्वं
वहतीति महेश्वराः ॥ ९३ ॥

आहुर्मम समीपे ते
मन्त्रगोप्याः [1]मनोगमाः[2] ।
नागवं [नागोवै] नरराजानां
प्रकृतिज्ञानसाधनम् ॥ ९४ ॥

मिथ्यातत्त्वं मोहयुत
धर्मज्ञानविवर्जितम् ।
अविद्याशबलं स्वप्ने
वहतीति वरानने ॥ ९५ ॥

एकादशयतीनां च
करणान्यानि के जनाः ।
प्रशोधयन्ति सततं
करणज्ञानसाधनाः ॥ ९६ ॥

भवानि ![3]कृतपुण्येन
प्राप्नुवन्ति ममात्मनि[4] ।
सायुज्यं साम्यरहितं
चिदानन्दैकसाधनम् ॥ ९७ ॥

---

1 मन्त्रगोप्ताः—ग
2 मनोरमाः—ग
3 भवन्ति- ग
4 महात्मनि—ख

गुरुसौम्यौ[1] सुरश्रेष्ठा-
वस्तं यातौ सदा[2] [यदा] प्रिये !
तत्कालं मूढमित्यहुः
प्रमथाः तत्त्वपारगाः ॥ ९८ ॥

मूढकालं परित्यज्य
दीक्षाकालं विचारयेत् ।
गुरावस्तं गते मासः[3]
मलमित्यभिधीयते ॥ ९९ ॥

सौम्ये चास्तं गते गौरि
अस्तकालमिति [ल इति] स्मृतः ।
अस्तकालं परित्यज्य
दीक्षाकालं विशोधयेत् ॥ १०० ॥

भूपुत्रे नाशनं प्राप्ते
तदस्तमिति विश्रुताः ।
अशेषप्रमथाः सर्वे
ब्रह्मानन्दैकसाधनाः ॥ १०१ ॥

शनैश्चरे सूर्ययुते
अस्तं याते मम प्रिये ।

---

1 गुरुसौम्यैः–ग

2 यथा–क. ख

3 मासे–ग

तत्कालं पापसंयुक्तं
    नृणां कर्मविनाशनम् ॥ १०२ ॥

तत्कालं दीक्षनाशं[1] च
    इत्याहुस्तत्त्वपारगाः ।
सूर्ये मेषं गते गौरि
    दीक्षाकालं महोदयम् । ॥ १०३ ॥

अत्स्युन्नततरं नृणां
    तत्तत्त्वार्थप्रदीपनम् ।
इति मत्वा गुरुश्रेष्ठः
    दीक्षां तत्त्वार्थसाधनाम्[2] ॥ १०४ ॥

यः करोति गुरुश्रेष्ठः
    ध्रुवं तत्त्वबुधां[3] बुधः ।
दिवाकरे मीनयुते
    चैत्रं[4] याति महेश्वरि ![5] ॥ १०५ ॥

देशिकेन्द्रोऽसुर [ऽमर] श्रेष्ठः[6]
    ज्योतिश्शास्त्रविशारदः ।

---

1 अत्र दीक्षनाशमिति छन्दोऽनुरोधेन, दीक्षानाशमिति यावत् ।

2 साधनम्–क॰ ख

3 तत्त्वबुधो–ग

4 ज़ैत्रं–ग    यङ्कता–च

5 महेश्वरः–ग

6 महाश्रेष्ठः–क

तं मासं[1] मलमित्याशु
त्यजेत् तत्त्वार्थपारगः ॥ १०६ ॥

प्रभाकरे घटयुते
स कालो वीर्यदायकः ।
वीरमाहेश्वराणां च
प्रसादब्रह्मिणां[2] प्रिये ! ॥ १०७ ॥

सूर्ये मकरराशिं च
ग्रहराज्ञि गते सति ।
स कालोऽमलमन्त्रार्थ-
विमलज्ञाननाशनः[3] ॥ १०८ ॥

भवति प्राणलिङ्गी सः[4]
रेणुको मुनिपुङ्गवः ।
इत्याह भगवान् गौरि !
सर्वशास्त्रार्थकोविदः ॥ १०९ ॥

सूर्ये चापं गते चन्द्रे
मेषलग्नं गते सति ।
तल्लग्नं मलमित्याहुः
आगमार्थप्रशोधनाः ॥ ११० ॥

---

1 तन्मांसं– ग
2 प्रसादब्रह्मणां–ग
3 नाशकः–ख
4 प्राणलिङ्गेषु–ग, च

वीरमाहेश्वराः सर्वे
  रेणुकाद्याः सनातनाः ।
वृश्चिकं ग्रहराजे मे[1]
  प्रिये प्रीतिप्रदायिके[2] ! ॥ १११ ॥

गते नृणां महाकर्म
  दीक्षां मन्त्रार्थशोधनाम्[3] ।
यः करोति ध्रुवं गौरि !
  प्रेतराजबिलं प्रति ॥ ११२ ॥

शिष्यः सह व्रजत्याशु
  इदं सत्यं वरानने ।
तुलालग्नं गते सूर्ये
  प्रसादप्राणलिङ्गिनाम् ॥ ११३ ॥

यः करोति महादीक्षां
  यमलोकं[4] व्रजेत् ध्रुवम् ।
कन्यां सूर्ये गते देवि !
  देवदेवप्रचोदितः ॥ ११४ ॥

सकालः कालराजोऽसौ
  भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ।

---

1 ग्रहराजेषु—च
2 प्रिये प्रियाप्रदायते—च
3 दीक्षामन्त्रार्थशोधनम्—च
4 यमलोके—च

भवेत्तत्त्वार्थसम्पन्नाः
तत्त्वसाधनमूर्तयः ॥ ११५ ॥

इत्याहुः कामिनी[1] गौरि !
पितृपक्षं परित्यजेत् ।
पितृपक्षं परित्यज्य
दीक्षां कुर्वन्ति योगिनः ॥ ११६ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
प्रसादप्राणलिङ्गिनः ।
शिष्याणां भक्तियुक्तानां
तथा स्त्रीणां वरानने ॥ ११७ ॥

ग्रहराशि [जे] ग्रहश्रेष्ठे
सिंहलग्नं गते सति ।
सकलः शम्भुसंयुक्तः
शम्भुदीक्षासमन्वितः ॥ ११८ ॥

नृणां तत्त्वविदां गौरि !
भुक्तिमुक्तिप्रदायकः[2] ।

---

1 अत्र कामिनी इति छन्दोनुरोधेन ।
कामिनि—च

2 इदमर्धं—ग. पुस्तके न दृश्यते

भवति ब्रह्मतत्त्वार्थ-
शोधनाः तत्त्वपारगाः ।
अशेषप्रमथाः सर्वे
प्राणलिङ्गप्रसादिनः ॥ ११९ ॥

इत्याहुः सततं लोके
कृष्णपक्षं परित्यजेत् ।
कृष्णपक्षं परित्यज्य
शुक्लपक्षं विशोधयेत् ॥१२० ॥

कुलीरं तु गते गौरि[1] !
सुरराज्ञि ग्रहाधिपे ।
मासं[2] मलमित्याहुः
मलत्रयविवर्जिताः ॥ १२१ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
ब्रह्मानन्दैकसाधनाः ।
युग्मं[3] सूर्य गते देवि !
तेषां लग्नं विनाशनम् ॥ १२२॥

भक्तानां तत्त्वसम्पन्नाः
रेणुकाद्याः सनातनाः ।

---

1 याति हे गौरि ! –ग

2 तन्मासं–ग.

3 युग्मे–ग

इत्याहुः सर्वदा[1] लोके[2]
प्रसादप्राणसाधनाः[3] ॥ १२३ ॥

वृषभं भूसुते याते[4]
युग्मं सूर्ये गते सति ।
कुलीरं भार्गवे याते[5]
तन्मध्यं ग्रहकर्तरिः ॥ १२४ ॥

इत्याहुः तत्त्वनिपुणाः
हेरम्बप्रमुखादयः[6] ।
वीरमाहेश्वराः सर्वे
दीक्षातत्त्वार्थसाधकाः ॥ १२५ ॥

तां कर्तरिं परित्यज्य
दीक्षांकुर्वन्ति योगिनः ।
वृषभं भूसुते याते
कुलीरं ग्रहवर्जितम् ॥ १२६ ॥

वागचस्पतेते गौरि
तन्मध्यं ग्रहमण्डलम् ।

---

1 सार्वदा–ग
2 गौरि–ग लोके–च
3 प्रसादस्तत्त्वसाधनाः–ग
4 याति–ग
5 याति–ग
6 हेरम्बषण्मुखादयः–क .

इत्याहुः तत्त्वनिपुणाः
रेणुकाद्याः सनातनाः ॥ १२७ ॥

तन्मण्डलं महाश्रेष्ठं
इति ज्ञात्वा बुधोत्तमाः ।
देशिकेन्द्राः तत्त्वनिधिं[1]
शिष्यं[2] प्रति वरानने ॥ १२८ ॥

ये कारयन्ति तां दीक्षां
ते कुर्वन्ति सुरार्चिताः[3] ।
मेषं शुक्रे गते[4] गौरि
युग्मं भूमिसुते गते ॥ १२९ ॥

तयोर्मध्यं विपत्कारि
यमदंष्ट्रमिति प्रिये !
वदन्ति शाम्भवाः सर्वे
विष्णुब्रह्मादि[5]सेविताः ॥ १३० ॥

तद्दंष्ट्रं[6] कर्मनाशं च
ज्ञात्वा दीक्षां गुरूत्तमः ।

---

1 तत्त्वनिधीन्—च
2 शिष्यान्—च
3 नरार्जिताः—ख
4 शुक्रयुते—क
5 ब्रह्मेन्द्र—क
6 तां दंष्ट्रां—च

यः करोति ध्रुवं गौरि
स सायुज्यं लभेन्मम[1] ॥ १३१ ॥

झषराशिं[2] गुरौ याते
कन्यायां भार्गवे स्थिते[3] ।
तयोर्मध्यं कमयोग
इत्याहुः प्रमथोत्तमाः ॥ १३२ ॥

मत्वा तत्कर्मयोगं च
शिष्यान् प्रति वरानने ।
ये कृपातत्त्व[4]राजानं
मन्त्रबीजसमन्वितम् ॥ १३३ ॥

पञ्चवर्णात्मकं मन्त्रं
पञ्चब्रह्मसमन्वितम् ।
वेदागमसमायुक्तं
तन्मन्त्रं मोक्षदायकम् ॥ १३४ ॥

प्राप्नुवन्ति गुरोर्गौरि !
शान्तास्तत्त्वविदो बुधात् ।
त एते मम सायुज्यं
भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ १३५ ॥

---

1 सायुज्यं लभ्यते प्रिये–क. ख
2 वृषराशिं–ग. च
3 भार्गववेष्टिते–च
4 पात्तत्त्व–क. च

निरीहं शाश्वतं ब्रह्म[1]
ज्ञानसाधनकारणम् ।
प्राप्नुवन्ति ध्रुवं गौरि !
रुद्रकन्यासमन्विताः[2] ॥ १३६ ॥

कर्कटं भास्करे याते
मीनं चन्द्रे गते सति ।
घटं भौमे गते तेषां
तन्मध्यं स्फोटकं भवेत् ॥ १३७ ॥

स्फोटकं[3] द्विविधं ज्ञेयं
चन्द्रस्फोटं च पार्वति !
कुजस्फोटं सूर्यमध्यं
इत्याहुः तत्त्वपारगाः ॥ १३८ ॥

कुजस्फोटं परित्यज्य
दीक्षां कुर्वन्ति शाम्भवाः ।
चन्द्रस्फोटं परित्यज्य
मृत्युदं तत्त्वनाशनम् ॥ १३९ ॥

नृणां विपत्करं गौरि !
महाभीतिप्रदायकम् ।

1 शाश्वतब्रह्म–ग
2 समन्वितम्–च
3 स्फोटं तु–ग. च

ज्ञाननाशं क्रोधजनं[1]
कामशास्त्रप्रदीपकम्[2] ॥ १४० ॥

यत्तेषां[3] त्यजन्त्याशु
भक्तानां[4] योगिनस्तथा ।
स्फोटमध्यं विचार्यैते[5]
दीक्षां कुर्वन्ति शाम्भवाः ॥ १४१ ॥

ते यान्ति मम सायुज्यं
ध्रुवं ब्रह्मेन्द्रसेविताः ।
गुरौ मेषं गते भौमेऽ
वग्रहो ग्रहवक्रगे (युग्मके)[6] ॥ १४२ ॥

पापग्रहान्विते[7] युग्मं
याते[8] ब्रह्मेन्द्रसेविते ।
तयोर्मध्यं पापयुतं
पापयोगमिति[9] स्मृताः[10] ॥ १४३ ॥

---

1 क्रोधजननं—ग
2 प्रदीपितम्—ग (पा)
3 एतत्तेषां—च
4 योगिनो—
5 विचार्यन्ते—च
ग्रहयुद्धके—ग. च
7 प्रापग्रहेऽन्विते—च
यातिं—ग. च
9 हनयोंगमिति—क. च
1 स्मृतः—च

वीरमाहेश्वराः सर्वे
वीरव्रतपरायणाः ।
पापयोगं[1] परित्यज्य
कारयेत् तत्त्वपारगः ॥ १४४ ॥

भक्तानां भक्तियुक्तानां
दीक्षां देहि शुचिप्रदाम् ।
स याति मम सायुज्यं
इदं सत्यं वरानने ॥ १४५ ॥

चापलग्नं गते भौमे
घटं याति[2] दिनाधिपे ।
तन्मध्यं वज्रयोगं च
सर्वशास्त्रार्थकोविदाः ॥ १४६ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
प्रसादब्रह्मसाधनाः ।
आहुः सर्वगुणोपेताः
हेरम्ब[3]स्कन्दपूजिताः ॥ १४७ ॥

भूरुद्राः जङ्गमाः[4] शान्ताः
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठिताः ।

---

1 हनयोगं–क. ख
2 याते–ग
3 गुणोपेतहेरम्ब–क गणोपेताः हेरम्ब–च
4 भूरुद्रजङ्गमाः–ग

पुराणमोहतत्त्वार्थ-
त्याजमानाः[1] जितेन्द्रियाः ॥ १४८ ॥

वज्रयोगं[2] परित्यज्य
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ।
तां दीक्षां कारयन्त्याशु
देशिकेन्द्राः विवेकिनः[3] ॥ १४९ ॥

भक्तानां तत्त्वविदुषां
ब्रह्मानन्दैकवेष्टिताम् ।
मीनलग्नं गते सौम्ये
मेषराशिं गते गुरौ ॥ १५० ॥

शुभग्रहान्विते गौरि !
दृष्टियुक्ते ग्रहाधिपे ।
ये कुर्वन्ति सुरश्रेष्ठान्[4]
शिष्यान् प्रति वरानने ॥ १५१ ॥

वीरमाहेश्वरीं दीक्षां
पवित्रां पापनाशिनीम्[5] ।

---

1 त्यजमान—ग

2 वज्र योगं—ग

3 कारयेदाशु देशिकेन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ च.

4 सुरश्रेष्ठाः—क

5 पापनाशनाम्—क, ख

तस्मिन् काले बुधश्रेष्ठाः
गुरवस्तत्त्वसाधनाम्[1] ॥ १५२ ॥

शैवपञ्चाक्षरीं गौरि !
मन्त्राणां मातरं शिवाम् ।
उपदिश्यन्ति[2] ये प्रीत्या
ते यान्ति मम सन्निधिम् ॥ १५३ ॥

कुलीरं सूर्यपुत्रे च
गते तस्मिन् दिनाधिपे ।
[3]तल्लग्नं दीक्षरहितं
इत्याहुः त्रिशिरादयः ॥ १५४ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
शीलव्रतसमन्विताः ।
तुलालग्नं गते सौम्ये
भार्गवेण समन्वितम् ॥ १५५ ॥

पूर्णचन्द्रसमायुक्तं
पापग्रहविवर्जितम् ।
शुभहोरात्मकं शुद्धं
विषनाडीविवर्जितम् ॥ १५६ ॥

---

1 साधनम्–क

2 उपदिशन्तीत्यस्य स्थाने उपदिश्यन्तीति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 तल्लग्नमित्यारभ्य शीलसमन्विताः इत्यन्तो भागः –क ·ख, पुस्तकयोः न दृश्यते ॥

तल्लग्नं दीक्षविदुषोः
शिष्यान् प्रति वरानने
गुरवस्तत्र योगीन्द्राः
तृणीकृतपुरन्दराः ॥ १५७ ॥

ये कुर्वन्ति सदा प्रीत्या
वैराग्यज्ञानसाधिकाम् ।
तां दीक्षां रचयन्त्याशु
ते भक्ताः मम मन्दिरम् ॥ १५८ ॥

प्रवेशयन्ति सततं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठिताः ।
रुद्रकन्यासमायुक्ताः
विष्णुब्रह्मेन्द्रसेविताः ॥ १५९ ॥

वीरभद्रविरूपाक्ष
हेरम्बस्कन्दवेष्टिताः[1] ।
विधुन्तुदे मीनलग्नं
गते सति दिवाकरे ॥ १६० ॥

कन्यालग्नं परं केतौ
याते कालबुधोत्तमाः ।
माहेश्वरीं महादीक्षां
हरन्तीत्याहुरागमाः[2] ॥ १६१ ॥

---

1 सेविताः–ग
2 त्याहुयोगिनः–ग

तँ कालं तत्त्वनिपुणाः
परित्यज्य शुभान्वितम् ।
तं कालं शोधयन्त्याशु
कालवादशिरःकृताः[1] ॥ १६२ ॥

केतौ मीनं गते चन्द्रे
कन्याराशिं बुधान्विते ।
सैंहिकेयें गते गौरि !
दीक्षां तत्त्वार्थसाधनाम् ॥ १६३ ॥

न कुर्वन्तीति भूरुद्राः
रेणुकाद्याः सनातनाः ।
इति ज्ञात्वा महादीक्षां
कारयेद्यममन्दिरम्[2] ॥ १६४ ॥

प्रवेशयति योऽसौ मे
कान्ते ! सत्यं वरानने !
भार्गवे स्थिरलग्नानि
गते सति महात्मनः ॥ १६५ ॥

शिष्यान् प्रति सुरश्रेष्ठाः
दीक्षां मन्त्रार्थसाधनाम्[1] ।

---

1 तिरस्कृताः–ग. च
2 कारये मम मन्दिरम्–क
3 साधनाः–ग

ये कुर्वन्ति मम प्रीत्या
ते यान्ति मम मन्दिरम् ॥ १६६ ॥

चरलग्नानि यान्याशु
पापग्रहसमन्विते ।
गुरौ लग्नानि तान्येव
गते सति महात्मनः ॥ १६७ ॥

वीरमाहेश्वराः शिष्यान्
प्रति तत्त्वप्रदायकाः ।
तस्मिन् काले महादीक्षां
शैवसिद्धान्तसाध[धि]काम् ॥ १६८ ॥

ज्ञानदृष्टियुतां यां तु
कारयन्ति मम प्रिये ।
ते यान्ति मम सायुज्यं
सुरगन्धर्वसेविताः ॥ १६९ ॥

संक्रान्तिहीनं यन्मासं[1]
मलमित्याहुरागमाः ।
मलमासं परित्यज्य
दीक्षां कुर्वन्ति शाम्भवाः ॥ १७० ॥

---

[1] मासं च–क

ज्येष्ठाश्विश्रावणाषाढे
वैशाखे प्रोष्ठपादिषु[1] ।
दारभोगशिलाभोग
दारुभोगशिलान्विताम्[2] ॥ १७१ ॥

तं मासं मलमित्याहुः
अब्दसिद्धान्त[3]पारगाः ।
वीरमाहेश्वराः सर्वे
कालत्वादतिरस्कृताः ॥ १७२ ॥

संक्रान्तिद्वयसंयुक्तं
क्षयमासमिति प्रिये ।
कार्तिकादित्रयं प्राप्तं
इत्याहुस्तत्त्वपारगाः ॥ १७३ ॥

तदब्दमध्ये हे गौरि !
मलमासद्वयं परम् ।
क्षयाब्दमिति सर्वज्ञाः
रेणुकाद्याः सनातनाः ॥ १७४ ॥

क्षयमासं क्षयाब्दं च
त्याज्यमाहुर्जितेन्द्रियाः[4] ।

---

1 अत्र प्रोष्ठपदादिषु इत्यस्य स्थाने प्रोष्ठपादिषु इति छन्दोऽनुरोधेन ।
2 शिलान्वितमिति शीलान्वितमित्यस्य स्थाने छन्दोऽनुरोधेनोक्तम् ।
3 अष्टसिद्धान्त-ग (पा)
4 त्याज्यमासं जितेन्द्रियाः —क; ग (पा)
त्याज्यमासं परित्यज्य—ग

देशिकेन्द्रः तत्त्वनिधिः
कारयेत्तां परात्पराम् ॥ १७५ ॥

दीक्षां माहेश्वरीं लोके
ज्ञानसाधनदायिकाम् ।
मुक्तिसोपान[1]खचितां
मुमुक्षुज्ञानसाधनीम् ॥ १७६ ॥

क्षयमासे महादीक्षां
यः करोति सदा प्रिये !
स याति दैन्धर्वं [2] घोरं
रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ १७७ ॥

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
क्षयमासं त्यजेत् सुधीः ।
तस्य मासस्य तत्पूर्वे[3]
तदग्रे मासपञ्चकम् ॥ १७८ ॥

परित्यज्य महादीक्षां
कारयेत् तत्त्वपारगः ।
तन्मासं योगिनां गौरि !
तपःक्षयकरं परम् ॥ १७९ ॥

---

1 मुक्तेः सोपान–ग.
2 दैन्दवं–च
3 मासस्यमात्सर्वे–ग
तस्य वै सप्तमासास्तु–च

नृणां विपत्करं लोके
भूपतीनां महद्भयम्[1] ।
द्विजानां पितृकर्माणि
हरतीति द्विजाधमाः ॥ १८० ॥

कश्यपात्रिभरद्वाजाः
ऋषयो[2] ब्रह्मवर्जिताः[3] ।
पुष्यमासे क्षयं याते
पुष्यर्क्षं त्य[त्या] जयेत्[4] सुधीः ॥ १८१ ॥

मार्गशीर्षे क्षयं लोके
दधते[5] तद्भयात्मकम्[6] ।
नक्षत्रं त्य[त्या]जयेत्याशु[7]
वेदवेदाङ्ग[8]पारगः ॥ १८२ ॥

देशिकेन्द्रो गुरुश्रेष्ठः
विद्वान् योगविदां वरः ।

---

1 महाद्भुतम्–क. ख
2 भरद्वाजऋषयो–ग
3 ब्रह्मवादिनः–च
4 त्यजेत्–ग (पा)
5 दधति–क
ददति–ग
6 तं क्षयात्मकम्–ग
7 त्यजन्त्याशु–च
8 वेदान्त–ग

कार्तिक्यां तु क्षयं लोके[1]
गतौ[2] सत्यां मम प्रिये ॥ १८३ ॥

अग्निऋक्षं परित्यज्य
विद्वान् धर्मार्थकोविदः ।
देशिकेन्द्रः तत्त्वनिधिः
दीक्षाकालं विशोधयेत् ॥ १८४ ॥

मलमासान्वितान्यग्नि-
ऋक्षाणि ऋषिपूजिते ।
परित्यज्य महादीक्षां
कारयेत् तत्त्वपारगः ॥ १८५ ॥

क्षयमासयुते लग्ने
त्यजेत् तत्त्वार्थशोधकः ।
अन्यानि शुभलग्नानि
शुभदृष्टियुतानि च ॥ १८६ ॥

पञ्चष्वेकयुतान्याशु
[पञ्चांशकयुतान्याशु]
निष्पञ्चकयुतान्युमे[3] ।

---

1 कार्तिक्यां दीक्षयन् लोके–ग

2 गतायां इत्यस्य स्थाने गतौ इति छन्दोऽनुरोधेन ।

3 निष्प्रपञ्चमयानि मे–क
पञ्चाष्टकयुतान्याशुनियुष् प्रपञ्चमयान्युमे–च

भक्त्या दीक्षां गुरुश्रेष्ठः
जीवप्राणात्मसाधनाम्[1] ॥ १८७ ॥

अविद्यारहितां कान्ते !
कारयेन्मन्त्रतन्त्रतः[2] ।
स्फुटद्विभिवपातं तु[3]
परित्यज्य शुभान्वितम् ॥ १८८ ॥

तद्दिनं योगसल्लापं
वीरमाहेश्वरप्रियम् ।
परित्यज्य गुरुर्गौरि !
दीक्षां प्राकृतवर्तिनीम्[4] ॥ १८९ ॥

शिवसूत्रान्वितां[5] कल्पां
वीरागमसमन्वितान् ।
यः करोति ध्रुवं गौरि !
मम सायुज्यमाप्नुयात् ॥ १९० ॥

यस्मिन् दिने यदापातं
तद्दिनं परिवर्जयेत् ।

---

1 शोधनाम्–क
2 न्मन्त्रयलितः–क
3 पाते ते–ग
पाते तु–ग(पा)
स्फुटं द्विपातेतं–च
4 वर्जिताम्–ग
5 सूत्रान्वित–च

तद्दिनं[1] दुर्दिनं[2] मन्ये
शिवसंस्कारवर्जितम् ॥ १९१ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
पूजाहीनं दिनं[3] प्रिये !
[4]तद्दिनं दुर्दिनं मन्ये
इदं सत्यं वरानने ! ॥ १९२ ॥

भूरुद्रजङ्गमानां च
पूजाहीननरं प्रिये !
तं नरं दुर्नरं मन्ये
इदं सत्यं वरानने ! ॥ १९३ ॥

भूरुद्राणां जङ्गमानां[5]
सेवाहीनं[6] जनाधिपम् ।
तं नृपं दुर्नृपं मन्ये
ध्रुवं कान्ते वरानने ! ॥ १९४ ॥

---

1 तं जनं–क. ख

2 दुर्जनं–क. ख

3 हीनदिनं–ग(पा)

4 तद्दिनमित्यारभ्य–नरं प्रिये इत्यन्तो भागः–क. ख पुस्तकयोः न दृश्यते ॥
त जनं दुर्जनं–च

5 भूरुद्रजङ्गमानां च–ग. ज

6 हीनं–ग–च

7 कान्ताजनोत्तमे–ख. ग

भूरुद्रजङ्गमानां च[1]
निन्दितं यं द्विजाधिपम्[2] ।
चतुर्वेदधरं लोके
दुर्जनं[3] दुष्टमानसम् ॥ १९५ ॥

अहं मन्ये ध्रुवं गौरि !
त्वमिदं शृणु सर्वदा[4] ।
वीरमाहेश्वराणां च
पूजितं पुल्कसं नरम् ॥ १९६ ॥

मन्ये द्विजाधिपं गौरि !
शृणु भक्तिसमन्वितम्[5] ।
स्फुटपातान्विते ऽशुद्धे
दिने दीक्षां प्रयच्छति ॥ १९७ ॥

तस्य कर्मविनिर्मुक्तं
निष्फलं जायते प्रिये !
पातहीने दिने शुद्धे
दीक्षाकर्मपवित्रदम्[6] ॥ १९८ ॥

---

1 वीरमाहेश्वराणां च–क. ख. च
2 यद्द्विजाधिपम्–क. निन्दति यो द्विजः–च
2 दुर्द्विजं–ग
4 इदं शृणु वरानने–ग
5 समन्विते–ग
7 पवित्रजम्–ग

मन्त्रसंस्कारभावेन
मन्त्रलक्षितयोगिनः[1] ।
पातमध्ये महाघोरं
पातान्ते पापवर्धनम्[2] ॥ १९९ ॥

पातादौ निर्दयत्वं च
जायते मम सन्निधौ[3] ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
पातं द्विभवसाधनम्[4] ॥ २०० ॥

कर्मत्यागं विषयुतं
मिथ्यामोहसमन्वितम् ।
परित्यज्य महाश्रेष्ठां
दीक्षां सर्वार्थसाध[धि]काम् ॥ २०१ ॥

देशिकेन्द्रो भक्तियुतान्[5]
शिष्यान् प्रति सदा प्रिये[6] ।
प्रदापयति तां विद्यां
रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ २०२ ॥

---

1 योगिनाम्–क, ख
2 पातवर्धनम्–क, च
3 च मिथ्यामोहसमन्वितम्–च
पातां द्विभांवसाधनाम्–ग
5 भक्तियुतो–च
6 सदागृहीत्–क सदा व्रजेत्–च

षडशीतियुतेऽपुण्ये[1]
वासरे वसुधातले ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
दीक्षां नेच्छन्ति मानवाः ॥ २०३ ॥

रौरं[व] नरकं घोरं
व्रजन्ति वसतिं वसोः ।
मेषायनं परित्यज्य
मेषमांसप्रिया द्विजाः ॥ २०४ ॥

यां दीक्षां भक्तिभावेन
नेच्छन्ति वसुधातले ।
ते यान्ति रौरवं घोरं
तप्तलाक्षा[3]समन्वितम् ॥ २०५ ॥

तुलायनं परित्यज्य
दीक्षां मोक्षप्रदा[यि]यकाम्।
वीरमाहेश्वराणां च
विमलब्रह्मसाध[धि] काम् ॥ २०६ ॥

मुक्तिकान्ताङ्गसंयुक्तां
मूर्तिमन्तां परात्पराम् ।

---

1 युते पुण्ये–च

2 भूरुद्रजङ्गमानां च–च

3 तत्त्वालक्षा–ग

नेच्छन्ति मानवाः प्रेत्य[1]
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥ २०७ ॥

वेदार्थवेष्टितां वेधां
जङ्गमानां च हे प्रिये !
इच्छन्ति देवताः सर्वाः
दीक्षां पापविनाशिनीम्[2] ॥ २०८ ॥

दीक्षाहीनान् जनान् गौरि !
प्रेतराजो यमालये ।
शिक्षितु सर्वदा[3] (लोकान्) तांस्तान्[4]
विप्रान् दीक्षाविवर्जितान् ॥ २०९ ॥

उद्योगयति धर्मात्मा
धर्माधर्मविचारणात् ।
सिंहासनं परित्यज्य
योगिनां योगसाधनाः ॥ २१० ॥

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षां पापहरां शिवाम् ।

---

1 प्रीत्या—च

2 विनाशनीम्—ख

3 सादा-ग

4 लोकान्-ग

नेच्छन्ति सर्वदा[1] लोके
विष्णुब्रह्मादिदेवताम्[2] ॥ २११ ॥

यागदीक्षां[3] परीच्छन्ति[4]
स्वर्गभोगफलान्विताम् ।
सोमपानच्छागमांस-
सेवनाग्निमुखान्विताम्[5] ॥ २१२ ॥

सवनत्रयसंयुक्तां
कुत्सितां[6] कुलगौरवीम्[7] ।
क्षुद्रदेवेच्छितां[प्सितां][8] पूजां
नेच्छन्ति वसुधातले ॥ २१३ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
नित्यानन्दैकमूर्तयः ।
ललाटे मन्त्रनिलये
आज्ञाचक्र[9]समन्विते ॥ २१४ ॥

---

1 सार्वदा—ग
2 देवताः—ग. च सेविताः—क. ग. (पा)
3 युगदीक्षां—च
4 परित्यज्य—ग परिगच्छति—च
5 सोमपानक्रियासक्तां
कपालाग्निसन्तिवताम्—ग
6 कुलनाशिनीम्— कुच्छितां—ग
8 देवेप्सितां—च
9 अग्निचक्र—क

भस्मरेखां परित्यज्य
गन्धपुष्प[1] प्रदायकाः ।
शिवसंस्कारविरताः
शिवसूत्रविवर्जिताः ॥ २१५ ॥

शिवदीक्षाविनीताङ्गाः
पापवेष्टितमूर्तयः
द्विजाधमाः सदा गन्धान्
लेपयन्ति[2] बलान्वितान् ॥ २१६ ॥

ते यान्ति प्रेतराजस्य
मन्दिरं भूतवेष्टितम् ।
भूतप्राणिद्विजान् सर्वान्[3]
भूतहोमसमन्वितान् ॥ २१७ ॥

होमदीक्षासमासक्तान्[4]
शिवदीक्षाविवर्जितान् ।
प्रवेशयन्ति ते दूताः
प्रेतराजस्य शासनात् ॥ २१८ ॥

---

1 गन्धपुष्टि–ख

2 लिम्बयन्ति–ग

3 द्विजासस्व–ग

4 सदासक्तान्–ख
सदायुक्तान्–क

सर्वधर्मान् परित्यज्य
शिवदीक्षां प्रयच्छति ।
स भक्तो मे प्रिये ! गौरि !
व्रजेत् जन्मविवर्जितम् ॥ २१९ ॥

सायुज्यं सर्वदा लोके[1]
पृच्छामोह[2]विवर्जितम् ।
कालात्मनः कलामूर्तीन्[3]
कालरुद्रान् परात्परान्[4] ॥ २२० ॥

भूरुद्रान् जङ्गमान्[5] भूमौ
सेवितुं सर्वदेहिकाः[6] ।
स्वर्गस्थाः स्वरसंयुक्ताः[7]
नाकिनः कालकल्पनात्[8] ॥ २२१ ॥

इच्छन्ति सर्वदा[9] गौरि
अहो दीक्षां मनोरमाम् ।

---

1 सार्वदा केन–ख. ग
2 इच्छामोह–ग
3 कालमूर्तीन्–क. ख
4 परान्परान्–क
5 भूरुद्रजङ्गमान्–ग
6 सार्वदेहिकाः–ग
7 स्वरस्यपरसंयुक्ताः–च
8 कालकल्पयेत्–च
9 सार्वदा–ग

भूरुद्राणां जङ्गमानां[1]
किं करिष्यन्ति मानवाः ॥ २२२ ॥

कालः [illegible] वः शिवः कालः
इति ज्योतिषसाधकाः ।
त्रिस्कन्धपारगाः सर्वे
[illegible]यप्रभृतिदानवाः ॥ २२३ ॥

व्रजन्ति धर्मराजस्य
शासनाश्रममन्दिरम् ।
कालो जडः कर्मयुतः
प्राचीसाधनसाधकः ॥ १२४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
सेवकः कर्मदायकः ।
इति भक्त्या सुरश्रेष्ठान्
भूरुद्रान् जङ्गमान् भुवि[2] ॥२२५ ॥

स्तोतुं सदा सुरा यान्ति[3]
कालवादतिरस्कृताः ।

---

1 भूरुद्रजङ्गमानां च—ग

2 भूरुद्रान् भूवनस्थले—ग

3 सुरस्तोमाः—ग

4 कालवेदिताः—क

ब्रह्मेन्द्रवायवः सर्वे
दीक्षालाः कायवेष्टिताः[4] ॥ २२६ ॥

त्यजन्ति सततं गौरि !
जडिनं कल्मषोदयम् ।
तं कालं प्रमथाः सर्वे
भस्मीकुर्वन्ति योगजात् ॥ २२७ ॥

शिवसंस्कारसंयुक्ताः
दीक्षा[1]मन्त्रप्रभावतः ।
षट्स्थलब्रह्मसन्धानात्
ब्रह्मानन्दप्रभावतः ॥ २२८ ॥

विषुवत् पञ्चकं लग्नं
विषनाडीसमन्वितम्
पापग्रहान्वितं पश्चात्
पापदृष्टिसमन्वितम्[2] ॥ २२९ ॥

ज्योतिश्चक्रात्मकं कालं
भस्मीकुर्वन्ति शाम्भवाः ।
षडध्व[3]षण्मतातीताः
अरिषड्वर्गवर्जिताः ॥ २३० ॥

---

[6] संयुक्तां दीक्षां–च

इदमर्धं च पुस्तके न दृश्यते.

[3] षड्दर्शन–च.

वीरमाहेश्वराः सर्वं
कालकल्पसमन्वितम् ।
अनूरुसारथेर्मानं
भस्मीकुर्वन्ति सन्ततम् ॥ २३१ ॥

चन्द्रमानं गुरोर्मानं
ग्रहमानं तथैव च[1]।
प्राणलिङ्गप्रभावेन
भस्मीकुर्वन्ति शाम्भवाः ॥ २३२ ॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
हृष्टा भवति पार्वती ।
देवदेव जगन्नाथ
भक्ताभीष्टफलप्रद ॥ २३३ ॥

कालाधीनं जगत्सर्वं
इत्याहुः सनकादयः ।
कालस्वभावं मे[2] प्रीत्या
विस्तार्य[3] त्वमहं शिव ॥ २३४ ॥

---

1 ग्रहमानं शुभाशुभम्–क

2 कालस्वभावास्ते–च

3 विस्तृता हि मया शिवे–च

विस्तृतः–क, ख

अत्र विस्तारय इत्यस्यस्थाने विस्तार्य
इत्यादि छन्दोऽनुरोधेन ।

कथयामि तव प्रीत्या
इतिहासं सुविस्मितम् ।
गुरोर्दक्षिणदिग्भागे
वेदाद्रिर्वेधसा कृतः ॥ २३ ॥

अस्ति गौरि ! मम प्रीत्या
तस्मिन्नद्रौ विचित्रके[1] ।
कल्पान्तभैरवो रुद्रो
वीरमाहेश्वरप्रियः ॥ २३६ ॥

प्राणलिङ्गी प्रसादज्ञः[2]
पादतोयसमन्वितः ।
कालात्मा श्रीपतिः श्रीमान्
जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ २३७ ॥

सर्ववेदार्थतत्त्वज्ञः
स्पष्टसिद्धान्त[3]साधकः[4] ।
त्रिस्कन्धपारगो लोके
यशस्वी यशसां निधिः ॥ २३८ ॥

गुणवान् सुश्रुतः[5] ख्यातः
मन्त्रालोचनतत्परः ।

---

1 विचित्रिते–क. ख, च
2 प्राणलिङ्गप्रसादज्ञः–ग
3 अब्दसिद्धान्त–ग
4 पारगः–क
5 विश्रुतः–क. च

मदनास्त्रविनिर्मुक्तः
मत्तकाशीसमन्वितः ॥ २३९ ॥

यतीनां देवतानां च
ऋषीणां हृदि भेदकः ।
वामहस्ते[1] सदा लिङ्गं
न्यस्य[2] पूजारतः प्रिये ॥ २४० ॥

षट्स्थलब्रह्मिसंस्कार[3]
दीक्षामन्त्रविशारदः ।
माहेश्वरमनोध्यान
धारणाधारधार्मिकः ॥ २४१ ॥

दिगीशवृन्दवृन्दानां
ईशिता षड्गुणोदयः ।
पीनवक्षा विशालाक्षः
दीर्घकेशो धनुर्धरः ॥ २४२ ॥

ज्योतिषाङ्गः स्निग्धकायः
प्रसन्नवदनो विदाम् ।
वरो[4] वरशक्तियुतः
सर्वशस्त्रास्त्रपारगः ॥ २४३ ॥

---

1 सव्यहस्ते-ग
2 न्यस्तं-ग न्यास-च
3 ब्रह्मसंस्कार-ग
4 परो-ग (पा)

गाण्डीवी स्वरसन्दोहः
स्वरालापः स्वरेश्वरः[1] ।
तृणीकृताजविष्ण्विन्द्र
शिखिवायुकुबेरकः ॥ २४४ ॥

जडीकृत[2] जीवशुक्र[3]
नारदात्रिबुधोत्तमः ।
चतुष्षष्टिकलाविद्या
नारी[4] वदननायकः ॥ २४५ ॥

हृषीकविषयासक्त
वैष्णवब्रह्महेतुकः[5] ।
ज्ञानगुप्तः सदा गौरि !
देवदेवं निरञ्जनम् ॥ २४६ ॥

पिङ्गकेशं ललाटाक्षं
विरक्तं यतिनायकम् ।
निरालम्बं तत्त्ववेद्यं
अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ २४७ ॥

नित्यानन्दं नित्यतृप्तं
प्रणव[6]ज्ञानसाधनम् ।

---

1 सुरेश्वरः—च
2 जडीकृत—च
3 गुरुशुक्र—ग
4 विद्यासारे—ग
5 वैष्णवद्रवहेतवः—ग
6 प्रणाम—ग

विभुं प्रभुं सुराणां च
द्विजानां सेवितं[1] शिवम् ॥ २४८ ॥

भूरुद्रं[2] जङ्गमं ध्यात्वा
स्वल्प[3]काल इति स्मृतः[4] ।
निगृह्य[5] ग्रहराजानं
आदित्यं अर्चिषां पतिम् ॥ २४९ ॥

निरुद्धय[द्ध]वान् ग्रहान् सर्वान्[6]
ज्योतिश्चक्रप्रवर्तकान् ।
वक्रगान् शीघ्रगान् गौरि !
ताराशशिसमन्वितान् । २५० ॥

इन्द्राग्नियमदिक्पाल[7]
विष्णुब्रह्मेन्द्रदैवतान् ।
ध्रुवतारासमासक्तान्[8]
ऋषिमण्डलवेष्टितान् ॥ २५१ ॥

---

1 जीवनं–क. च
सेविनं–ख
2 भूरुद्र–ग
3 स्वल्पं–क. ख. च
4 स्मृतम्–क
श्रुत्वा–ख
5 विगृह्य–ग निरुद्धय–ख. च
6 निरुतवान् ग्रहास्सर्वे–क
7 दिक्पालान्–च
8 वं योगकरणादि–क. ख. ग

उत्पाटितुं भगोलस्थान्
मेघमण्डलवेष्टितान् ।
इच्छाशक्तिबलं धत्ते
घोरनादभयान्वितम् ॥ २५२ ॥

तस्य नादं महाघोरं
श्रुत्वा सूर्यादिदेवताः[1] ।
पेतुस्तस्य पद्वन्द्वे[2]
अहो[3] कान्ते वरानने ॥ २५३ ॥

अहो वेदान्तवेद्याय
प्राणदानाय ते नमः ।
भूरुद्रध्यानयुक्ताय
भूपावनकराय ते[4] ॥ २५४ ॥

नमो नमः सदानन्द-
मूर्तये ब्रह्मणे नमः ।
अविद्याद्वन्द्वनिर्मोह
मलधूपयुतात्मने[5] ॥ २५५ ॥

---

1 चन्द्रार्किदेवताः–ग
2 णु–च
3 पादद्वन्द्वे–क. ख. ग
4 ध्यानसक्ताय ते नमः–च
5 मलदूषित आत्मने–क
मलरायतात्मने–च

नमो वेदान्तवेद्याय
वेदावासाय[1] ते नमः ।
कालकर्मपरित्याग
शीलदीक्षाय[2] ते नमः ॥ २५६ ॥

प्रमथेन्द्राय[3] विश्वाय
विश्वब्रह्मात्मने नमः ।
ब्रह्माण्डरोमकूपाय
मुक्तिकान्तावराय ते ॥ २५७ ॥

षट्चक्रचक्रवेद्याय
मानातीताय[4] ते नमः ।
मन्त्राक्षरशरीराय
मन्त्राज्ञे[5] नमोऽस्तुते[6] ॥ २५८ ॥

अनाथाः प्राकृताः सर्वे
दीक्षाकर्मविवर्जिताः ।
तव[7] स्तोत्रमयं कर्म
नेश्महे जडदेहिकाः ॥ २५९ ॥

---

1 वेदवासाय–क. ख
2 शिलादीक्षाय–ग
3 प्रमथराजाय–ग
4 मूलातीताय–क. ख. ग. घ
5 अत्र टजभावः छन्दोऽनुरोधेन ।
6 नमोनमः ग
7 स्तव ग

श्रुत्वा स्तोत्रं महापुण्यं
स नृपो[1] देवपूजितः ।
उवाच तान् ग्रहान् सर्वान्
प्रतिजग्राह हे[2] प्रिये ! ॥ २६० ॥

तेषा भक्तियुतं स्तोत्रं
यः पठेत् स विमुच्यते[3] ।
इत्यद्भुतमहं श्रुत्वा
नृपतेस्तस्य मन्दिरम् ॥ २६१ ॥

रथवाजिसमाकीर्णं
रत्नकुट्टिमवेष्टितम् ।
वरनारीसमायुक्तं
नाट्यशालासमन्वितम् ॥ २६२ ॥

वीरमाहेश्वराणां च ।
प्राणावासं[4] परात्परम् ॥
शतकोटिगजैः शुद्धैः
अष्टदिग्गजसंनिभैः ॥ २६३ ॥

वेष्टितं दिव्यसौधैश्च[5]
चन्द्रकान्तशिलामयैः ।

---

1 तपो—ग
2 मे—क
3 मासमेकं वरानने—ग
4 प्राणवासं—क. ख
5 साध्यै दिव्यैः—ग
सौधै दिव्यै—ख

सहस्रशृङ्गसङ्कीर्णैः
पद्मरागविराजितैः ॥ २६४ ॥

मेरुतुल्यैः पताकाद्यैः[1]
वैजयन्ती समन्वितैः ।
इन्द्रनीलद्वारयुतैः
पुष्यरागकवाटकैः ॥ २६५ ॥

गोमेधिकतुलाधार
पीठस्थैः वज्रवेष्टितैः
कार्तस्वरकुडचयुतैः
रचितं विश्वकर्मणा ॥ २६६ ॥

आदाय मे प्रिये गौरि !
मन्ये कैलासमुत्तमम् ।
पूर्ववन्निर्मितु देवान्
इच्छामि प्रमथाज्ञया ॥ २६७ ॥

इदं पवित्रं पापघ्नं
चरित्रं मुक्तिदायकम् ।
यः शृणोति पठत्याशु
भावभक्ति[2]समन्वितः ॥ २६८ ॥

---

[1] पताकास्तैः–च

[2] भावमुक्ति–क

भूरुद्राणां जङ्गमानां[1]
समाजेषु[2] जितेन्द्रियः ।
सर्वान् भोगान् समासाद्य
भुवि[3] देहावसानतः ॥ २६९ ॥

स याति मम सायुज्यं
सत्यं सत्यं वरानने ! ॥ २७० ॥

विषुवतोरयनयोश्च शतत्रयं[4]
षष्टिकं[5] दिवसमेकमब्दकम्[6] ।
पूर्वतोऽपि परतोऽपि संक्रमात्
नाडिकाश्च खलु षोडश षोडश ॥ २७१ ॥

इति श्रीवीरागमोत्तरभागस्य वीरमाहेश्वरतन्त्रस्य
वीरशैवदीक्षाकालनिर्णयो नाम तृतीयः पटलः

---

1 भूरुद्रजङ्गमानां च. ग.
2 सपूजेषु—क. ख
3 पद्यार्धमिदं—ग पुस्तके न दृश्यते ।
4 दिनत्रयं—क. ख
त्रयं—ग 5षष्टिंत—क, ग
6 हरिपदे षडशीतिमुखेऽपि च—क. ख
6 इति श्री वीरागमे वीरशैवदीक्षाकाल-
निर्णयो नाम पञ्चमः पटलः—च

—O—

# वीरागमोत्तरे चतुर्थः पटलः[1]

---

[2]देवदेव जगन्नाथ !
विरूपाक्ष महेश्वर !
दीक्षाद्रव्याणि सर्वाणि
यानि तानि मम प्रभो ॥ १ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
ब्रूहि त्वं करुणाकर !
शृणु गौरि ! प्रवक्ष्यामि
अहं सर्वाणि तान्यपि ॥ २ ॥

कार्तिके श्रावणे वाऽपि
माघे वा फाल्गुनेऽपि वा[3] ।
वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षाकाले गते सति[4] ॥ ३ ॥

---

1 अयं च चतुर्थः पटलः क. ख पुस्तकयोः न दृश्यते । इत उत्तरस्य पञ्चमपटलस्य आरम्भे चतुर्थः पटलः इति दृश्यते ॥

2 श्रीगणेशायनमः । श्रीप्रभुगुरवे नमः वीरागममाहेश्वरतन्त्रस्य दीक्षाप्रकरणानि द्रव्याणि लिख्यन्ते ॥—च

3 कार्तिके वा मार्गशीर्षे माघे मासे च फाल्गुने ॥—च

4 गमे सति—च

अनेकानि विचित्राणि
पुष्पाण्यादाय भक्तितः[1] ।
फलानि विविधान्याशु
कोमलानि सुरार्चिते[2] ! ॥ ४ ॥

पल्लवानि दलाग्राणि
विचित्राणि गुरोः क्रमात्[3] ।
आदाय भक्तिभावेन
गुरोः पादयुगं शुभम् ॥ ५ ॥

अर्चयित्वा मम प्रीत्या
गुरोराज्ञां पवित्रजाम् ।
आदाय जङ्गमान् सर्वान्
आहूय च पुनः पुनः ॥ ६ ॥

सुवर्णानि विचित्राणि
वस्त्राण्याभरणानि च ।
दत्वा सुरेश्वरांस्तांस्तान्[4]
वीरमाहेश्वरान् शुभान् ॥ ७ ॥

पूजयित्वा मम प्रीत्या
तेभ्यो माहेश्वरप्रिये[5] !

---

1 पुष्पाणि सुरभीणि च–च
2 रसानि च–च
3 कृपात्–च
4 सुरेश्वरान् तान्–क. ख. ग. घ
5 माहेश्वरप्रियात्–च

वेदशतं शुद्धगुणोपेतम्[1]
शुद्धसात्त्विकविग्रहम् ॥ ८ ॥

वेदात्मानं पुण्यनिधिं
शिवं तत्त्वार्थपारगम्[2] ।
भवपाशविनिर्मुक्तं
शिवसूत्रसमन्वितम् ॥ ९ ॥

विद्वांसं मुक्तिकोशस्थं
साधनत्रयवर्जितम् ।
भावगम्यमृषिश्रेष्ठं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ १० ॥

देशिकेन्द्रं गुरुश्रेष्ठं
षडध्वाध्वान[ध्वध्यान]साधकम् ।
निरीहं निश्चलं नित्यं
निपुणं जितमन्मथम् ॥ ११ ॥

कामत्यागं कलातीतं
क्रोधडम्भविवर्जितम्
नादब्रह्मस्वरमयं
नरनाटकविग्रहम् ॥ १२ ॥

---

1 शुद्धं गुणोपेतम् च

2 शिवतत्त्वार्थपारगम् च

गुणोदयं विश्वमूर्ति
प्रसाद[1]ब्रह्मसेवितम् ।
स्वयंभुवं स्वरातीतं
स्वेच्छाविग्रहधारिणम् ॥ १३ ॥

तपोनिधिं भावगम्यं[2]
ऊर्ध्वरेतं मनोहरम् ।
भोगनिद्रापरित्यागं
निर्जाड्यं नीलकन्धरम् ॥ १४ ॥

षडक्षरमयं नित्यं[3]
योगाष्टकसमन्वितम् ।
वरदं भक्तसङ्घानां
वर[4]दानवसेवितम् ॥ १५ ॥

मदाष्टक[5] विनिर्मुक्तं
यमिध्यानपरायणम् ।
सहस्रदल[6]मध्यस्थं
सांख्ययोगतिरस्कृतम् ॥ १६ ॥

---

1 प्रसाद् च
2 भावभाव्य च
3 सत्य च
4 वरं च
5 यदाष्टक क. ख,ग.ध
6 दळ च

वैशेषिकार्थदहनं[1]
सहस्राक्षं सदाशिवम् ।
व्योमकेशं प्रभुं प्राज्ञं
प्रमथाचारचारिणम् ॥ १७ ॥

[2]त्रिषष्टिशीलसंयुक्त-
शिवाचारप्रवर्तकम् ।
पापघ्नं परमाद्वैत-
साधकाचारसंयुतम्[3] ॥ १८ ॥

ध्यानयोगक्रियायोग-
भावयोगसमन्वितम् ।
सहस्रबाहुं सर्वज्ञं
मन्त्रावासं[4] परात्परम् ॥ १९ ॥

मायावादमहारण्य[5]-
दावानलमनामयम्[6] ।
बैन्दवज्ञानविध्वंसं[7]
बलशक्तिसमन्वितम् ॥ २० ॥

---

1 वदनं क. ख; ग; ध
2 पद्याधमिदं च. पुस्तके न दृश्यते
3 साधकाचारदूषितम् क. ख. ग. घ
4 मन्त्रवासं च
5 महारण्य क. ख. ग
6 नल भयङ्करम् । च
7 बैन्दव ज्ञानविध्वसं च

क्षुद्रयोगसमासक्त[1]
शास्त्रज्ञानविवर्जितम् ।
शिवानन्दैकनिलयं
पञ्चसूतकवर्जितम्[2] ॥ २१ ॥

सप्तव्यसनसंस्कार[3]-
मायाशबलनाशनम्[4] ।
[5]षट्तर्कवादऊहार्थ-
दुरालापविवर्जितम् ॥ २२ ॥

श्रौतादिकमतोपेत-
प्रकृतिज्ञानभेदकम् ।
अक्षमालाधरं दीप्तं
कोटिसूर्यप्रभाऽन्वितम् ॥ २३ ॥

ब्रह्माण्डकोटिगर्भस्थं
लय[6]भैरव[7] वेष्टितम् ।

---

1 समायुक्तं च

2 इतः परं, च·पुस्तके—
जतिजातरजस्वलाप्रेताच्छिष्ट विवर्जितम् । इत्यर्धमधिक दृश्यते ।

3 संस्कारं च

4 इतः परं चपुस्तके—धूतमांससुरापान
स्वर्णस्तेयमृगव्यथम् ।
इत्यधिक दृश्यते ।

5 षट्तर्कवाद इत्यारभ्य प्रकृतिज्ञानभेदकं इत्यन्तो भागः च
पुस्तके न दृश्यते ॥

6 लय—च 7 भैरवं क. ख. ग.घ

निरीश्वरार्थमीमांसा[1]-
वादाचारार्थवर्जितम् ॥ २४ ॥

पाश्वरात्रागमाचार-
विष्णुभक्तभयङ्करम्[2] ।
पादोदकक्रियाचार-
पावनत्रयवेष्टितम् ॥ २५ ॥

कुण्डलीयोगसंस्कारं[3]
कर्णकुण्डलधारिणम् ।
दशप्राणसमायुक्तं
इन्द्रिय[4] ज्ञानवर्जितम् ॥ २६ ॥

द्रव्योद्देशक्रियोद्देश-
क्षय[5]जीवविनाशनम् ।
विश्वतैजसजीवात्म-
प्रकृतिप्राज्ञदू[षकम्]षितम् ॥ २७ ॥

चेष्टासंयुक्तसंस्कार-
सप्ततन्तु[6] विनाशकम् ।

---

1 मीमांस–क. ख. ग. घ
2 विष्णुभयङ्करम्–क. ख. ग. घ
3 सस्कार–क. ख ग. थ
4 समासक्तस्वेन्द्रिय–च
5 द्रव्यद्वेषक्रियाद्वेषक्षय–च
6 सप्ततन्त्व–च

हृत्पद्मपीठसंयुक्त[1]-
चलत्कुण्डलमण्डितम् ॥ २८ ॥

मन्त्रकुण्डाब्धि[2]सम्भूत[3]-
बडबानलतेजसम् ।
वैखानसमहोद्देश[4]-
गन्धसिन्धुमृगाधिपम् ॥ २९ ॥

मायावादिमहोद्देश[5]-
शैलवज्रधरं हरम् ।
अपूर्ववादभोगीन्द्र[6]-
वैनतेयपराक्रमम् ॥ ३० ॥

विधिवादविचारार्थ[7]-
गजकेसरिसंनिभम् ।
निर्विकल्पक्रियाभेद-
राजीवशशिसंनिभम् ॥ ३१ ॥

सविकल्पार्थकुमुद-
कलोन्मील[8]रविप्रभम् ।

---

1 संयुक्तं—च
2 ताण्डाब्धि—क
3 सम्भूतं—च
4 मतोद्देश—च
5 मारारातिं मतोद्देश—
6 अपूर्ववादं भोगीन्द्र—च
7 विचारार्थं—च
8 कलोन्मील—च

व्याप्तिवादार्थगाढान्ध
नाशनीकृतभास्करम्
[कारनाशकभास्करम्] ॥ ३२ ॥

योगरूढिदुरालाप
तिमिरग्रहनाशकम् ।
अष्टादशपुराणार्थ
पापपन्नगगारुडम्[1] ॥ ३३ ॥

उपाधिवाददावाग्नि[2]
शान्तितोयसमन्वितम् ।
कार्यवादक्रियासक्त[3]
मदहस्तिमृगाधिपम्[4] ॥ ३४ ॥

विलासवादभावज्ञ[5]
नारीजनभयङ्करम् ।
ब्रह्मजिज्ञासतत्त्वार्थ-
मन्तर्यामिणमीश्वरम् ॥ ३५ ॥

उद्देशभेदकोन्मूल
ब्रह्मविद्याप्रदायकम् ।

---

1 नाशनम्—क
2 दावाग्नि—च
3 क्रियासक्तं—च
4 मदकारणनाशनम्—क
5 भावज्ञं—च
6 तत्त्वार्थदेहमन्तयर्यामिणंशिवम्—च

चैतन्यबिम्बनिलय-
भक्तचेतनवर्धनम् ॥ ३६ ॥

ज्ञानविद्यामहाडम्भ-
चेतक[1]त्रयवेष्टितम् ।
भूतशुद्धि[2] क्रियोपेत-
भुवनत्रयपूजितम् ॥ ३७ ॥

स्नानसंध्याक्रियासक्त[3]-
होमकर्मतिरस्कृतम् ।
चतुःसाधनसंस्कार-
णाज्य[4] वर्हिति(स्ति)रस्कृतम् ॥ ३८ ॥

षट्पात्रसाधनाचार[5]-
चतुष्पात्रविवर्जितम् ।
वैदिकाचारनिरत[6]-
वर[7]दानवभीकरम् ॥ ३९ ॥

---

1 चेतन—क
2 भूतशुद्धिं—च
3 क्रियासक्त—च
4 आज्य—क
4 चारं—च
5 निरत—च
6 वरं—च
7 क्रियायोग

सप्तसंस्थक्रियायाग[1]-
द्विजदानव[2]ताडनम् ।
श्रीविद्यामन्त्रसंस्कार[3]-
शाक्तेय[4] जननाशनम् ॥४०॥

अन्तर्यागक्रियासक्त[5]
कौलागम[6]तिरस्कृतम् ।
बाह्ययागक्रियासक्त[7]-
द्विजचाण्डालमर्दनम् ॥ ४१ ॥

सौरवादक्रियासक्त[8]-
मदपङ्कजभेदनम्[9] ।
पितृश्राद्धक्रियासक्त[10]-
द्विजकाव्यविनाशनम् ॥ ४२ ॥

उद्धर्तवर्तार्थज्ञ[13]-
शक्तपीठधुरन्धरम् ।

---

1 द्विजराक्षस च
2 सस्कारं-च
3 शाक्त च
4 क्रियासक्तं च
5 गौलागम क
6 क्रियासक्त च
7 ,,
8 भेदक क
9 क्रियासक्तं च
10 द्विजकाव्ये च
11 नार्थज्ञ च

भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं
काषायीकृत[1]वाससम् ॥ ४३ ॥

पादुकान्यस्तसंसक्त[2]
पादद्वन्द्वविराजितम् ।
अणवाद्यष्टयोगार्थं[3]
तृणीकृतपुरन्दरम् ॥ ४४ ॥

जडीकृत[4]ब्रह्मविद्या
जडचैतन्यशोधकम्[5] ।
चित्तबुद्धिमनोमाया
जाग्रस्वप्न[6]विवर्जितम् ॥ ४५ ॥

रसशोणितमांसास्थि-
मेदोपूज्येन्द्रियोर्जितम् ।[7]
समाधि[8]साधनोपाय[9]
क्रियाघातसमन्वितम्[10] ॥ ४६ ॥

---

1 काषायकृत–च
2 संसक्त–च
3 योगार्थ–क
4 कृत–च
5 शोधनम्–च
6 जाग्रस्वप्न–क
7 मेदोमज्जावसामांसअस्तिशोणितवर्जितम् ॥
8 सामादि–क
9 नोपाय–च
10 क्रियाखातविचक्षणम्–च

नैसर्गिकक्रियाकाल-
मानदण्डधराधरम् ।
आणव[1]ज्ञानविरतं
परमाणवकारणम् ॥ ४७ ॥

मोक्षनारीरतिक्रीडा[2]
तत्त्वातत्त्वप्रदायकम् ।
मुक्तिसोपानसंयुक्त[3]-
मन्त्राक्षरसमन्वितम् ॥ ४८ ॥

नवद्वारसमासक्त[4]
देहग्रामचलीकृतम् ।
चक्रपद्मदलाग्रस्थ
योग[5]चक्रसमुद्धृतम् ॥ ४९ ॥

भक्तभक्तिक्रियोपेतं
आज्ञाज्ञानप्रदायकम् ।
उदासितारं विश्वानां
प्रतिमासूत्र[6] धारिणम् ॥ ५० ॥

---

1 प्रणव—च
2 रतिक्रीड—च
3 संयुक्त—च
4 समासक्त—च
5 योग—च
6 सूत्रप्रतिम—क

सुषुप्ति योगनिल[1]यं
वीराचारैकवर्तिनम्[2] ।
आख्यातवादतत्त्वार्थ
निगृहीतमनोभवम्[3] ॥ ५१ ॥

असत्ख्याति[4]स्फुरत्तत्त्व
तत्त्वमस्येकदूषितम् ।
विख्यातवादपाषण्ड
चण्डदीधितिनाशनम् ॥ ५२ ॥

गतस्पृहगणाध्यक्ष
गुरुदीक्षासमन्वितम् ।
त्रिषष्टितन्त्रराजानं
शीलादिऋषिपूजितम् ॥ ५३ ॥

विश्वगर्भविलासस्थ
व्यापकत्रयवेष्टितम् ।
चम्पकन्याससर्वाङ्ग
रुद्रं भद्र[2]गुणान्वितम् ॥ ५४ ॥

1 निलयं–च
2 वर्तनम्–च
3 मनोद्भवम्–क
4 असख्यात–च
5 तत्त्वमस्योक्तिदूषितम्–च
6 नमक–क
7 रुद्रभद्र च

कालकर्मक्रियायोग-
तिथिमासाब्दवेष्टितम् ।
इला[1] पिङ्गलयोगस्थ[2]-
वायु प्रत्यक्षदूषितम् ॥ ५५ ॥

अनुद्भूतस्वरमय-
श्वसनार्थ[3] विनाशनम् ।
उद्भूतरूपस्पर्शाङ्ग[4]-
गन्धमारुतरोधकम् ॥ ५६ ॥

नित्यविज्ञानमानन्दं[5]
सुखदुःखविवर्जितम्
प्रमाणसंशयातीतं
अनुमानैकशोधकम् ॥ ५७ ॥

हस्त[6] मस्तकसं योग[7]-
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ।
सहस्रशीर्षं पुरुषं
अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ५८ ॥

---

1 इडा—क
2 योगस्थ—च
3 स्वशनार्थ—क. ख. ग
4 स्पर्श—च
5 नित्य विज्ञानमानन्द—क. ख. ग
6 हास्त—च
7 सयोगं—च

प्रपञ्चसारसम्पन्नं[1]
कायकल्मषनाशनम् ।
वीरमाहेश्वरं श्रेष्ठं
भूरुद्रं कुलपावनम् ॥ ५९ ॥

अर्चयित्वा समाशीलान[2]
ऋत्विजानृ[जः ऋ]षिपुङ्गवान् ।
चतुरः[3] सात्त्विकान् शुद्धान्
शिवाचारप्रवर्तकान् ॥ ६० ॥

आगमज्ञान् सदाचारान्
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितान् ।
शिवध्यानरतान् लोके
ब्रह्मसन्धानसाधकान् ॥ ६१ ॥

वीरमाहेश्वरान् गौरि !
दृढभक्तिसमन्वितः[4] ।
शिष्यसङ्घो मुदा प्रीत्या
पूजयेत् भावभक्तितः ॥ ६२ ॥

स्वर्णस्वरूपान् कुम्भांश्च[5]
रचयेत् भक्तिभावतः ।

---

1 सम्पन्न-क. ख. ग
2 सुशीलान्-क. ख. ग
3 चतुरान्-क. ख. ग
4 समन्वितान्-च
5 स्वर्णान्वितानि कुम्भानि-क. ख. ग

अथवा राजतान्यानि[1]
पञ्चकान् सुघटानपि[2] ॥ ६३ ॥
कांस्यांश्च पित्तलान् सत्त्वान्
पाषाणांश्च दृढव्रतः[3] ।
कारयेत् भक्तिभावेन
भक्तिश्रद्धासमन्वितः ॥ ६४ ॥

ताम्रकुम्भान् रत्नमयान्
नारिकेलांस्तरूद्भवान्[4] ।
कारयेत् भक्तियुक्तः सन्
वैराग्यज्ञानसाधकः[5] ॥ ६५ ॥

अथवा मृण्मयानन्यान्
वर्तुलान् कलशानपि[6] ।
आदाय मनसा ध्यानं
गुरुं ज्ञानप्रदायकम् ॥ ६६ ॥

कृत्वा प्रसन्नवदनः
नवभक्तिसमन्वितः[7] ।

---

1 राजन्यस्य–च

2 कांस्यनि च विचित्राणि कुम्भान्यपि दृढव्रतः ।

3 पञ्चकानि घटान्यपि–क. ख. ग

4 ताम्रकुम्भानि रक्तानि पञ्चकानि तथा प्रिये–क. ख. ग.

5 भक्तिज्ञानैकसाधने !–क. ख. ग

6 अथवा मृण्मयान्यानि वर्तुलानि घ न्यपि ।–क. ख. ग

7 एतदनन्तरं–च. पु स्तके–षोडशस्तम्भसंयुक्त कामनं मण्टपं शिवे ।
शुद्धभूमौ तु कुर्वीत नानालङ्कारसंहितम् ॥
इति पाठो दृश्यते ।
शिवयोगमन्दिरसम्पादिते घ. पुस्तके तु इतःपूर्वं—भूरुद्रे चक्रशोधिते—

कुम्भमध्ये सुवर्णानि[1]
नवरत्नानि निक्षिपेत् ॥ ६७ ॥

न्यासपञ्चकमुद्राणि[2]
भस्मपिण्डानि निक्षिपेत्
वटार्कचूतन्यग्रोध-
विल्व[3]पर्णानि निक्षिपेत्[4] । ॥ ६८॥

शालितण्डुलमध्येषु[5]
कलशानि समन्ततः ।
प्रतिष्ठाप्य महादेवं
गुरुं शान्त[6]गुणान्वितम् ॥ ६९ ॥

आहूय ऋत्विजः सर्वान्[7]
वीरमाहेश्वरान् शिवान् ।
पूजयित्वा मम प्रीत्या
व्रती[8] भक्तिसमन्वितः ॥ ७० ॥

---

इत्यन्तः षष्ठपटलभागः दृश्यते ।

1 विशीर्णानि—क. ख. ग

2 वज्राणि—च

3 पक्ष—घ. च

4 भक्तिमान्—च

5 पञ्चपञ्चशं तण्डुलाग्रे—च

6 शान्तं—च

7 ऋत्विजान् सर्वान्—क. .ग
ऋत्विजश्चतुरः—घ

8 व्रति—च

तेषामुपरिदिग्भागे
स्वर्णवर्णानि[1] हे प्रिये !
वस्त्राणि विविधान्याशु
दत्त्वा भक्तिसमन्वितः ॥ ७१ ॥

ईशान्य[2]कलशे दिव्ये[3]
रेणुकान्वयसंभवम्[4] ।
आचार्यं भद्रपीठस्थं
पूजयेत् शुद्धभावतः ॥ ७२ ॥

आग्नेयकलशे दीप्ते[5]
मङ्गलस्वरसंयुतः ।
शिंशुमारगणाधिप [दिप्र]
शिष्यान्वयसमुद्भवम्[6] ॥ ७३ ॥

ऋत्विजं शान्तिनिलयं
वेदमूर्ध्नं प्रतिष्ठितम् ।

---

1 पर्णानि–क. ख. ग

2 ईशान–घ. च

3 देवि । –घ. च

4 मामेवागमविग्रहम्–घ. च

5 दक्षिणे कलशे गौरि घ. च

6 दारुकं शिंशुमारादिशिष्ययुक्तमघोरजम्–घ. च

पूजयित्वा मम प्रीत्या
मन्त्रमाता[तृ]षडक्षरीम् ॥ ७४ ॥

विलिखेत् तत्त्वसंयुक्तां
नादबिन्दुकलान्तिकाम् ।
वारुणे कलशे गौरि !
शिलापादकुलोद्भवम् ॥ ७५ ॥

आचार्यं प्रमथश्रेष्ठं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ।
पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं
शैवपञ्चाक्षरान्वितम् ॥ ७६ ॥

नमः शिवः शिवो देवः
इति कारुण्यभावतः ।
वायव्यकलशे दीप्ते
पञ्चसूतकवर्जितम् ॥ ७७ ॥

लिङ्गोद्भवं सुरश्रेष्ठं
सद्योजातमुखान्वितम् ।
ऋक्षपादकुलोद्भूतं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ ७८ ॥

प्रसादभावशुद्धात्म
कायकल्मषनाशनम् ।

पूजयित्वा जपेन्मन्त्रं
रुद्रसूक्तसमन्वितम् ॥ ७९ ॥

चतुरक्षरसंयुक्तं
चतुर्वर्गप्रदायकम् ।
नमः सोम इति प्रीत्या
व्रती निश्चलभावतः ॥ ८० ॥

चतुर्णां मध्यकलशे
स्वपापघ्नं कुलान्वितम् ।
मन्त्रकायं तत्त्वनिधिं
सर्वज्ञं सात्त्विकं गुरुम् ॥ ८१ ॥

पूजयित्वा मम प्रीत्या
तच्छिष्यान् रुद्रसन्ततीन् ।
वीरमाहेश्वरान् सर्वान्
तोषयित्वा पुनः पुनः ॥ ८२ ॥

द्रोणपुष्पैः बिल्वपत्रैः
मल्लिकाजातिचम्पकैः
पुन्नागैः कुन्द[1]कुटजैः
मातुलुङ्गैश्च केतकैः ॥ ८३ ॥

दुत्तूरैः पद्मकल्हारैः
कुमुदैः कोमलैः शुभैः[2] ।

---

[1] कुन्दैः—घ.

[2] दुत्तूरपद्मकल्हारकुमुदैः गोरठैः बकैः—क· ख· घ

यूथिकामालतीझण्टैः
अशोकै[1]र्नागकेसरैः ॥ ८४ ॥

घुसृणैः कुसुदैर्दीप्तैः[2]
पालाशैः प्रसवैः शुभैः[3]
गिरिपद्मैः कुन्दकुटजैः
तिरपुष्पैः तिलाक्षतैः[4] । ॥ ८५ ॥

चूतपुष्पैः चूतगन्धैः
रक्तपल्लववेष्टितैः[5] ।
धमनैर्मरुगैर्भटैः[6]
कुरटीपल्लवान्वितैः[7] ॥ ८६ ॥

दाडिमैर्धात्रिगुच्छैश्च
क्रान्तपत्रैर्जपैश्शुभैः[8] ।
क्रमुकैर्नारिकेलैश्च
सप्तपर्णैः[9] कुराटकैः ॥ ८७ ॥

---

1 झण्डी अशोकैः—क, ख ग
2 कुसुमैः—क. ख. ग कुसुम्भैः—च
3 जालपाटलः—घ. च
4 गिरिपद्मैः दर्भपुष्पैः नन्द्यावर्तासीतलैः घ. च
5 चूतनारङ्गजम्बीरकित्तळीपिचुमन्दकैः—घ च
6 दमनैर्भिन्दरैर्वटैः—क. ख ग
7 कुरटीबालराक्षसैः—घ. च
8 दालिम्बधात्रीबृहतीशक्रक्रान्ताजपाशुकैः—घ. च
9 मदुराङ्गि—घ मदुरङ्ग—च

नखपुष्पैः सिताम्भोजैः[1]
बाहुपुष्पैः बलक्षयैः ।
शतपत्रैः नवदलैः
खड्गपुष्पैश्च केरटैः ॥ ८८ ॥

राजिकै[2]राधिकैर्लाक्षैः
जटामांसै[3]र्जलार्ककैः ।
पारिभद्रैः बाह्लीकैः
गाढकैः[4] जलधारकैः ॥ ८९ ॥

अन्यैर्विचित्रैः कुसुमैः
कुट्मलैश्च सुपत्रकैः[5] ।
पूजयेद्देवदेवेशं
गुरुं लोकपितामहम् ॥ ९० ।

निर्जाड्यं निर्विकल्पं च
दृढभक्तिसमन्वितः ।
द्व्यक्षरान्वित[6]संसर्गं
गुरुरित्यक्षरद्वयम् ॥ ९१ ॥

---

1 स्थलाम्भोजैः–घ च
2 रजिकै–च
3 नटामासै–घ
4 गडिकैः–च
5 करवीरैर्नभेरुभिः । तमालैः कञ्चिवालैश्च किञ्जल्कैर्वनचम्पकैः ।
काम्करतूरिमुण्डिकमञ्जापामार्गभृङ्गकैः ।
वन्यैः पुष्पैः पल्लवैश्च कुट्मलैः कोमलैः शुभैः ॥
इति–घ. च.पुस्तकयोरधिकं दृश्यते ।
6 द्व्यक्षराह्वय–घ. च

सप्तकोटिमहामन्त्र-
राजानं पापनाशनम् ।
तन्मन्त्रं पाठयेदाशु[1]
भवपाशनिवृत्तये[2] ॥ ९२ ॥

पादोदकप्रसादेन
पापनाशनहेतुना ।
बलभक्तिसमाजेन
अनडेन महात्मना ॥ ९३ ॥

माहेश्वरकुलोद्भूतान्
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितान् ।
भूरुद्र[3]जङ्गमान् भूमौ
तुष्टिं कृत्वा सुभक्तितः[4] ॥ ९४ ॥

आलम्बन[5]यष्टिदण्डं
घण्टारव[6]समन्वितम् ।
जटापटलसंछन्न-
मूर्ध्नि[7] मध्यप्रतिष्ठितम् ॥ ९५ ॥

---

1 पठयेत्याशु—क. ख. ग.
2 पापविवर्जितः—क. ख. ग.
3 भूरुद्रान्—घ. च
4 सुभक्तिमान्—घ. च
5 आलम्ब—क. ख. ग
6 यष्टलग्नघण्टापाश—च
7 संपन्नमूर्धमध्य—घ. च

रुद्राक्षकङ्कणधरं[1]
रुद्रध्यानपरायणम्[2] ।
अक्षपादकुलोद्भूतं
अतिथिं पूजयेत् सुधीः ॥ ९६ ॥

करखड्गधरं[3] शान्तं
भस्मरुद्राक्षवेष्टितम् ।
भीमनादस्वरोपेतं[4]
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ ९७ ॥

घनलिङ्गमितीत्याहुः[5]
भूरुद्रं घनलिङ्गकम्[6] ।
पूजयित्वा[7] मम प्रीत्या
जितक्रोधो जितेन्द्रियः[8] ॥ ९८ ॥

गृहदार[9]समोपेतं
सुतभ्रातृसमन्वितम्[10] ।

---

1 करं-घ. च
2 रुद्राक्षकर्णपत्रकम्-घ. च
3 कन्थादण्डधरं-घ. च
4 भीमनादं खड्गहस्तं-घ. च
5 मिति ध्यात्वा-घ. च
6 रेणुकान्वयम्-घ. च
7 पूजयेत-घ
पूजयेत्-च
8 जितक्रोधाजितेन्द्रियम्-च
9 कृपाधारा-क. ख. ग
10 पुत्रभ्रातृसमन्वितः-घ. च

शुद्धतत्त्वान्वितं[1] शान्तं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ ९९ ॥

रुद्राक्षकण्ठवलयं[2]
प्रसादब्रह्मसेवितम् ।
त्रियक्षरमयं भीमं
आराध्यमिति रेणुकः[3] ॥ १०० ॥

स आह भगवान् गौरि !
तमाराध्यं प्रपूजयेत् ।
व्याघ्रकन्थं लोष्ठकन्थं
चन्द्रकन्थं जनाधिपम्[4] ॥ १०१ ॥

प्रत्येकं पूजयेत्याशु[5]
ध्यानसाधनसान्विकः ।
पूर्वयामे शिवध्यानात्
योगिनं तत्त्वपारगम् ॥१०२ ॥

---

1 शुद्धतत्त्वगृर्ण–घ. च

2 रुद्राक्षवलयं कण्ठे–घ
,, कण्ठ–च

3 रेणुकम्–च
अस्यार्धस्य स्थाने

4 पस्तिकन्थं मयःकन्थं स्वर्णकन्थं परायणम् । व्याघ्रकन न्द्रकन्थ गोणिकन्थां दशानने । मच्छ कन्थां मायकन्थां स्वर्णकन्थां पुराणिकम् मुक्तां कन्थां नारकन्थां मुक्तिनूपुरधारकम् । जालन्द्रकन्थां गोणिकन्था समगिरीश्वरम् । चतुष्षष्टिपपीठोत्थं चतुःपीठसमुद्भवम् ॥ इति च पुस्तके दृश्यते ।

5 पूजयेच्छिष्यो–च

प्रत्यक्षमोक्षसन्धान[1]-
लीलामानुषविग्रहम् ।
अर्चयित्वा[2] मम प्रीत्या
मङ्गलध्यानपूर्वकैः ॥ १०३ ॥

नमः सोमविभूषाय
वेदान्तनिलयाय ते ।
रुद्राक्षव्याप्तदेहाय
रुद्रतुल्याय[3] ते नमः ॥ १०४ ॥

अनाद्यविद्यासंस्कार[4]-
निर्मोहाय व्रतात्मने[5] ।
अशेषप्रमथराजाय[6]
गुरवे परमात्मने ॥ १०५ ॥

अज्ञानध्वान्तसूर्याय
आज्ञाचक्राय[7] ते नमः ।
त्रिषष्टिशीलसम्पन्न-
शिवभक्ति[8]प्रियाय ते ॥ १०६ ॥

---

1 सन्धानं–च
2 अर्चयेत–च
3 रुद्रसोमाय–च
4 अनादिविद्यासंसार–क. ख. ग.
5 ऋतात्मने–क. ख. ग
6 प्रमथराज्ञे–च
7 अग्रिचक्राय–च
8 भक्त–च

प्राणलिङ्गाय शान्ताय
प्रणवब्रह्मरूपिणे[1] ।
जडचैतन्यवैभाग[2]-
विभवे तत्त्वमूर्तये[3] ॥ १०७ ॥

सहस्रदलमध्य [स्थ]स्य
लीलालोलचराय ते ।
पवित्रमन्त्रकायाय[4]
परब्रह्माय ते नमः ॥ १०८ ॥

जगत्सूत्रशरीराय
जगदानन्दमूर्तये ।
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठाय
तत्त्वावासाय ते नमः ॥ १०९ ॥

बैन्दवज्ञाननिर्मोह-
सुरराज्ञे (?) नमोऽस्तु ते ।
सिद्धान्तवादविध्वस-
वदनाय नमोऽस्तु ते ॥ ११० ॥

ब्रह्माण्ड[5]गर्भसम्भूत-
लोकपालतिरस्कृते ।

---

1 ब्रह्मणे नमः-च
2 वैभव-च
3 मूर्तयः-द
4 कामाय-क. ख. ग
5 ब्रह्माणु-क. ख. ग

आधारचक्रवेद्याय
आणवज्ञानमूर्तये ॥ १११ ॥

निर्लेपकाय नित्याय
लोकधात्रे नमोऽस्तु ते ।
विश्वपित्रे जगत्कर्त्रे
पापहर्त्रे नमोऽस्तु ते ॥ ११२ ॥

भक्तपापविनिर्मुक्त-
पादद्वन्द्वाय ते नमः[1] ।
पादोदकप्रसादाय[2]
षट्स्थलब्रह्मणे नमः ॥ ११३ ॥

पञ्चविंशतिलीलाङ्ग-
पञ्चब्रह्ममयाय ते ।
पञ्चाक्षरन्यासबीज-
निदानाय नमोऽस्तु ते ॥ ११४ ॥

चन्द्रार्कवह्निनेत्राय
जटाजूटाय[3] ते नमः
दिगम्बराय दिव्याय
कूटस्थाय नमोऽस्तु ॥ ११५ ॥

---

1 भक्तपातकनिर्मुक्तपादद्वन्द्वाय वै नमः–घ. च

2 प्रसादार्थ–क. ख. ग

3 जटागङ्गाय–घ. च

अज्ञानतत्त्वभेद्याय
मदनाशाय ते नमः ।
भक्तवारिधिसोमाय
सर्वज्ञाय नमोऽस्तु ते ॥ ११६ ॥

स्वरव्यञ्जन[1]वेद्याय
विद्यानाथाय ते नमः ।
वीयवन्ताय वीर्याय
तपःक्षेत्राय ते नमः ॥ ११७ ॥

तप्तमुद्राविदग्धाय
स्वच्छावासाय[2] ते नमः ।
कुण्डली[3]धारकुण्डाय
कुण्डलाय नमोऽस्तु ते ॥ ११८ ॥

द्विजहोमविनाशाय
दक्षाध्वरहराय ते ।
जडीकृतद्विजेन्द्राय
कषायामलवाससे ॥ ११९ ॥

पञ्चसूतकनिर्मुक्त-
निर्मोहाय शिवाय ते ।

---

1 सर्वस्वराय–क. ग. ग

2 स्वेच्छावासाय–घ. च

3 कुण्डलि–च

योगनिद्राविलासाय
भागभाग्याय ते नमः ॥ १२० ॥

प्रेतलिङ्गार्चनज्ञान-
त्याजमानाय[1] ते नमः ।
धर्मार्थकाममोक्षाय
रुद्रसूक्ताय [2]ते नमः ॥ १२१ ॥

दिक्पालप्राणदाताय
दिनाधिपतये नमः ।
रुद्राक्षदाम[3]भूषाय
ज्योतिषां पतये नमः ॥ १२२ ॥

मन्त्रालवालजाताय
धर्मवृक्षाय ते नमः ।
नदीवासशरीराय[4]
कृतज्ञानाय ते नमः ॥ १२३ ॥

तम[मो]घ्नाय द्विजघ्नाय
क्षेत्रपालाय ते नमः ।
पितृकर्मविनाशाय
लोकताताय ते नमः ॥ १२४ ॥

---

1 त्यचमानाय–च
2 रुद्रसूत्राय -च
3 धाम–च
4 शरीरादि–च

हव्यकव्यविनाशाय
प्राणलिङ्गाय ते नमः ।
भवपाशविनाशाय
ब्रह्माण्डविलयाय ते ॥ १२५ ॥

चतुः षष्टिकलाविद्या-
सातिनाथाय ते नमः ।
अरिषड्वर्ग दग्धाय
कामभस्माय ते नमः ॥ १२६ ॥

पञ्चकोशात्मचैतन्य-
भद्रपीठाय ते नमः ।
ईषणत्रयदुर्मोह[1]
विगताय नमो नमः ॥ १२७ ॥

षडध्वमानदण्डाय
मोक्षसोपानहेतवे ।
इलापिङ्गलमार्गस्थ[2]-
मन्दमारुतधारिणे ॥ १२८ ॥

कन्दुकीकृत[3]ब्रह्माण्ड-
करधात्रि [त्री]फलाय च ।
भस्मोद्धूलितदेहाय
बलभद्राय ते नमः ॥ १२९ ॥

---

1 निर्मोह—च
2 मार्गस्थ—च
3 कन्दुदिक्कृत—च

करभीकृत[1] योगीन्द्र-
मौलिपादाय ते नमः ।
शम[2]शान्तशरीराय
शरणाय नमो नमः[3] ॥ १३० ॥

चित्ररत्नाय चित्राय
चिच्छक्तिज्ञानमूर्तये ।
ऊर्ध्वमूलाय ऊ[र्ध्वो]र्ध्वस्थ
पिङ्गकेशाय ते नमः ॥ १३१ ॥

वीरमाहेश्वराचार
वीरभद्राय ते नमः ।
अशेषप्रमथाचार-
गुरूणां गुरवे नमः ॥ १३२ ॥

उपमन्युदधीच्यत्रि-
शिवसूत्राय ते नमः ।
शिशुमारगणाध्यक्ष-
रेणुकाचारचारिणे ॥ १३३ ॥

कुमारगुरवे तुभ्यं
लीलाज्ञानप्रदाय ते ।

---

1 करटीकृत—क. ख. ग.

2 शमि—च

3 शपथाय नमोऽस्तु ते—च

एतैर्नाममि[1] महादेवं
आचार्यं पूजयेत् सुधीः ॥ १३४ ॥

कार्तस्वरान्वितं वस्त्रं
सूक्ष्मतन्तुपरिष्कृतम् ।
तुभ्यं दास्यामि देवेश[2]
ममाभीष्टप्रदायक[3] ! ॥ १३५ ॥

एतेन मनुना शिष्यः[4]
वस्त्रं दद्याद्वरानने[5] !
रुद्राक्षकुण्डलादीनि[6]
रत्नहेमयुतान्यपि[7] ॥ १३६ ॥

तुभ्यं दास्यामि[8] हे नाथ
मम ज्ञानप्रदायक[9] !
इति दत्त्वाऽर्चयित्वार्यं[10]
अष्टावरणवेष्टितम्[11] ॥ १३७ ॥

---

1 नामैं—क. ख. ग.
2 समर्पितदेव—च
3 प्रदायकम्—च
4 मन्त्रराजेन—क. ख. ग
5 दत्त्वावरानने—क. ख. ग.
6 कुण्डलान्यानि—क. ख. ग.
7 रत्नयुक्तानि कान्यपि—क. ख. ग
8 तुभ्यमर्पतु—च
9 प्रदायकः—च
10 इतिदत्त्वामहाश्रेष्ठं—क. ख. ग
11 अष्टवर्णप्रवेष्टितम्—च

पञ्चब्रह्मैकमन्त्रस्थं
 वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ।
कालाग्निरुद्रसंस्कारं[1]
 पञ्चधेनुसमुद्भवम् ॥ १३८ ॥

पञ्चाक्षरमयं शुद्धं
 भस्मपिण्डं[2] समर्पयेत्[3] ।
तेषां माहेश्वराणां च
 ऋत्विजां शिवयोगिनाम् ॥ १३९ ॥

मृत्पात्रमर्ध्यपादाब्जान्[4]
 गङ्गासिन्धुसमन्वितान्[5] ।
अमलब्रह्मतत्त्वार्थ-
 हेतूनामप्रणाशनान्[6] ॥ १४० ॥

प्रक्षाल्य मन्त्रतोयेन
 दृढभक्तिसमन्वितः ।
द्राक्षेक्षु कदलीखण्ड
 नैवेद्यं फलपूरितम् ॥ १४१ ॥

पञ्चभक्ष्यसमोपेतं
 गोघृतेनसमन्वितम् ।

---

1 संस्कार –
2 भस्मपीडं–क. ख. ग
3 प्रदापयेत्–च
4 मृत्पात्रमध्ये तान् वादान्–क. ख. ग मृत्पात्रमर्ध्यपाद्य–च
5 मुखान्विनान्–च
हेतून् पापप्रणाशनान्–क. ख. ग

सूपपायससंयुक्तं
  सूपशास्त्रसमन्वितम् ॥ १४२ ॥

सर्वशाकसमोपेतं
  तस्य तोयस्य हे प्रिये !
दत्त्वा प्रदक्षिणं कृत्वा
  दृढभक्तिसमन्वितः[1] ॥ १४३ ॥

कुङ्कुमागरुकस्तूरि-
  कोष्ठ[2]चन्दनवेष्टितम् ।
जटामांस[3]लवङ्गैश्च[4]
  संयुक्तं आ[चा]गमान्वितम् ॥ १४४ ॥

धूपाष्टकं भक्तियुक्तं
  दत्त्वा तस्य मम प्रिये !
देवदेव जगन्नाथ
  केन योगीश्वरेण च ॥ १४५ ॥

अकारि तस्य मे प्रीत्या[5]
  धूपं पापप्रणाशनम् ।
इतिहासं महाश्रेष्ठं
  भक्तिमुक्ति[6] प्रदायकम् ॥ १४६ ॥

---

1 दक्षहस्तेनभक्तिमान्—च

2 कोष्ट—च

3 मांसि—च

4 ङ्गाद्यैः—च

5 अर्पितं तस्यलिङ्गस्य—घ. च

6 भ क्त भक्ति—क, ख. ग

ब्रूहि शम्भो महादेव
नित्यानन्द निरञ्जन !
इति तद्वचनं श्रुत्वा
देवदेवः सदाशिवः ॥ १४७ ॥

रहसि[1] प्रमथमध्ये[2]
सतीं प्रति ह्युवाच सः[3] ।
जम्बूद्वीपे भारताख्ये[4]
पुरी[5] गन्धर्वसेविता ॥ १४८ ॥

सिद्धसाध्यसमाकीर्णा[6]
वीरमाहेश्वरान्विता ।
अस्ति गौरि सुरस्तोमा[7]
भीमनादसमन्विता ॥ १४९ ॥

शिखावती[8] शिवध्यान-
योगिनां योगदायिका ।
तत्रस्थितं गुरुश्रेष्ठं[9]
वीरमाहेश्वरं शिवम् ॥ १५० ॥

---

1 सहसि–घ सदाशिय–च
2 प्रमथामध्मे–घ
3 सतिं प्रति उवाच सः–क. ख.ग
4 भरतवर्षे–क. ख. ग
5 पुरे–क. ख. ग
6 कीण–क. ख. ग
7 सुरस्तोम–क. ख. ग
8 शिखावति–क. ख. ग
9 तत्र मध्ये मुनिश्रेष्ठं–क. ख. ग

ओखिलं तत्त्वनिलयं
प्राणलिङ्ग प्रतिष्ठितम् ।
धूपशील[1]समायुक्तं
ददर्श मुनिपुङ्गवम् ॥ १५१ ॥

देशिकेन्द्रो गुरुश्रेष्ठः[2]
षट्स्थलागमकोविद[3]ः ।
तमोहिलं[4] तत्त्वनिधिं
धूपशीलसमन्वितम् ॥ १५२ ॥

प्रत्युवाच मम प्रीत्या
व्रतिनां ब्रह्मचारिणाम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
प्राणलिङ्गेषु ते प्रभो ॥ १५३ ॥

धूपधूम्रं[5]भक्तियुत[6]
दत्त्वा शङ्करसन्निधिम् ।
गच्छ त्वमिति[7] तद्वाक्यं
श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः[8] ॥ १५४ ॥

---

1 रीति—च
2 तत्पुरुषमुखोद्भूत —च
3 तत्त्वशास्त्रविशारदः—क. ख. ग
4 चमोखिलं—क. ख. ग
5 धूम्र—च
6 युक्तं—क. ख. ग
7 गन्तव्य इति—क. ख.ग
8 समन्वितम्—च

ओहिलो[1] धर्मतत्त्वज्ञः
प्रमथाचारवेष्टितः ।
वीरमाहेश्वरान् सर्वान्
वीरव्रतसमन्वितान् ॥ १५५ ॥

याचयामास तद्भूपं
अष्टगन्धसमन्वितम्[2] ।
भूरुद्रजङ्गमानां च[3]
प्राणलिङ्गेषु भक्तितः ॥ १५६ ॥

दत्त्वा दिनेदिने गौरि
कस्मिन् काले[4] गते सति ।
ओहिलस्य[5] महाभक्तिं
को वा वक्तुं सुराधिपः ॥ १५७ ॥

समर्थो भवतीत्याहुः
नारदाद्याः सुरर्षयः ।
तेषां तद्वचनं[6] श्रुत्वा
सुत्रामा सुरसेवितः ॥ १५८ ॥

---

1 ओखिलो–क, ख, ग
2 समन्वितः–च
3 भूरुद्रणा जङ्गमानां–क, ख, ग
4 केचित्काले–क, ख, ग
5 ओखिलस्य–क, ख, ग
6 तुवचन–च

विगृह्य त[1] महाश्रेष्ठं
ओहिलं[2] प्रति हे प्रिये ।
नृणां पुष्टिप्रदातव्यं
अन्नं पर्जन्यसम्भवम् ॥ १५९ ॥

तदन्नमोहिलस्यापि[3]
प्रसादमुखपूर्वकम्[4] ।
वीरमाहेश्वराणां च
प्रसादक्रियपूर्वकम् ॥ १६० ॥

इत्याह स्वर्गनाथोऽसौ[5]
अन्नमूलं[6] महत्करम् ।
जगतां बीजपूरस्थं
मेघवृन्दं निरोधयेत्[7] ॥ १६१ ॥

लयतत्त्वाग्निसंयुक्तान्
मेघराशिगतान् प्रिये !
द्वादशार्कास्त[8]दाहूय
विसृज्य गगनान्तरे[9] ॥ १६२ ॥

---

1 विगृह्यकं–च
2 ओखिल–क. ख. ग
3 मोखिलस्यापि–क. ख. ग
4 क्रियापूर्वकम्–च
5 स्वर्गसौ–च
6 स्वर्गपदसावन्नमूलं––घ
7 न रोधयेत्–च
8 कास्त––क. ख. ग
9 सृजताम्बरमण्डले––घ. च

अवनीमध्यतोयानां
दाहकान् किरणानिति[1] ।
वापीकूपतटाकानि[2]
सप्तपातालभेदनैः ।
किरणैः कीलकोपेतैः
शोष्यन्ते ते मम प्रिये ॥ १६३ ॥

दुर्भिक्षं[3] जायते लोके[4]
ओहिलस्य[5] प्रभावतः ।
तद्देशं सम्पदोपेतं
नानाधान्यसमन्वितम्[6] ॥ १६४ ॥

भवतीत्याह देवेशः
इदं वचनमब्रवीम् ।
ओहिलस्य[7] महाभक्तिं
धूपशील समन्वितम् ॥ १६५ ॥

वर्णितुं वासुदेवो वा
न समर्थो भवेत् किल ।

---

1 अवनिमध्यतोयानिकृत्यान्यपि–क. ख. ग
2 तटाकादीन् घ. च
3 दुर्भिक्ष–घ. च
4 लोखिकः–घ. च
5 औहिलस्य–क. ख. ग
6 तद्देशः सम्पदोपेतः
नानाधान्यसमन्वितः–घ.
7 ओखिलस्य–क. ख. ग

वीरमाहेश्वरस्यास्य[1]
ओहिलस्य तपोदयम् ॥ १६६ ॥

वर्णितुं ब्रह्मणोऽस्यापि
मानक्षीणं भवेत् किल[2] ।
तस्य प्रभावं तत्त्वं
शिवशीलव्रतान्वितम्[3] ॥ १६७ ॥

वर्णितुं यमदिक्पालाः
असमर्था भवन्ति वै[4] ।
इति चिन्ताकुलोपेतः
शौरिं[5] वनमालिनम् ॥ १६८ ॥

शङ्खचक्रगदापद्म-
धारिणं श्रीपतिं हरिम् ।
इन्द्रो[6] ददर्श तं तस्य
ओहिलस्य[7] महात्मनः ।
प्रभावं प्रमथाचार-
शीलभक्तिसमन्वितम् ॥ १६९ ॥

---

1 वीरमाहेश्वराचार–क. ख. ग

2 ब्रह्मणस्यापि–क ख. ग

3 अभूत् किल–घ.च

4 भवन्,यहो–घ. च

5 शार्ङ्गिण–घ. च

6 सेन्द्रः–क. ख. ग

7 ओखिलस्य–क. ख. ग

विस्तार्य हरिरिन्द्रस्तौ[1]
कीटकं प्राणकण्टकम् ।
कुर्वाते हि प्रिये गौरि[2]
ओहिलस्य[3] महात्मनः ॥ १७० ॥

पादमध्ये प्रतिष्ठाप्य
पेततुर्भुवनान्तरे ।
हर[4] शम्भो महादेव
विश्वेशामरवल्लभ ॥ १७१ ॥

भूरुद्रजङ्गमानां च[5]
धूपशीलव्रतं तव ।
अधीनमिति[6] तत्त्वज्ञः
रेणुकोऽप्या[7]गमान्वितः ॥ १७२ ॥

इत्याह भगवन् शम्भो
आह[8] कष्टं मम प्रभो !
दापयेत् केन पापेन
मायामोहधृतस्य मे[9] ॥ १७३ ॥

---

1 रिन्द्रौतौ—क. ख. ग
2 कुर्वावहे आवां गौरि—घ.च
3 औखिलस्य—क. ख. ग
4 हार—च
5 भूरुद्राणांजङ्गमानां—घ. च
6 अधीनाविति—क ख. ग
7 रेणुकः आ—क ख. ग
8 इत्याह—घ. च
9 मौहयुतस्य मे घ. च

हर[1] शम्भो महादेव
अनाथं[2] शरणागतम् !
धूपशील[3]व्रतमयं
मदनास्त्रविनाशनम् ॥ १७४ ॥

किमुपेक्ष्यसि हे स्वामिन् !
मां प्रतिग्रह[4] साधनम् ।
एतस्मिन्नन्तरे गौरि
यशस्वी पुल्कसाधमः[5] ॥ १७५ ॥

किरातो मृगयासक्तः
मृगबन्धनसाधकः ।
तमोहिलं[6] क्षतयुतं
धूपशीलसमन्वितम् ॥ १७६ ॥

ददर्श शांभवज्ञान-
योगिकेन जनेन मे[7] ।
पादमध्ये क्षतं तेऽपि
भस्मवेष्टनवेष्टितम् ॥ १७७ ॥

---

1 हार–च
2 अनाथ–च
3 देव िंल–क. ख. ग
4 प्रतिग्राह–क. ख. ग
5 पुल्कसोत्तमः:घ. च
6 तमोखिल–क ख . ग
7 ज्ञानं योगि ां प्रत्युवाचभोः–घ.च

लभ्यते[1] तस्य तद्वाक्यं
श्रुत्वा लोकत्रयोत्तमः ।
ओहिलो[2] वेदवेदाङ्ग-
वेद्यो ब्रह्मर्षिसेवितः ॥ १७८ ॥

शिवव्रती [3]प्राणलिङ्गी
प्रसादब्रह्मसेवितः[4] ।
भस्माहारो [5]बलयुतः[6]
प्रत्युवाच किरातकम् ॥ १७९ ॥

तस्य तद्वचनं[7] श्रुत्वा
किरातो धर्ममानसः ।
आत्मचिन्तां[8] भक्तियुतां[9]
धत्से ते त्वं महाव्रत[10] ॥ १८० ॥

---

1 लभते वा--घ- च
2 ओखिलो–घ
3 शीलव्रती–घ. च
4 भावितः–घ·च
5 भस्माहार–घ
भस्माहार–च
6 बलायुतः--च
7 इति तस्यवचः–घ·च
8 आत्मोचितां घ ·च
9 भक्तिमेतां--घ. च
10 धत्ते तेहिप्रिये शुभे--क· ख. ग

किरात उवाच—[1]

हे स्वामिन् देवताः सर्वाः[2]
भवन्तं सत्त्व[3]साधकम् ।
विगृह्य यास्यति शिवः
मोचयित्वाऽऽशु[4] कण्टकम् ॥ १८१ ॥

तव पादतले क्रूरं
जघ्नतो निरयो भवेत्[5] ।
तस्य तद्वचनं[6]श्रुत्वा
ओहिलो[7] वसुधातले ॥ १८२ ॥

आहूय देवताः सर्वाः
यमलोकमनीनयत् ।
एतस्मिन्नन्तरे काले
रेणुकाद्याः सनातनाः ॥ १८३ ॥

पुष्पवृष्टिं ववुः सर्वे
मारुताः दक्षिणापगाः[8] ।

---

1 इदंवाक्यं नास्ति—घ. च
2 सर्वे—क. ख. ग
3 त्वां प्रतितत्त्व—क. ख. ग
4 विगृह्ययटये सुरस्तोमैः कण्टकं लोककण्टकम्—क. ख. ग
5 जघ्नतुर्दुष्टबुद्धितः—क. ख. ग
6 तस्येतिवचनं—घ. च
7 वो खिलो—क. ख. ग
8 मारुतो दक्षिणापगः—क. ख. ग

तस्य मूर्ध्नस्तले[1] गौरि !
आच्छाद्य रविरश्मयः ॥ १८४ ॥

ओहिलं[2] तत्त्वनिपुणं
वेदमूर्ध्निप्रतिष्ठितम् ।
बाधां[3] कुर्वन्ति तं श्रेष्ठं
इति तत्त्वार्थपारगाः ॥ १८५ ॥

हेरम्बषण्मुखमुखाः[4]
प्रमथाः ब्रह्मसेविताः ।
आहुमे[5] निकटं गत्वा
रोषावेशमनोरताः[6] ॥ १८६ ॥

तस्यार्कस्य[7] मनोवृत्तं
लक्षयोजनमायुतम्[8] ।
अग्नितत्त्वं[9] नवदलं
सौरबिम्बं वरानने ॥ १८७ ॥

---

1 मूर्ध्नितले-क. ख. ग.
मूर्धस्थले-च
2 ओखिल-क. ख. ग
3 बोधं-च
4 षण्मुखास्सर्वे-क. ख. घ
5 आहुहे-च
6 मनोद्भवाः-क. ख. ग
मनोरथाः-घ
7 तस्यार्थस्य-च
8 मायुकं-क. ख. ग
मायकं-च
9 अग्नितत्त-क. ख. ग

शिशुमारो गणश्रेष्ठः[1]
गलितुं क्रोधभावतः[2] ।
मनोऽधत्तेति तान्[3] सर्वान्[4]
गणान् प्रति सुराधिपः[5] ॥ १८८ ॥

शस्त्र[6]वृष्टिंर्लोकहन्ता[7]
ववर्ष वसुधातले ।
वीरमाहेश्वराणां च
विरोधं वीर्यनाशनम्[8] ॥ १८९

देवतानां समाजेषु
सिद्धिर्भवति तादृशी[9] ।
शस्त्र[10]वृष्टिं ऋषिश्रेष्ठः[11]
रेणुकः तत्त्वपारगः[12] ॥ १९० ॥

---

1 तं मण्डलं शिशुलमारो-घ. च
2 भावितः–च
3 धत्तेऽर्तान्–घ
4 मनो दत्तेति ताः सर्वाः
5 सुराधिपान्–च
6 अस्त्र–घ. च
7 लोकहता-ग.
8 विरोधो वीर्यनाशनः–घ. च
9 तादृशम्–क' ख.
10 अस्त्र–स्त्र. च
11 विलोक्याशु–घ. च
12 सत्त्वभावितः–घ.

भस्मी[1]करोति मे[2] कान्ते !
जघानैन्द्रं[3] शरासनम् ।
बबन्ध[4] नागपाशेन
जलमध्ये विनिक्षिपेत्[5] ॥ १९१ ॥

ब्रह्मास्त्रेण[6] रवेर्बिम्बं
जघानाशु[7] वरानने ।
घण्टाकर्णो नखाग्रेण[8]
विष्णुलोकं सुरान्वितम् ॥ १९२ ॥

चिच्छेद मे प्रिये गौरि !
ब्रह्माणं ध्यानपूर्वकम्[9] ।
सत्यलोकाधिपं श्रेष्ठ[10]
सत्यज्ञानविवर्जितम् ॥ १९३ ॥

---

1 भस्मं–च
2 हे–घ
3 नैन्द्र–क. ख. ग
4 सम्बध्य–घ. च
5 तं न्यक्षिपत्–च
तं निक्षिपेत्–च
6 शिंशुमारः–घ. च
7 जघानाशं–क. ख. ग
8 नखाग्रेग मनोक्रोधात्–क. ख
9 गजकर्णोऽपिब्रह्माणं
स्वात्मगर्वितम्–घ. च
10 सत्यलोकं परिभ्राम्य–च

जलमध्ये प्रतिष्ठाप्य
ओहिलं[1] तत्त्वपारगम् ।
आरुह्य पुष्पकं दिव्यं
रुद्रकन्य(ा)समुद्भवम् ॥ १९४ ॥

ब्रह्माण्डकटहादूर्ध्वं
रेणुकेन महात्मना[2] ।
श्रूयते मे प्रिये[3] गौरि !
इदं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १९५ ॥

तदारभ्य सुरस्तोमाः[4]
प्रमथांस्तत्त्वपारगान् ।
सेवयन्ति मम प्रीत्या
विष्णुब्रह्मेन्द्रदेवताः ॥ १९६ ॥

चारित्रेण च को युक्तं[5]
इतिहासं सुविस्मितम्[6] ।
महात्मनः तस्य कृतं[7]
धूपशीलसमन्वितम् ॥ १९७ ॥

---

1 ओखिळ–क. ख. ग
2 रेणुकः प्रमथैः सह–घ
रेणुकैः ,, –च
3 प्राप ते शृणु हे–घ
प्राप्यते ,, –च
4 सुराः सर्वै–घ
सदा ,,–च
5 ओहिलाराध्यचरितै–घ- च
6 पठन्ति ते–घ
7 कृतिं–घ च

पठन्ति[1] ये जनाः सर्वे
दृढभक्तिसमन्विताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षाकाले दिने दिने ॥ १९८ ॥

ते यान्ति मम सायुज्यं
प्राप्नुवन्ति न संशयः[2] ।
इति मन्त्रेण तद्धूपं
प्राणलिङ्गेषु[3] भक्तितः ॥ १९९ ॥

दत्त्वा सर्वगुणोपेतं
पीठमध्ये प्रतिष्ठितम् ।
शक्तिगोलकसंयुक्तं
पञ्चसूत्रसमन्वितम् ॥ २०० ॥

अष्टबन्धान्वितं सूक्ष्मं
कन्थासीनं[4] सुरार्चितम् ।
सव्यहस्ते प्रतिष्ठाप्य
रुद्रसूक्तेन[5] भक्तितः ॥ २०१ ॥

दत्त्वा सर्वगुणोपेतं
पीठमध्ये प्रतिष्ठितम् ।

---

1 पठयन्ते-क. ख.ग

2 गौरि चात्र न संशयः-घ. च

3 प्राणलिङ्गाय-घ. च

4 कथाशीलं-घ

5 लिङ्गसूक्तेन-घ. च

शक्तिगोलकसंयुक्तं
पञ्चसूत्रसमन्वितम्[1] ॥ २०२ ॥

आचार्यो मन्त्रवीर्येण[2]
पूजयेत् तत्त्वपारगः ।
ऋत्विग्भिः सह मन्त्रेण
गोघृतेन समन्वितम् ॥ २०३ ॥

दीपं कर्पूरसंयुक्तं
नववर्तिसमन्वितम् ।
दत्त्वा प्रदक्षिणं कृत्वा
आचार्यं तत्त्वपारगम्[3] ॥ २०४ ॥

पूजयेत् तत्त्वभावेन
धारयेत् तां महाव्रताम् ।
दीक्षां माहेश्वरोपेतां
निशाकाले[4] जितेन्द्रियः ॥ २०५ ॥

पादोदकप्रसादेन
पवित्रेण समन्वितः ।
गुरोः कराब्जसम्भूतः[5]
मन्त्रकायो[6] वरानने ॥ २०६ ॥

---

1 इद पद्यं–घ. पुस्तके नदृश्यते ।
2 आचार्यमन्त्र–क. ख. ग
3 आचार्यस्तत्त्वपारगः–घ. च
4 निशि काले–क. ख.ग
5 कमलसम्भूतः–क. ख. ग
6 मन्त्रकामो–क. ख. ग

अहं भवामि मे प्रीत्या
गुरोर्वेदान्तपारगात्[1] ।
आज्ञां गत्वा[2] महाशीलं
पादोदकसमन्वितम् ॥ २०७ ॥

प्रसादतत्त्वनिरतं
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ।
भक्तिक्रियाज्ञानरूपं
यो लभेत् [3]ब्रह्मसेवितः ॥ २०८ ॥

स भवेन्मम सायुज्यं
याति सत्यं वरानने ॥ २०९ ॥

समस्तसम्पत्समवाप्तिसाधनं
महेश्वरप्राणयुतं मनोहरम् ।
पादोदकं मन्त्रयुतं गुरूणां[4]
माहेश्वराचारकृतं नरोत्तमाः[5] ॥ २१० ॥

ये सर्वदा भाववशैक[6]चेतनात् [7]
तत्त्वात्मकं पावनमन्त्रबीजम् ।

---

1 पारगम्–क. ख. ग
2 कृत्वा–क. ख. ग
3 भवेत्–क. ख. ग
मम–घ, च
4 प्रसादं–घ
5 नरोत्तमः–च
6 वश्यैक–क. ख.
7 चेतना–च

वहन्ति लोके वदनस्थितं गुरोः
विराजमानं विपुलं यथा तथा ॥ २११ ॥

मन्त्राक्षरन्यासमनोहरां परां
षडक्षरीं वेदशिखां वरानने !
ये मानवाः सन्ततमन्त्रमातरं
वहन्ति लोके प्रमथोत्तमाः सदा[1] ॥ २१२ ॥

भवन्ति तैः तत्त्वजनोत्तमैः शुभैः[2]
विज्ञानमानन्दशुभान्वितं परम् ।
ममान्तिकं विष्णुविवर्जितं प्रिये
ब्रह्मेन्द्ररुद्रानलभद्रसेवितम् ॥ २१३ ॥

कृतं सुराणां समरे विनाशनं
मनोभवं[3] ज्ञानवशं सुखान्वितम् ।
वेदान्तवेद्यं जगतां जयोत्करं
कैलासवासं ककुदस्थिते[4] प्रिये ॥ २१४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षां मोक्षार्थसाधिकाम् ।
कांक्षन्ति प्रमथाः सर्वे
न कांक्षन्ति जनाधमाः ॥ २१५ ॥

---

1 प्रमथा भवेयुः–घ च
2 भवन्ति सत्त्वजनाः शुभाः– . च
3 मनोद्भवं–क. ख ग
4 ककुदस्थितं–च

दीक्षाहीनं नरं गौरि !
प्राकृतं जडदेहिनम् ॥

अग्निसंस्कारसंयुक्तं
विप्रगोत्रोद्भवं प्रिये[1] !
प्रेतलिङ्गाङ्कितं देहं[2]
पीठपूजासमन्वितम्[3] ॥ २१६ ॥

पञ्चसूतकसंयुक्तं
प्राणलिङ्गविवर्जितम् ।
पादोदकेन विरतं[4]
प्रसादेन बहिष्कृतम् ॥ २१७ ॥

गूढपापसमासक्तं
भस्मीकुर्वन्ति[5] मानवाः[6] ।
तप्तसंस्कारसंयुक्तं
ऊर्ध्वपुण्ड्रसमन्वितम् ॥ २१८ ॥

चतुर्वेदधरं विप्रं
दृष्ट्वा तं मानवाधमम्[7] ।

---

1 ऋषिगोत्रसमुद्भवम्–घ
2 पीठलिङ्गाङ्किततनुम्–घ
 ,, तनुः–च
3 समन्वितः–च
4 रहितं–घ. च
5 भस्म कुर्वन्ति–घ
6 नारकाः–घ
7 दुष्टात्मानं नराधमम्–घ.च

ये च्छेदयन्ति मे प्रीत्या
दीक्षाकाले शुभान्विते ॥ २१९ ॥

ते यान्ति मम सायुज्यं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम्[1] ।
द्विजाधमं तप्तमुद्रा[2]-
तप्तलाञ्छनवेष्टितम् ॥ २२० ॥

दीक्षाकाले प्रिये गौरि[3] !
दृष्ट्वा[4] शैवकुलोद्भवाः ।
न ताडयन्ति मे प्रीत्या
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥ २२१ ॥

द्विजेभ्यो भक्तिभावेन
दीक्षाकाले नराधमाः ।
दापयन्ति सदा[5] गौरि
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥ २२२ ॥

हस्तमस्तकसंयोगां[6]
वीरमाहेश्वरीं कृताम् ।

---

1 वदाम्यये–घ. च
2 तप्तमुद्र–क. ख. ग
3 हैमवति–घ. च
4 वीर–घ
5 धनं–घच
6 सयोगं–च

गुरोः कराब्जसम्भूतां[1]
अद्वैतब्रह्मसाधिकाम्[2] ॥ २२३ ॥

तां दीक्षां मानवाः सर्वे
ऋषिगोत्रसमुद्भवाः ।
मोहबुद्ध्या पापयुताः
निन्दन्ति वसुधातले ॥ २२४ ॥

ते यान्ति रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ[3] ।
वीरमाहेश्वरादन्यत्[4]
नास्ति वेदत्रये प्रिये ॥ २२५ ॥

वीरमाहेश्वरं श्रेष्ठ-
मिति वेदऋचः सदा ।
स्तोत्रं कुर्वन्ति हे गौरि !
को वा निन्दां करोति ह[5] ॥ २२६ ॥

वीरमाहेश्वराधीनं
कैलासं जन्मवर्जितम् ।

---

1 कमकसम्भूतां—क. ख. ग
2 साधकाम्—क ख. ग
3 दिवाकरं—घ
4 दन्या—च
5 यमू—क. ख. ग
हा—घ

इत्याहुः ऋषयः सर्वे
रेणुकाद्याः पुरातनाः ॥ २२७ ॥

धर्मशास्त्रपुराणानि
ब्रह्म[1] विष्णुव्रतान्यपि ।
वीरमाहेश्वरं शान्तं
त्यक्त्वा ब्रह्मर्षयः सदा ॥ २२८ ॥

स्तोतुं तत्त्वसमोपेताः
कांक्षन्ति गगनान्तरे ।
इत्याहुर्वेदमन्त्राणि[2]
इदं सत्यं वरानने ॥ २२९ ॥

भूरुद्र[3] जङ्गमं श्रेष्ठं
भुवनेषु बुधोत्तमः[4] ।
तत्तत्त्वं तत्त्वराजानं
वीरमाहेश्वरान्वितम्[5] ॥ २३० ॥

बोधयामि सदा गौरि
शृणु भक्तिसमन्विते ।

---

1 मोह–क. ख. ग
2 वेदमन्त्राढ्याः–घ. च
3 भूरुद्रं–घ. च
4 बुधोत्तमाः–घ
5 श्वरान्वितः–च

वीरमाहेश्वराणां च
　　ललाटेषु गणाधिपाः[1] ॥ २३१ ॥

आवासयन्ति सततं
　　इत्याहुर्मन्त्रदेवताः ।
तेषां मूर्ध्नस्तले [2]गौरि !
　　वेदा[3]नामावलिस्सदा ॥ २३२ ॥

आवासयामास चेति[4]
　　स्मृताः[5] तत्त्वार्थपारगाः ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[6]
　　जटाजूटे गणाधिपाः ॥ २३३ ॥

वासयामास मे प्रीत्या
　　सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[7]
　　जिह्वामूले स्वराधिपाः ॥ २३४ ॥

डिण्डिमा रविडिम्बाद्याः
　　व्यञ्जनाक्षरनायकाः[8] ।

---

1 बुधोत्तमाः—घ. च
2 मूर्ध्नितले—क. ख. गमूर्ध्नस्तले—च
3 वेद—च
4 मास इति—ख.क. ग
5 तत्त्व—क. ख. ग
6 भूरुद्रजङ्गमानां च—क. ख. ग
7 भूरुद्रजङ्गमानां च—घ.च
8 द्याध्यक्षखण्डपुरस्कृताः—क. ख ग

कमलाश्रमुखाः सर्वे[1]
वासं कुर्वन्ति हे प्रिये ॥ २३५ ॥

भूरुद्रजङ्गमानां च[2]
भुजेषु बुधपीडिताः ।
असिताङ्गो गुरुश्चण्ड[3]-
क्रोध उन्मत्तभैरवः ॥ २३६ ॥

आवासयन्ति सततं
लयकोटिप्रभायुताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
हृन्मध्येषु[4] शुभान्विताः ॥ २३७ ॥

मोक्षलक्ष्मीः सदा गौरि !
आवासं आस हे प्रिये ! (?)
भूरुद्राणां जङ्गमानां[5]
नाभौ तिष्ठन्ति वायवः ॥ २३८ ॥

तेषां कोटितले रुद्राः
तिष्ठन्ति सुरपूजिताः ।
वीरमाहेश्वराणां च
पृष्ठेषु ऋषयः स. ॥ २३९ ॥

1 'सर्वे' इति नास्ति—क. ख. ग
2 भूरुद्राणां जङ्गमानां—घ च
3 अस्ति ङ्गो रुशण्ड—क. ख. ग
असितारुरुश्चण्ड—च
असिताङ्गागुरुश्चण्डः—च
4 हृदयाब्जे—घ. च
5 भूरुद्रजङ्कमानां च—क. ख. ग

तिष्ठन्ति मम भक्त्या च
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
गुह्यमध्येषु सागराः ॥ २४० ॥

आवासयन्ति सततं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
ऊरुमध्येषु पर्वताः ॥ २४१ ॥

तिष्ठन्ति मे[1] प्रिये गौरि !
तेषां भक्तिमती शृणु[2] ।
वीरमाहेश्वराणां च
ऊरुमूलेषु शाम्भवाः ॥ २४२ ॥

आवासयन्ति सततं
सत्यज्ञान[3] निरञ्जनाः
भूरुद्राणां जङ्गमानां[4]
जङ्घासु[5] गुरुपूजिताः ॥ २४३ ॥

हेरम्बस्कन्दवीराद्याः
प्रमथास्तत्त्वपारगाः ।

---

1 हे—क. ख. ग
2 तेषां भक्तिसमन्विते—क. खग
3 नित्यज्ञान—घ. च
4 भूरुद्रजङ्गमानां च-क. ख. ग
गुल्फेषु—क. ख. ग.

आवासयन्ति सततं
शृणु भक्तिसमन्विते[1] ॥ २४४ ॥

भूरुद्राणां जङ्गमानां[2]
गुल्फेषु[3] जनसेविताः ।
अग्निष्वात्तादिपितरः
तिष्ठन्ति[4] सर्वदा प्रिये ॥ २४५ ॥

भूरुद्राणां जङ्गमानां
पादमध्येषु पार्वति ।
गङ्गाद्याः सर्वदा नद्यः
तिष्ठन्ति स्वस्वरूपकाः ॥ २४६ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
नखमध्येषु नाकिनः ।
आवासयन्ति सततं
ध्रुवं गौरि ! वरानने[5] ! ॥ २४७ ॥

तेषां पादतले विष्णुः
ब्रह्मसूर्यादिसेवितः[6] ।

1 भक्तिमति प्रिये–घ. च
2 भूरुद्रजङ्गमानां च–क. ख. ग
3 जङ्घेषु–क. ख. ग
4 तिष्ठन्ते–क. ख. ग
5 भूरुद्रजङ्गमानां च–क. ख. ग
6 गौरि विचार्यय:–घ
विचारय–च
6 विष्णु.... सेविताः–च

वासं करोति मे प्रीत्या
रमाभार्यासमन्वितः[1] ॥ २४८ ॥

पादाग्रे वाक्पतिस्तेषां
तिष्ठेत् तत्त्वव्रतान्वितः[2] ।
पादपृष्ठेषु हे गौरि !
ब्राह्मीमुख्यास्तु मातरः[3] ॥ २४९ ॥

आवासयन्ति सततं
शुद्धसात्त्विकभावतः ।
[4]वीरमाहेश्वराणां च
रोमकूपेषु सर्वदा ॥ २५० ॥

ब्रह्माण्डततयः सर्वाः
तिष्ठन्ति बुधसेविते !
त्वङ्मध्येषु सदा गौरि !
तेषां वेदविदां प्रिये ! ॥ २५१ ॥

वालखिल्यादिऋषयः
वासं कुर्वन्ति भक्तितः ।

1 रमारमणिसेवितः–क. ख. ग

2 व्रतान्विते–क. ख. ग

3 मातृगौः भागःब्रह्मपूर्विकाः–क. ख. ग

4 इत आरभ्य "बुधसेविते" इत्यन्तः भागः उत्तरत्र "चम्पकनासिके" इति पद्यानन्तरं–घ. च.
पुस्तकयोः दृश्यते ।

चर्मकेशेषु[1] हे गौरि !
शेषानन्तपुरस्कृताः ॥ २५२ ॥

सरीसृपाः सदा[2] तेषां
तिष्ठन्ति जयकांक्षिणः
गन्धर्वाः किन्नराः सर्वे
तेषां मज्ञान्तरेषु च[3] ॥ २५३ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
अस्थिमध्येषु दानवाः ।
वासं कुर्वन्ति सततं
अहो पीनपयोधरि[4] ॥ २५४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
रुधिरेषु सुरोत्तमाः ।
उन्मज्ञयन्ति सततं
चित्रं चम्पकनासिके[5] ॥ २५५ ॥

---

1 चर्ममध्येषु–क. ख. ग

2 तदा–क. ख.ग

3 मज्यान्तरेषु मे–क. ख.ग
मज्जान्तरेषु ये–घ
इतः परं च.पुस्तके
'आवासयन्ति सततं शृणु
भ्रकुटिविभ्रमे । इत्यधिकं दृश्यते ।

4 पयोधरे–च. घ

5 वासिके–क.ख. ग
'वीर' 'वीर, इमौश्लोकौ च.पुस्तके पौर्वापर्येण वर्तेते !

देवदेव जगन्नाथ
लोकाभीष्टप्रदायक[1] ।
वीरमाहेश्वराणां च
कवचं मोक्षप्रदायकम् ॥ २५६ ॥

नृणां भक्तिकरं दिव्यं
भूतप्रेतविनाशनम् ।
ज्वरक्षयकरं श्रेष्ठं
वक्तुमर्हसि हे[2] प्रभो ॥ २५७ ॥

अहं वा शिशुमारो वा
रेणुको वा सनातनः[3] ।
षण्मुखो वा इदं पुण्यं[4]
कवचं मोक्षदायकम् ॥ २५८ ॥

वहेयुन्या[5] समन्त्रेण[6]
शृणु त्वं[7] मत्स्यलोचने ।
पादौ महेश्वरः पातु
पादमध्ये सुराधिपः ॥ २५९ ॥

---

1 फलप्रद्–च
2 मे–च
3 वा गजश्रतिः–घ
वा गजाश्रुतिः–च
4 घण्टाकर्णः षण्मुखो वा–घ. च
5 वहेमेन्या–घ. च
6 न्य यमन्त्रेण–क. ख
7 वहत्वं–घ. च

पादाग्रे जङ्गमः पातु
रक्ष मां करुणाकर[1] !
गुल्फे गुरुः सदा पातु[2]
जङ्घे भक्तमुखोद्भवाः ॥ २६० ॥

रक्ष रक्ष सुरश्रेष्ठ
ऊरू मे करुणाकरः ।
कटिं मे कामसंहारी[3]
पातु मे तत्त्वसागरः ॥ २६१ ॥

गुह्यं पातु सदानन्दः[4]
ध्यानगम्यो जगत्पतिः[5] ।
मेढ्रं महेश्वराचार-
वीरव्रतसमन्वितः ॥ २६२ ॥

पायुं मे पातु सततं[6]
नाभिं रक्ष कृपानिधे ।
उदरं पातु मे स्वामी[7]
वीरमाहेश्वरः शिवः[8] ॥ २६३ ॥

---

1 करुणाकरः–घ. च
2 गुल्फौ गुरो सदा पाहि–घ. च
3 कामसंहारः–क. ख. ग
4 सदानन्द–क. ख. ग
5 ममाण्डं जगतां पतिः–घ. च
ध्यानगम्यो जगत्पितः–क. ख
6 पातु मे पापसंहार–क. ख. ग
7 स्वामिन्–क. ख. ग.
8 घण्डिकां मे शिवोऽवतु–घ. च

हृदयं पातु सर्वज्ञः[1]
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम्[2] ।
स्तनौ रक्ष सुरश्रेष्ठ
देवदानवपूजित[3] ॥ २६४ ॥

कण्ठं मे पातु विश्वेशः[4]
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितः[5] ।
कक्षौ मे कालसंहारः[6]
पातु चन्द्रशिखामणिः[7] ॥ २६५ ॥

बाहू मे पातु पापघ्नः[8]
पञ्चसूतकवर्जितः[2] ।
करौ पातु सदानन्द-
ध्यानधारणधार्मिकः[10] ॥ २६६ ॥

---

1 सततं–घ. च

2 प्रतिष्ठितः–क. ख. ग

3 पूजितः–च

4 विश्वश

5 प्रतिष्ठित–क. ख. ग
प्रतिष्ठितम्–च

6 सहार–क. ख. ग

7 शिखामणे–क. ख, ग

8 बाहू मम भुजौ पातु–घ- च

9 बाहू मेपातु पाप घ्न–क. ख

10 वर्जित–क. ख. ग

10 धार्मिक–क. ख. ग.

प्रकोष्ठे[1] मे प्राणनाथः[2]
प्रणवब्रह्मसाधकः ।[3]
मणिबन्धौ मामायह-
लीलानाटकविग्रहः[4] ॥ २६७ ॥

पातु मे जगतां स्वामी[5]
तत्त्वसाधनसाधकः[6] ।
चुबुकं पातु मे विद्वान्
मन्त्रकायमनोहरः[7] ॥ २६८ ॥

वक्त्रं मे पातु वेदान्त-
वेदगम्यः सदाशिवः[8] ।
जिह्वां मेरक्षत्वक्षघ्नः[9]
यक्षदानवसेवितः[10] ॥ २६९ ॥

---

1 कूर्परौ—घ
कूर्परे—च
2 प्राणनाथ—क. ख. ग
3 साधक—क. ख. ग
4 विग्रह—क. ख. ग
5 स्वामिन्-क. ख. ग
6 चाङ्गुलीस्तत्त्वसाधकः—घ
7 ग्रीवां विद्वान् मन्त्रकायः
चुबुकं सर्वदाऽवतु—घ
चुम्बकं ,, —च
8 वेदगम्यसदाशिव—क. ख. ग
9 रक्ष रक्षोध्नं—क. ख. ग
रक्षत्वघ्नोऽ —च
10 सेवित—क. ख. ग

रदनान् पातु मे स्वामी[1]
सर्व[2]शीलसमन्वितः[3] ।
अधरं पातु मे विद्वान्
[4]विलयस्थितिवर्जितः ॥ २७० ॥

ओष्ठं मे प्रमथाचारः[5]
दन्तमूलं तु निर्भ्रमः[6] ।
दन्ताग्रमीषणध्वंसः[7]
भ्रुवौ मे[8] पातु शङ्करः[9] ॥ २७१ ॥

भ्रूमध्यं विश्वजनकः[10]
पातु मे पार्वतीप्रियः[11]
ललाटं पातु मे स्वामी
प्रसादब्रह्मसाधकः[12] ॥ २७२ ॥

---

1 रदनाः पातु हे स्वामिन्–क. ख. ग
2 बर्श–घ
3 समन्वित–क. ख. ग
4 'विश्व' इति अधिकं–घ
5 चार–क. ख. ग
6 भ्रमनिर्मोहनाशन–क. ख. ग
7 ईषणत्रयविध्वंस–क. ख. ग
8 भ्रवौ, च–क. ख. ग
शङ्कर–क. ख. ग
जनक–क. ख. ग
11 प्रिय–क. ख. ग
12 घ–शङ्क ब्रह्मप्रसादकः

शिरः पातु शिवध्यान-
मन्त्रतन्त्राक्षरान्वितः[1] ।
पातु पृष्ठं पवित्राङ्गः[2]
पञ्चब्रह्मपितामहः[3] ॥ २७३ ॥

त्वचं मे पातु पापघ्नः[4]
कुण्डलीधारधार्मिकः[5] ।
चर्म मे पातु चण्डाग्निः[6]
कोटिसूर्यप्रभान्वितः[7] ॥ २७४ ॥

मांसं मे पातु सर्वज्ञः[8]
रसं पाप दवीदवः[9] ।
रुधिरं पातु मे रुद्रः[10]
जपमालासमन्वितः[11] ॥ २७५ ॥

मेदो मे पातु षट्त्रिंश-
त्तत्त्वशोधनदीपकः[12]

---

1 न्वित–क. ख. ग
2 त्राङ्ग–क. ख. ग
3 कङ्कालं ब्रह्मणोऽङ्गकः–घ
4 पापघ्न–क. ख. ग
5 धार्मिक–क. ख. ग
6 चण्डाग्नि–क. ख. ग
7 रोमकोटिरविप्रभः–घ
8 हे स्वामिन्–क. ख. ग
9 पापारण्यदवानल–क. ख. ग
10 रुद्र–क. ख. ग  मम रुद्राक्षः–घ
11 जपमालाकरोऽवतु–घ
12 दीपक–क. ख, ग

मज्जां मे रक्ष[1] दाक्षाग्नि[2]-
नाशनत्रयलोचन[3] ॥ २७६ ॥

वसां पातु मदद्वन्द्व-
मायामिथ्याविनाशनः ।
अस्थि मे सर्वनाकेन्द्र-
स्तूयमानपदाम्बुजः[4] ॥ २७७ ॥

वामभागं मनः सूत्रं[5]
लयदीपकसाधनः[6] ।
ममाव्यान्मन्त्रलंन्य च
तन्त्रसाधनदूषितः ॥ २७८ ॥

सव्यं पायान्मम सदा
आत्मानन्दपरायणः[7] ।
प्राचीं दिशं च मे पातु
सर्वब्रह्माण्डनायकः[8] ॥ २७९ ॥

---

[1] रक्षतु–घ
[2] दक्षाग्नि–क. ख. ग
[3] लोचनः–घ
[4] अस्थीनि पातु मे स्वामिन्
पदद्वन्द्वविराजित–क. ख. ग
[5] मनोसूत्र–क. ख. ग
[6] साधन–क. ख. ग
[7] सव्यं मे पातु सर्वज्ञ
आत्मानन्द सदाशिव ॥ क. ख. ग
[8] प्राचीदिश मे दिङ्याङ्ग
रक्ष ब्रह्माण्डनायक–क. ख. ग

आग्नेयीं ककुभं पातु
दक्षाध्वरहरो मम ।
दक्षिणां हि दिशं पातु
मम पञ्चाननप्रभुः[1] ॥ २८० ॥

वारुणीं तु दिशं पातु[2]
मम माधवसेवितः[3] ।
नैर्ऋतिं[4] पातु कर्माब्धि-
बाडबानलतैजसः[5] ॥ २८१ ॥

वायवीं पातु भूरुद्रः[6]
मम प्राणप्रदायकः[7] ।
उत्तरां ककुभं पायात्[8]
ऊर्ध्वरेता इति स्मृतः[9] ॥ २८२ ॥

---

1 आग्नेय मे कुलगुरो
रक्ष दक्षाध्वरोहर !
दक्षिणायां दिशं मेऽपि
पातु पञ्चाननप्रभो—क. ख. ग
2 वरुणायां दिश स्वामिन्—क. ख. ग
3 सेवित—क. ख. ग
नर्ऋत्यां—क. ख. गं
5 तेजस—क. ख. ग
6 वायव्यां पातु भूरुद्र—क. ख. ग
7 प्रदायक—क. ख. ग
8 उत्तरस्यां दिश पातु—क. ख. ग
9 ऊर्ध्वरेतपरिष्कृत—क. ख. ग

दिशमीशान[1]संयुक्तां
पातु मे पादपद्मकः[2] ।
ऊर्ध्वं पायान्मम सदा[3]
पिङ्गकेशजटाधरः[4] ॥ २८३ ॥

पातालं मम सर्वत्र
पायात्पातालमन्दिरः[5] ।
सर्वाङ्गं पातु सर्वेशः
चक्रराजजनाधिपः[6] ॥ २८४ ॥

इदं पवित्रं पापघ्नं
कवचं मन्त्रनायकम् ।
षट्त्रिंशत्तत्त्वनिलयं
षडङ्ग[7]न्यासवेष्टितम् ॥ २८५ ॥

रोगघ्नं रोगिणां लोके
योगिनां मोक्षदायकम् ।
नृणां [8]भक्तिप्रदातव्यं
क्षयापस्मारनाशनम् ॥ २८६ ॥

---

1 मीशान्य–क. ख. ग
2 पद्मक–क. ख. ग
3 ऊर्ध्वं मे रक्ष दिव्याङ्ग–क. ख. ग
4 धर–क. ख. ग
5 पातालं पातु मे स्वामिन्
सर्वव्यापिन् सदाशिवः । क. ख. ग
6 सेर्वेश चक्रराजन् जनाधिप–क. ख. ग
7 चम्पक–क. ख. ग
भुक्ति–घ
मुक्ति–च

भक्तानां भक्तिनिलयं
चतुर्वर्गप्रदायकम् ।
विरक्तानां विरामस्थं
नृपाणां जयवर्धनम् ॥ २८७ ॥

व्रतिनां[1] व्रतदं शुद्धं
भूतप्रेतविनाशनम् ।
दैवतानां समाजेषु[2]
भीमविक्रमवेष्टितम्[3] ॥ २८८ ॥

गन्धर्वाणां समाजेषु
गानस्वरसमन्वितम् ।
प्रमथानां समाजेषु
मन्त्रबीजाक्षरान्वितम्[4] ॥ २८९ ॥

वीरागमसमोपेतं
वीर्यवृद्धिप्रदायकम् ।
प्रत्यर्थिनां समाजेषु
प्राणभेद्यं विजृम्भितम् ॥ २९० ॥

कान्ताजनानां वैचित्र्यं
विभ्रमं ललितं तथा ।

---

1 व्रतीनां—क. ख. ग

2 सम्पूज्येषु—च

3 वेष्टितः—च

4 समन्वितः—घ. च

उद्वहन्तं प्रियं[1] गौरि
सांख्ययोगविवर्जितम् ॥ २९१ ॥

वेदावासं[2] स्वरमयं
जन्मसंसारवर्जितम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षाकाले मम प्रिये ॥ २९२ ॥

ये पठन्ति मम[3] प्रीत्या
ते यान्ति मम मन्दिरम् ।
कवचं न्यासयेद्यस्तु
दीक्षाकाले दिने दिने ॥ २९३ ॥

तस्य दीक्षाफलं प्राप्तं
सर्वागमसमन्वितम् ।
कवचं मन्त्रराजानं
पाठयेत् तत्त्वपारगः ॥ २९४ ॥

स याति मम सायुज्यं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
तस्य प्रभावात् सर्वे ते
तृणीकृतपुरन्दराः[4] ॥ २९५ ॥

---

1 उद्वहत्तत्प्रियं–च
प्रिये-क. ख. ग
2 वेदवासं–घ. च
3 महा–क. ख. ग
4 पुरन्दरः–घ. च

वीरमाहेश्वराः देवि[1]
व्रतं दधति हे प्रिये !
अर्धरात्रौ दिनस्यार्धे[2]
पूर्वाह्णे वा[3] दिने दिने ॥ २९६ ॥

एकवारं त्रिवारं वा
पञ्चवारं तथैव च[4] ।
ये पठन्ति मम[5] प्रीत्या
यान्ति कैलासमुत्तमम् ॥ २९७ ॥

गङ्गास्नानफलं नृणां
कवचं दापयेत् सदा ।
वेदशास्त्रपुराणानि[6]
त्यक्त्वा तं मन्त्रनायकम् ॥ २९८ ॥

यः पठेदाशु मे[7] प्रीत्या
सायुज्यं लभते प्रिये ।
प्राणलिङ्गस्य सांनिध्ये
पाठयेत् तत्त्वपारगः ॥ २९९ ॥

---

1 सर्वे–घ.च
2 दिवसार्ध–घ. च
3 मे–क. ख. ग
4 पञ्चसप्तनवापि वा–घ.च.
5 मे–घ. च
6 पुराणानां–च
7 पठेत्, पत्याशु मे–क. ख. ग

स याति मम सायुज्यं
रुद्रगन्धर्वसेवितम् ।
पादोदकक्रियाकाले
वीरागमसमन्वितम् ॥ ३०० ॥

कवचं वेदवेदाङ्ग-
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठितम् ।
ये स्मरन्ति मम प्रीत्या
त एते प्रमथोत्तमाः ॥ ३०१ ॥

भवन्ति कृतपुण्येन
शृणु त्वं विभ्रमान्विते ।
मन्त्रलक्षणसम्पन्नाः
कुण्डलीधारधार्मिकाः ॥ ३०२ ॥

वीरमाहेश्वराः सर्वे
कवचं मन्त्रनायकम् ।
शिष्येभ्यो मे प्रिये गौरि[1]
उपदेशं जितेन्द्रियाः ॥ ३०३ ॥

कुर्वन्ति ते सुरश्रेष्ठाः
भवन्तीति न संशयः ।
आचार्यं ऋत्विजः सर्वान्
दीक्षाकर्ता जनान्वितः[3] ॥ ३०४ ॥

---

1 जातु घ. च
2 सुराः—च
3 दीक्षाकर्तन् जनान्वितम्—च

प्रदापयति वस्त्राणि
कार्तस्वरयुतान्यपि ।
नव[1]दर्भान्वितं गौरि
पञ्चपल्लववेष्टितम् ॥ ३०५ ॥

नवरत्नसमोपेतं
पादतोय[2]प्रपूरितम् ।
भूरुद्राणां जङ्गमानां[3]
प्रसादब्रह्मसेवितम् । ॥ ३०६ ॥

गुरोः कारुण्यभावेन
अर्चयेत् तत्त्वपारगः ।
दर्भ[4]कङ्कणसंयुक्तं[5]
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ ३०७ ॥

अष्टबन्धसमोपेतं
कन्थाबन्धनभावितम् ।
वीरव्रतान्वितं वीरं
वीरमाहेश्वरप्रियम्[6] ॥ ३०८ ॥

---

1 कुश—क. ख. ग
2 पादोदक—घ. च
3 भूरुद्रजङ्गमानां च—क. ख. ग
4 पर्ण—क. ख.
5 संयुक्तः—च
6 प्रतिष्ठितः—च
7 प्रिये—घ. च

तं शिष्यं प्रतिजग्राह
आचार्योऽप्या[1]गमान्वितः ।
तस्य कर्णे महामन्त्रं
अपसव्ये वरानने ॥ ३०९ ॥

प्रणवब्रह्मसंयुक्तं
नादबिन्दुसमन्वितम् ।
अशेषवेदनिलयं
उपदेशं करोति सः ॥ ३१० ॥

मङ्गलध्वानसंयुक्त[2]-
नृत्तगीतसमन्वितः ।
शङ्खानककथोपेतः
स्तोत्रघोषसमन्वितः[3] ॥ ३११ ॥

गुरोर्वंशावलिध्यान-
वीरमाहेश्वरान्वितः ।
पादोदकप्रसादस्थः[4]
व्रतशीलसमन्वितः ॥ ३१२ ॥

तस्य शिष्यस्य तल्लिङ्गं[5]
नवकन्थासमन्वितम् ।

---

1 आचार्यो शा—क. आ. ग
2 सयुक्तः—घ. च
3 समाकुलः—च
4 प्रसादस्थ—क. ख. ग
5 लिङ्गत—क. ख ग

आदाय दक्षिणकरे
प्रतिष्ठाप्य प्रियान्वितः ॥ ३१३ ॥

पुरातनचरित्रार्थे[1]
मन्त्रतोयेन हे प्रिये !
अभिषिच्य मम प्रीत्या
षट्स्थलब्रह्मिणां प्रियम् ॥ ३१ ॥

भूपावनकरं दिव्यं[2]
प्रसादं रुद्रकांक्षितम्
दत्त्वा ये[3] षोडशैर्दिव्यैः
उपचारैः सुभक्तितः[4] ॥ ३१५ ॥

शिवसूत्रेण तां कन्थां[5]
बद्ध्वा भावगुणान्वितः ।
तस्य शिष्यस्य हृन्मध्ये
देवदेवं सदाशिवम् ॥ ३१६ ॥

शक्तिगोलकसंयुक्तं
खण्डखण्डेन्दुशेखरम् ।

---

1 चरित्राद्य–क. ख. ग
2 तीर्थं–च
3 तु–च
4 समर्चंच–च
5 तं कन्थं–क. ख .ग.

अखण्डपरशु गौरि !
कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥ ३१७ ॥

ब्रह्माण्डसूत्रगर्भस्थं
प्राणलिङ्गमिति स्मृतम्[1] ।
बबन्ध यो गुरुश्रेष्ठः
स भवेदाशु मे प्रियः[2] ॥ ३१८ ॥

प्रमादाद्वा भ्रमाद्वापि
लिङ्गे[3] भिन्न गते सति ।
तव देहं विसृज्याशु
व्रते भङ्ग गते सति ॥ ३१९ ॥

तथा देहं विसृज्याशु[4]
ह्यपदेशं[5] करोति यः ।
स एव मम भक्तो हि
प्राणलिङ्गव्रतान्विते[6] ॥ ३२० ॥

---

1 स्मृतः–क. ख. ग
2 सभवत्याशु हे प्रिये–क. ख. ग
3 अङ्गे–घ. च
4 विसृज्येति–ध. च
5 उपदेश–क. ख. ग
6 इतः परं च.पुंस्तके
निराधारलिङ्गबाह्याः
यत्र तत्र गता मृतिम् ।
तत्र तत्र शिवः स्थित्वा भक्षयते व हे द्विजाः ॥
इत्यधिकं दृश्यते ।

देवदेव जगन्नाथ !
गोलकोत्क्रमणं[1] यदि ।
प्राणलिङ्गे गते देव !
किं करोति गुरुः शिवः[2] ॥ ३२१ ॥

सञ्ज्ञायां[3] बन्धनं कृत्वा
पूर्ववत् धारयेत् सुधीः ।
भक्तिभावेन यद्देहं
त्यक्त्वा जङ्गमसन्निधौ ॥ ३२२ ॥

स याति रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।
गोलकोत्क्रमणं[4] लिङ्ग[5]
दृष्ट्वा पटलवर्जितम् ॥ ३२३ ॥

अभिन्नशक्तिविवरं
शोधयित्वा पुनः पुनः ।
अष्टबन्धनभावेन
पूर्ववत् धारयेत् सुधीः ॥ ३२४ ॥

---

1 कोत्क्रपण–च

2 शिव–क. ख. ग

3 सज्जया–क. ख. ग

4 क्रपणं–च

5 लिङ्ग–क. ख. ग.

अणुमात्रं[1] शक्तिमध्ये
पटलं दधते[2] सति ।
देहं त्यक्त्वा मम प्रीत्या
योऽसौ यतिकुलोद्भवः ॥ ३२५ ॥

स याति मम सायुज्यं
नीलोत्पलसमप्रभे ।
गोलके केशमात्रस्थ
पटलं[3] दधते[4] सति ॥ ३२६ ॥

स तु[5] देहं प्रिये गौरि[6]
त्यजेत् तत्त्वार्थपारगः ।
शक्तिगोलकयोर्मध्ये
तिलार्धे[7] पटलं गते ॥ ३२७ ॥

देहं त्यक्त्वा मम प्रीत्या
योऽसौ प्रमथनायकः ।
भवेत् तत्त्वार्थसम्पन्नः[8]
स याति मम मन्दिरम् ॥ ३२८ ॥

---

1 अनुमात्रं–च
2 दधति–क. ख, ग
3 मात्रस्थे पटले–च
4 दधति–क. ख. ग
5 तस्य–क. ख. ग
6 मम प्रीत्या–घ. च
7 तिलार्धं–क. ख. ग
8 सम्पन्नं–च

पीठमध्ये तिलमात्रं
पटलं दधते[1] सति ।
देहं विसृज्य मे प्रीत्या
यो नो[2] वेदान्तपारगः ॥ ३२९ ॥

स भवेत् तेन[3] भावेन
लभते[4] मम मन्दिरम् ।
पीठाद्दलं ततो[5] लिङ्गं
दृष्ट्वाऽऽगमविवर्जितम्[6] ॥ ३३० ॥

यो जनो भक्तिभावेन
देहं तत्त्वसमन्वितम् ।
त्यजेदसौ महाघोरं
प्रेतराजस्य मन्दिरम् ॥ ३३१ ॥

विण्मूत्रविवरोपेतं
वज्रकीटक[7] वेष्टितम् ।
स याति रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ३३२ ॥

---

1 दधति क. ख. ग
2 न–क. ख. ग
3 केन–च
4 लभ्यते–क, .
5 पीठाद्दलं ततं–घ. च
6 विवर्जितः–क. ख. ग
7 केटक–क. ख. ग. कीलक–च

गोलके रश्मिमात्रस्थं
पटलं दधते[1] सति ।
पञ्चत्वमुद्वहन्तं मे
दूताः ब्रह्माण्डखण्डिताः- ॥ ३३३॥

हेरम्बस्कन्दवीरेश-
शिंशुमारपुरःसराः[2] ।
विमानं कोटिसूर्याभं
रुद्रकन्यावृतं परम् ॥ ३३४ ॥

अष्टावरणसंयुक्तं
भैरवाष्टकवेष्टितम् ।
विष्णुब्रह्मेन्द्रदिक्पाल-
सेवितं रत्नवेष्टितम् ॥ ३३५ ॥

सप्तमातृलसत्ताल[3]-
रागमूर्छासमन्वितम् ।
स्वरसन्दोह[4]सन्तान-
भङ्गिनाट्योपशोभितम्[5] ॥ ३३६ ॥

नन्दिचण्डिद्वारयुतं
रेणुकेन समन्वितम् ।

---

1 दधाति-क.ख. ग
2 पुरस्कृताः-घ. च
3 सप्तमतुलसत्तूल-घ. च
4 सन्धान-घ. च
5 सेवितं-क. ख

आरुह्य सहसा गौरि
तं व्रजन्ति वरानने[1] ॥ ३३७ ॥

शक्तिपीठोत्थितं[2] लिङ्ग
अखण्डं गोलकं यदि ।
दृष्ट्वा भाववशात् गौरि
पश्चत्वं लभते[3] नरः[4] ॥ ३३८ ॥

स[5] मूढ इति ये दूताः
प्रेतराजस्य सन्निधौ ।
आहुस्तं मानुषं दूष्यं
आगमज्ञानवर्जितम् ॥ ३३९ ॥

मूढं नराधमं गौरि !
विगृह्य यमकिङ्कराः[6] ।
मुष्टिनाहत्य[7] पाशेन
बध्वा तं जडदेहिनम् ॥ ३४० ॥

प्रवेशयन्ति[8] मूत्रस्थं
विवरं कीटकान्वितम् ।

---

1 तं व्रजयन्ति वरानने—घ तं स्वजयन्ति मेषटम्—च
2 पीठत्थर्तं—क
पीठाद्गतं—घ. च
3 लभ्यते—क. ख. ग
4 जनः—च
5 न—क. ख. ग
6 यमकिङ्करः—च
7 मुष्टिघातेन—क. ख.
मुष्टिनाघात्य—च
8 प्रवेशयति—च

शक्तिपृष्ठे माषमात्र[1]-
पटलं दधते[2] सति ! ॥ ३४१ ॥

दृष्ट्वा तत्पटलं कान्ते
अभिन्नमिति ये स्मृताः ।
प्रेतलिङ्गक्रियाचाराः[3]
प्रेतदीक्षासमन्विताः ॥ ३४२ ॥

ध्रुवं भवन्ति ते सर्वे
शृणु कान्ताजनोत्तमे !
शक्तिगोलकसंयुक्ते
प्राणलिङ्गे [3]क्रियान्विते ॥३४३ ॥

अभिषेकाचितं तोयं
पानं ग[कृ]त्वा दिने दिने ।
तल्लिङ्ग प्रेतराजानं
इत्याहुः प्रमथोत्तमाः ॥ ३४४ ॥

जलपानगतं लिंङ्ग
दृष्ट्वा माहेश्वरः सदा[5] ।

---

1 माषमात्र–क. ख. ग
मासमात्र–च
2 दधति–क. ख. ग
3 क्रियाचार–क. ख. ग
4 लिङ्ग–घ. च
5 तथा–घ च

धारयेत् प्रीतिपूर्वेण[1]
स याति यममन्दिरम् ॥ ३४५ ॥

जलपा... लिङ्ग
प्रेतलिङ्गमिति स्मरन्[2] ।
मम प्रीत्या यदा कायं
त्यक्त्वा यः सुरसेविते[3] ! ॥ ३४६ ॥

सः धीरः सत्त्विकः[4] श्रीमान्
वीराचारव्रतान्वितः ।
आगमज्ञो गुणनिधिः
गुरूणां[5] हे गुरुप्रिये ॥ ३४७ ॥

भवति ज्ञानभावेन
व्रजत्याशु ममान्तिकम् ।
वरदीक्षान्वि प्राण-
लिङ्ग साधनकारणम्[6] ॥ ३४८ ॥

शक्तिगोलकसंयुक्तं
प्राणलिंङ्ग नराधमः

---

1 धारयेद्यः पूर्वप्रीत्या–घ. च
2 प्रिये–क. ख. ग
3 यो सुरसेवितः–क. ख. ग
य: सुरसेवितः–घ
4 स धीरो सात्त्विको–क. ख. ग
5 गुरूणां गुरुर्हे प्रिये–क. ख ग
6 लिङ्ग प्राणसाधन कारणम्–

न पूजयेत् सदा गौरि
रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ ३४९ ॥

दृष्टे सूर्ये पुन[1]स्तस्य
प्राणलिङ्गस्य यो नरः ।
पूजां कुर्वन्ति सततं
ते यान्ति मम मन्दिरम् ॥ ३५० ॥

शिवदीक्षान्वितं श्रेष्ठं
प्राणलिङ्गं मनोहरम्
त्यक्त्वा देवालयोपेतं
शैवदीक्षाविवर्जितम्[2] ॥ ३५१ ॥

पादोदकेन रहितं
प्रसादब्रह्मवर्जितम् ।
अर्चयन्ति सदा प्रीत्या
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥ ३५२ ॥

श्वानयोनिशतं गत्वा
चण्डालाः कोटिजन्मसु ।
भवन्ति कृतपुण्येन
व्रजन्ति वसुधातले ॥ ३५३ ॥

---

1 धन- च

2 समन्वितम्-च

वैष्णवाः तप्त[1]संस्काराः
ऊर्ध्वपुण्ड्रसमन्विताः ।
शिवसंस्कारविरताः[2]
पाञ्चरात्रागमप्रियाः ॥ ३५४ ॥

ईषणात्रयसंयुक्ता
विष्णुसेवापरायणाः ।
रतिक्रीडामनोभोग[3]-
रतिलाञ्छनकीटकाः ॥ ३५५ ॥

मदान्धाः तत्त्वविरताः
पञ्चसूतकवेष्टिताः ।
मिथ्यापुराणसंस्काराः
भक्तिवैराग्यवर्जिताः[4] ॥ ३५६ ॥

गूढपापान्विता दूष्याः[5]
नरसूकरजन्तवः ।
भवन्ति कृतपुण्येन
ध्रुवं गौरि वरानने[6] ॥ ३५७ ॥

---

1 सप्त–च

2 रैणव्रत–च
रविरहाः–क. ख. ग.

3 भाग–क. ख. ग

4 वेष्टिताः–च

5 पापान्वितं दूष्ये–च

6 धनाढ्या भुवि पार्वति–घ. च

शिवदीक्षान्वितं लिङ्गं
पाषाणमिति ये नरः ।
अज्ञानात् कामजाद्वाऽपि[1]
स्मृताः पापानलाश्रयाः ॥ ३५८ ॥

कोटीनि[2] ब्रह्महत्यानि
प्राप्नुवन्ति न संशयः ।
शिवदीक्षाकृतं धीरं
वीरमाहेश्वरप्रियम् ॥ ३५९ ॥

षट्स्थलब्रह्मराजानं
भूरुद्रं बुधसेवितम् ।
किञ्चिज्ज्ञमिति ये सर्वे
नरयोनिसमुद्भवाः ॥ ३६० ॥

स्मृतास्ते रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।
वीरमाहेश्वराचारं[3]
वीरशीलसमन्वितम् ॥ ३६१ ॥

अष्टावरणसंयुक्त[4]-
मानसं मनुजाधिपम् ।

---

1 अज्ञानाद्वा कामादपि–घ
2 कोटयः–क. ख. ग
3 चार–क. ख. ग
4 संसक्त-क.ख. ग

प्रसादब्रह्मनिलयं
प्राणलिङ्गप्रपूजितम् ॥ ३६२ ॥

भूरुद्रजङ्गमं लोके
सर्वज्ञमिति ये स्मृताः ।
ते यान्ति मम सायुज्यं
नित्यानन्दं निरञ्जनम् ॥ ३६३ ॥

भूरुद्रं पावनं शान्तं
ब्रह्माण्डलयसाधनम् ।
मोक्षलक्ष्मीवधू[1]नाथं
इति ब्रह्मेन्द्रविष्णवः[2] ॥ ३६४ ॥

मम भक्त्या सदा गौरि
जातक्रोधविवर्जिताः ।
प्रपूजयन्ति सततं
वैष्णवः[3] किं करिष्यति ॥ ३६५ ॥

शिवदीक्षां विनाऽप्यस्य[4]
नास्ति लोकत्रयं परम् ।[5]
शिवदीक्षाप्रभावेन
शिवत्वं लभते नरः ॥ ३६६ ॥

---

1 वपु–च
2 देवताः–क. ख. ग
3 वैष्णवाः–क. ख. ग
4 विनादन्यं–क. ख ग
5 प्रिये–क. ख. ग

मतङ्गपुत्रो मातङ्गः[1]
तं नरं[2] ज्ञनयोगिनम् ।
पश्य गौरि मम प्रीत्या
तृणीकृतपुरन्दरम्[3] ॥ ३६७ ॥

देवदेव जगन्नाथ
वीरमाहेश्वरव्रत ![4]
योगिनस्तस्य मत्प्रीत्या
मातङ्गस्य महात्मनः ॥ ३६८ ॥

इतिहासं महाश्रेष्ठं
वीरमाहेश्वरप्रियम् ।
वीरमाहेश्वराचारं[5]
वीरशैवप्रवर्तकम् ॥ ३६९ ॥

ब्रूहि कालहर[6] शम्भो
कथयामि कृपानिधे[7] ।

---

1 मतङ्गीपुत्रमातङ्ग–घ
,, ङ्ग–च
2 तँ नरा–क. ख. ग
3 पुरन्दरः–घ
4 व्रतेः–च
5 चार–क. ख. ग
6 कालहरः–कः ख. ग
कालहे–च
7 शिवे शृणु–च

मेरोर्दक्षिणदिग्भागे
वाराहाङ्कुरसम्भवा[1] ॥ ३७० ॥

चलत्तरङ्गसङ्कीर्णा[2]
चक्रोच्छ्वासप्रवेष्टिता[3] ।
जलकुक्कुटसङ्घाता[4]
चक्रवाकोपशोभिता ॥ ३७१ ॥

पुण्यवृक्षसमाकीर्णा[5]
मलयानिल[6]वेष्टिता ।
जलव्यालसमासक्ता[7]
पद्मकल्हारमण्डिता ॥ ३७२ ॥

नीलोत्पलदलश्यामा[8]
तोयराशिविराजिता ।
पुलिनोरुधरा शुद्धा
पूर्वसागरगामिनी ॥ ३७३ ॥

---

1 वराहं कुरु सम्भवम्–च
2 सङ्कीर्ण–क. ख. ग
3 चक्रोच्चासनवेष्टिता–च
4 सङ्कीर्ण–क. ख. ग
5 कीर्ण–क ख. ग
6 मलमारुत–क. ख. ग
7 समाकीर्ण–क. ख.
8 श्याम–क.ख. ग

तु भद्रानदी गौरि !
अस्ति[1] पापहरा नृणाम् ।
तत्तीरे मुक्तिनिलयं
ब्रह्मविष्णुप्रपूजितम् ॥ ३७४ ॥

सिद्धगन्धर्वयक्षाढ्यं[2]
यक्षराक्षसवेष्टितम् ।
नारदात्रि[3]भरद्वाज
वसिष्ठाश्रमवेष्टितम्[4] ॥ ३७५ ॥

पम्पासरोवरं गौरि
मुक्तिखण्डमिव प्रिये[4] !
रेजे[5] सदा रेणुकाद्यैः[6]
शिंशुमारादिभिर्युतम्[7] ॥ ३७६ ॥

मृगाधिपैश्चित्रकायैः
स्तब्ध[8]रोमैश्च खड्गिभिः ।

---

1 चास्ति—च
2 यक्षाद्य—क॰ ख॰ ग
3 नारदादि—च
4 संवृतम्—च
5 मिदं शृणु—च
6 रेक्षि—क. ख. ग
7 काद्य—क. ख. ग
8 विवर्जितम्—क॰ ख॰ ग
स्तब्धु—क॰ ख॰ ग

उष्ट्राश्वगजसंघैश्च
भल्लूकैर्वानरैश्शुभैः[1] ॥ ३७७ ॥

कृष्णसारमृगैर्दिव्यैः
लुलायैर्वनराजिभिः[2] ।
शुकैः कपोतैर्व्यजितैः[3]
रथाङ्गैः बकबर्हिणैः[4] ॥ ३७८ ॥

बम्भरैर्गरुडैः श्येनैः
कङ्ककारण्डवायसैः[5] ।
चषकैः राजहंसैश्च[6]
टिट्टिभैः शकटैरपि[7] ॥ ३७९ ॥

तैत्तिर्यभाटजैः[8] स्फोटैः
मक्षिकैः वन[9]मक्षिकैः ।
चम्पकैः पिचुमन्दैश्च
तालहिन्तालजालकैः ॥ ३८० ॥

---

1 वासैर्वृकैः—च
2 कृष्णसारैर्मृगैर्जैरे
गवयैरेलकैः शशैः ।—च
3 वैचित्र्यैः—क. ख ग
4 राजिभिः—क. ख. ग
5 लक्ष्मणैः शुभलक्षणैः—क. ख. ग
6 चषकैश्चकोरैर्हंसैः—च
7 तित्तिकश्च विराजितम्—क. ख. ग
8 भाटजैः—च
9 धु -च

तमालैः[1] बिल्वजम्बीरैः
कपित्थकदलीवटैः ।
सालैरशोकैर्बरैः
मल्लिकामाधवीबकैः[2] ॥ ३८१ ॥

दाडिमैः सप्तपर्णैश्च
किंशुकैः ब्रह्मदारुभिः[3] ।
रुद्राक्षैः पनसैर्वंशैः
वेष्टितं ब्रह्मसेवितम्[4] ॥ ३८२ ॥

तस्य तीरे[5] व्योमचुम्बि-
गण्डशैलसमन्वितः[6]
शैलराजो[7] मतङ्गाद्रिः[7]
नानधातुसमन्वितः[8] ॥ ३८३ ॥

भुवः स्तनमिव श्यामः
रतकूर्पास[2]वेष्टितः ।

---

1 तमाल–च
2 माधवान्वितैः–च
3 मेडिभिः–च
4 भद्राक्षैर्ब्रह्मभिर्युतम्–च
5 स्थिरे–च
6 समन्विताः–च
7 राजा–च
8 मतङ्गादिः–क. ख. ग
9 समाकुलः–च
10 कुसस–च

तस्याग्रे दुर्घटे दुर्गं[1]
विश्वकर्मविनिर्मितम्[2] ॥ ३८४ ॥

प्रत्यर्थिराजनिर्भेद्यं
सुरदानवकांक्षितम् ।
मतङ्गऋषिसंयुक्तं[3]
वालखिल्यप्रपूजितम् ॥ ३८५ ॥

सप्तमातृनिवासाढ्यं[4]
अष्टभैरववेष्टितम् ।
भेताल[5]डाकिनीयुक्तं
मेरुतुल्यं सुविस्मितम् ॥ ३८६ ॥

वासं करोति मातङ्गः
ऋषीणां योगिनामपि ।
चिच्छेद द्रव्यवस्त्राणि
हरेर्वीर्य[6]प्रभावतः ॥ ३८७ ॥

मानुषाणां सहस्राणि
मातङ्गः सकिरातकः[7] ।

---

1 दुर्धटो दुर्गे–च
2 निर्मितः–च
3 समायुक्तः–च
4 अष्टमातृकतद्वासं–क. ख. ग
5 वेताल–च
6 हरेर्वीर–च
7 स मातङ्गो किरातकः–क. ख. ग

दिने दिने प्रिये गौरि
चछेदयामास सन्ततम्[1] । ॥ ३८८ ॥

सूक्ष्मवस्त्राणि दिव्यानि
रत्नानि रचितान्यपि[2]
अटकानि[3] विचित्राणि
ताम्रपत्राणि भूतले ॥ ३८९ ॥

आहरेत् सर्वदा गौरि
मधुमांसबलान्वितः ।
गजवाजिरथाकीर्णान्
नृपान् चिच्छादयेत् सदा[4] ॥ ३९० ॥

द्विजान् वणिग्जनात् सर्वान्
शूद्रानव्याधसन्ततीन्[5] ।
विष्णुभक्तान् शिवभक्तांश्च[6]
मृत्युरेव न संशयः ॥ ३९१ ॥

मातङ्ग[7] विक्रमं श्रुत्वा
ब्रह्मविष्णुसुराधिपाः ।

---

1 सर्वतः–च

2 र जतान्यपि–च

3 आठकानि–क. ख. ग

5 यतिसमाकुलान्–च

4 शूद्रान् यादवसन्ततीन्–क. ख. ग

6 विशेषज्ञान्–क. ख. ग

7 मतङ्ग–क. ख. ग

पुराणि हे प्रिये गौरि !
दुर्गाणीव दिने दिने ॥ ३९२ ॥

ते चक्रुः सर्वदा लोकान्
छेदयामास मानवः ।
एतस्मिन्नन्तरे गौरि !
योगिराजो दृढव्रतः ॥ ३९३ ॥

शिवागमसमोपेतः
यशस्वी प्रमथाधिपः ।
मुक्तिबीजाङ्कुरतनुः
मूलमन्त्रबलान्वितः ॥ ३९४ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
कवचं मन्त्रवेष्टितम् ।
सदाधारी[1] यतिपतिः
प्राणलिङ्गहृदि स्थितः ॥ ३९५ ॥

षट्स्थलब्रह्मसूत्रस्थः
ब्रह्म[2]शीलसमन्वितः ।
कापथं पादचारेण
गत्वा तन्नरदानवम् ॥ ३९६ ॥

किरातं प्राकृतं दृष्ट्वा
स्मितवक्त्[3] शुचिव्रतः ।

---

1 सदाधार—च
2 मन्त्रस्थः सर्व—च
3 स्मितवक्त्रो—क. ख.ग

स भवेदाशु[1] मे [2]गौरि
धत्ते[3] तद्विस्मयं प्रिये ॥ ३९७ ॥

स किरातोऽपि तं श्रेष्ठं
यतिं[4] ब्रह्मेन्द्रसेवितम् ।
दृष्ट्वा मुदं भाग्यनिधिं
धत्ते गौरि वरानने ॥ ३९८ ॥

योगिनस्तस्य निकटं
गत्वा वचनमब्रवीत् ।
हे गुरो[5] तव वस्त्राणि
रुद्राक्षाभरणान्यपि ॥ ३९९ ॥

कक्षपालान्वितान्याशु[6]
दत्त्वा मार्गं व्रज प्रभो !
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
रुद्रतुल्यपराक्रमः ॥ ४०० ॥

यतिराजं[7] नरं धीरं
प्राकृतं जडदेहिनम् ।

---

1 भवेत्याशु–क. ख. ग
2 हे–च
3 दत्ते–च
4 यति–च
5 हेगौरि !–क. ख. ग
6 न्यासीत्–क. ख. ग
7 यतिराजा–क. ख. ग

तापत्रयसमोपेतं
पापसंसारवेष्टितम् ॥ ४०१ ॥

तं मातङ्ग[1] प्रिये गौरि !
आह वेदान्तपारगः
किरात ! तव दारा वा
पुत्रो वा पुरुषाधम[2] ! ॥ ४०२ ॥

देहार्जितं मोहयुतं
पापं दहति सर्वदा[3] ।
इति त्वं शृणु पापिष्ठ ।
तव दाराः सुतः सुतः[4] ॥ ४०३ ॥

तस्य योगीश्वरस्यापि[5]
वाक्यं वीरागमान्वितम् ।
स विचार्य तथास्त्वाशु[6]
पूतिगन्धसमन्वितम्[7] ॥ ४०४ ॥

---

1 मतङ्ग–क ख. ग

2 धमः–च

3 पापिष्ठसुतसर्वदा–च

4 सुतौ सुत–क. ख. ग

5 इत आरभ्य 'सिंहमध्यां' इत्यन्तो भागः 'घ'पुस्तके–प्रथमपटले 'मशकीव सदाप्रियै इत्येतदनन्तरं दृश्यते।

6 तदात्याशु–क. ख. ग
तथा चाशु–च

7 समन्विता–च

आश्रयं[1] वंशशिविरं
गोहतेन समन्वितम्[2] ।
दत्त्वा[3] कान्तां विलासानि[4]
नूपुरेण विराजिताम्[5] ॥ ४०५ ॥

चलत्कुण्डलगण्डाभां[6]
काञ्ची[7]दामोपशोभिताम् ।[8]
प्रोत्फुल्लपद्मनयनां[9]
स्वर्णकुम्भपयोधरीम्[10] ॥ ४०६ ॥

कचभारां नम्रगलां
कुचभारानतोदरीम् ।
स्वर्णरम्भासमानोरू[11]-
पादपद्मविराजिताम्[12] । ४०७ ॥

---

1 अश्रेय–च
2 समन्विता–च
3 गत्वा–च
4 विलासाङ्गीं–घ
कान्ताविलासाङ्गी–च
5 विराजिता–च
6 गण्डाभा–च
7 काञ्चि–क. ख. ग
8 शोभिता–च
9 नयना–च
10 पयोधराम्–घ पयोधरा–च
11 स्वर्णरम्भान्वितोरुं तां–क. ख. ग
,, समानोरु–च
12 विराजिता–च

तिलपुष्पसमा[1]नासां
कम्बुग्रीवां कलान्विताम्[2] ।
[3]सिंहमध्यां नीलकेशीं[4]
कोमलाङ्गीं वराननाम्[5] ॥ ४०८ ॥

मत्तकाशीं[6] सुरस्त्रीणां
हसितां मदलालसाम्[7] ।
पक्वबिम्बाधरीं[8] श्यामां[9]
ददर्श सहसा प्रिये ! ॥ ४०९ ॥

योगिनस्तस्य तद्वाक्यं
शुश्राव स नराधमः ।
कान्ते मयार्जितं[10]पापं
विभज्य त्वं गताऽसि[11]यत् ॥ ४१० ॥

---

1 तुला–क. ख. ग
2 कला[ ]वता–च
3 पद्यार्धमिदं घ.च. पुस्तकयोः न दृश्यते ।
4 नीलकेशां–(व्या)
नीलकेशी–च
5 वरानने–क. ख. ग
6 मत्तकाशी–च
7 हसिता मदलालसा–च
8 ध रीं–क. ख. ग धरी–च
9 साम्यं–च
10 समार्जितं–क. ख. ग
11 गतोऽसि–क. ख. ग

[1]इति तद्वचनं श्रुत्वा
रोषावेशसमन्विता।
पतिं किरातं जडिनं
प्रति चेत्याह[2] सा वधूः ॥ ४११ ॥

त्वयाऽर्जितमिदं पापं
त्वं भोक्ताऽसि नराधम !
कान्ताया वचनं[3] श्रुत्वा
तप्तायःपिण्डसंनिभः ॥ ४१२ ॥

स मातङ्गः चर्मयुतं[4]
शाणा[5]लीढासमन्वितम्।
खड्गं करतले धृत्वा
धुन्वन् परमकार्मुकम् ॥ ४१३ ॥

नारीकण्ठं समुद्धृत्य
मुष्टिघातेन हे प्रिये।
उर्वो[6]र्मध्यं जघानाशु
सा वधूरवनीतले ॥ ४१४ ॥

---

1 इतः पूर्वं—
तन्निरासाय दीक्षां तु
लब्ध्यैवाशु त्वया मया'
इति—घ. च. पुस्तकयोः दृश्यते ॥
2 इत्याह—क. ख. ग
3 इति कान्तावचः—घ. च
4 सृष्ट्वा—घ. च
5 शोणा—क. ख. ग
6 उरो—क. ख. ग
7 वधू क्ष—क. ख. ग

पपात सहसा गौरि
दासीदास[1]परिष्कृता ।
कान्तायाः पतनं दृष्ट्वा
पादद्वन्द्वेन पीडितः[2] ॥ ४१५ ॥

स मातङ्गः[3] किरातोऽयं
शिबिरात्[4] क्रोधमानसः ।
निर्गत्य योगिनस्तस्य
निकटं ब्रह्मसेवितम् ॥ ४१६ ॥

गत्वा प्रदक्षिणं[5] कृत्वा
इदं वचनमब्रवीत् ।
हे गुरो वेदवेदाङ्ग-
वेद्य वेदार्थपारग ![6] ॥ ४१७ ॥

अशेषप्रमथाधीश[7]
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठित !
तव कारुण्यभावेन
जीवन्मुक्तो भवाम्यहम् ॥ ४१८ ॥

---

1 जन–क. ख. ग
2 पादितः–घ. च
3 मतङ्गः–क. ख. ग
4 शिबिलात्–क. ख. ग
5 प्रणमनं–घ. च
6 पारगः–घ
7 प्रमथानाथ–क. ख. ग

तव दीक्षां महाश्रेष्ठां
वेदमूर्ध्नि प्रतिष्ठिताम् ।
मम दत्त्वा[1] व्रजत्वाशु
त्वामनुव्रजाम्यहम्[2] ॥ ४१९ ॥

किरातस्य वचः श्रुत्वा
दीप्तिज्ञानसमन्वितम् ।
शुश्राव योगी[3] धर्मात्मा
प्रत्युवाच किरातकम् ॥ ४२० ॥

बहुपातकसंयुक्तः
त्वं गतोऽसि किरात हे[4] ।
अनृतात् पातकादन्यत्[5]
नाऽस्ति लोके जगत्त्रये ॥ ४२१ ॥

दारिद्र्यादात्मबन्धानां
कलहं जायते सदा ।
कलहात् कार्यनाशश्च[6]
वीर्यनाशो[7] दिने दिने ॥ ४२२ ॥

1 तत्त्वा—क. ख. ग
2 त्वमहं व्रज हे प्रिये—क. ख. ग
3 सुश्राव योगि—क. ख. ग
4 व त्वने—क. ख. ग
5 नानृतात्पातकमन्यत्
6 नाशं च—क. ख. ग
7 नाशं—क. ख. ग

जायते मनुजानां च
सर्वानर्थकरं परम् ।
अनृतं चात्म[1]हननं
धत्ते वेदान्तपारगः[2] ॥ ४२३ ॥

इत्याह रेणुकस्तस्मै[3]
शृणु त्वं ज्ञानसाधक !
अनृतं[4] त्वं त्यज प्रीत्या
उपदेशं करोमि ते ॥ ४२४ ॥

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
योगिनस्तस्य साधकः[5] ।
स मातङ्गो[6]ऽपि हे कान्ते
अनृतं[7] जातिचेष्टितम्[8] ॥ ४२५ ॥

तत्याजाशु[9] प्रिये गौरि
योगी वेदान्तपारगः ।[10]

---

1 आत्म–क. ख. ग
2 पारगः–च
3 रेणुकाः सर्वे–क. ख. ग
4 नानृतं–क. ख. ग
5 स्तत्त्वसाधकः–क. ख. ग
6 मत्तो–क. ख. ग
7 नानृतं–क. ख. ग
8 वेष्टितम्–घ
9 त्यजेदाशु–क. ख. ग
10 योगिवेदान्तपरगः–क. ख. ग

दीक्षां माहेश्वरीं श्रेष्ठां
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठिताम् ॥ ४२६ ॥

प्रसादब्रह्मसारङ्गीं
पादतोय[1]क्रियान्विताम् ।
दत्त्वा तस्य किरातस्या-
प्यन्त[2]र्धानं व्रजत्यये[3] ॥ ४२७ ॥

तेन दीक्षाप्रभावेन
वीरमाहेश्वरस्य च ।
मातङ्गस्य[4] तदा कायं[5]
तप्तहाटकसंनिभम् ॥ ४२८ ॥

ब्रह्मविष्णुसुरेन्द्राद्याः[6]
दृष्ट्वा खे खेचराः प्रिये !
स्तोतुं कुर्वन्ति हे गौरि[7]
चक्रुः स्तोत्रं[8] सुविस्मितम् ॥ ४२९ ॥

---

1 तीर्थ–घ. च

2 रय अन्त–क. ख, ग

3 व्रजेत् प्रिये–क. ख. ग

4 मतङ्गस्य–क. ख. ग

5 भवत्का–घय. च

6 ब्रह्मरुद्रेन्द्रदिक्पालाः–क. ख. ग
ब्रह्मविष्णुहरेन्द्राद्याः–च
स्तोतुमुद्यक्तमनसः–घ. च

7 स्तोतु–च

सर्व[1]वेदान्तवेद्याय
मातङ्गाय नमो नमः[2]
शिवदीक्षाप्रयुक्ताय
सर्वज्ञाय नमो नमः[3] ॥ ४३० ॥

पापारण्यकुठाराय
परमाद्वैतसाक्षिणे ।
पञ्चाणवत्याजमान-
परमाङ्गाय ते नमः ॥ ४३१ ॥

पञ्चसूतकविध्वंस
पञ्चप्रेतासनाय ते ।
नमो नमः सहस्राय[4]
वेदमस्तकवासिने ॥ ४३२ ॥

नमः खण्डेन्दुचूडायँ[5]
त्रिणेत्राय नमो नमः ।
भूरुद्रजङ्गमप्रेमात्
आत्म[6]साधनसाधवे ॥ ४३३ ॥

---

1 नमो–घ. च
2 महात्मने–घ. च
3 गणाय ते–घ. च
4 सहसाक्षाय–च
5 जूटाय–घ. ज
6 प्रेमानात्म–घ
प्रेमनात्म–च

आधारकुण्डलीधार-
　कुण्डब्रह्माण्डधारिणे[1] ।
इति[2] स्तोत्रं सुरस्तोमाः
　मातङ्गं प्रति मत्प्रियम्[3] ॥ ४३४ ॥

मुदा[4] कुर्वन्ति हे गौरि !
　किं करिष्यन्ति किङ्कराः ।
प्रेतराजस्य निलयं[5]
　मातङ्गस्य[6] महात्मनः ॥ ४३५ ॥

शून्यं[7] यथा यथा दीक्षा-[8]
　प्रभावात्[9] तत्त्वसाधनात् ।
अभवत्[10] सर्वदा गौरि
　वयं वक्तुं सदा प्रिये ॥ ४३६ ॥
नेश्महे वीरशैवानां
　व्रतशीलफलोदयम् ।[11]

---

1 सकलब्रह्माण्डधारक–घ.च
2 एतत्–क. ख. ग
3 मतङ्ग मत्प्रिये शिवम्–क. ख. ग
4 प्रति–क. ख. ग
5 निलये–घ. च
6 मतङ्गस्य–क.ख. ग
7 शून्यो–च
8 गौरि–क. ख. ग
9 प्रभावः–क. ख. ग
10 अकारि–क. ख. ग
11 व्रतशील[illegible]फलम्–क. ख. ग

गणयिष्यन्ति[1] के[2] लोके
ब्रह्मविष्ण्विन्द्रवायवः ॥ ४३७ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
सर्वशीलसमन्विताम् ।
माहेश्वरीं महादीक्षां
प्राप्य दीक्षापरेऽहनि ॥ ४३८ ॥

गुरूणां भस्मपिण्डेन
विज्ञाप्याहूय भक्तितः[3] ।
वस्त्राण्याभरणान्याशु[4]
दत्त्वा सन्तोषयन्ति ये[5] ॥ ४३९॥

ते यान्ति मम सायुज्यं
सत्यं सत्यं[6] वदाम्यहम् ।
भिक्षां प्रदेहि[7] मे मातः
शिवदीक्षासमन्विते ॥ ४४० ॥

मां पुत्रं विद्धि निर्माये[8]
इति यत् तत्तु साम्प्रतम् ।

---

1 गणा इष्यन्कि—त ख. ग.
2 ते—च
3 आहूय च पुनः पुनः—क. ख. ग.
4 न्येव—घ. च
5 तुष्यन्ति ये जनाः—क. ख. ग
6 गौरि—घ. च
7 तुदेहि—घ. च
8 मांमायाकलातीते
इति यत्तद्साम्प्रतम्-क. ख. ग

वीरमाहेश्वरादारात्
पर्जन्यः तृप्तिमेष्यति[1] ॥ ४४१ ॥

पर्जन्यादन्नमुद्भूत[2]
इति यत्तदसाम्प्रतम्
वीरमाहेश्वराहारात्
सर्वं सिद्ध्यति कांक्षिणः[3] ॥ ४४२ ॥

जगतामधीनं वाक्यं
वहन्ति[4] प्रमथाधिपाः ।
सत्यं सत्यं पुनस्सत्यं[5]
इत्याहुर्गणनायकाः ॥ ४४३ ॥

वेदागमानां वेद्यस्थं
दीक्षाकाले[6] वरानने
द्रष्टुं ब्रह्मेन्द्रदिक्पालाः
कांक्षन्ति गगनान्तरे ॥ ४४४ ॥

---

8 विरमाहेश्वराद्वोरि
पर्जन्याद्न्नसम्भवम्–क. ख. ग

1 ज्ञातपर्जन्यसम्भूतं–क. ख. ग

2 वीरमाहेश्वरतत्रं
जगतां जयकांक्षिणः–क. ख. ग

3 अधीनमिति यद्वाक्यं वहन्तः–क. ख. ग

4 गौरिसत्यं–घ. च

1 कालं–क. ख. ग

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षायाःकामिनि प्रिये[1] !
कन्या गोकोटिदानानि
कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४४५ ॥

गजतुरगसहस्ररत्नसंवेष्टितायाः
कृतक[2]जनपवित्रं गोतुलार[3]त्नगर्भम् ।
जलधिकृतजनानां वेष्टितं मेरुसारं
खगकुलकुलकूटं[4] पश्य दीक्षासमेतम् ॥ ४४६॥

अविद्यायोगनिर्मुक्त
ज्ञानसाधनहेतुजम्[5] ।
दीक्षारम्भस्वरूपं च
प्रपेदे योगिसत्तमः ॥ ४४७ ॥

स योगी[6] शुद्धशैवं च
त्यक्त्वा माहेश्वरान्वितम् ।
वीरशैवं महाश्रेष्ठं
प्रपेदे ब्रह्मशोधकम् ॥ ४४८ ॥

---

2 शृणु–क. ख. ग
1 क्रतुक–च
2 गोगुला–च
3 कुलकोटिं–च
4 हेतुकं– घ. च
1 योगि-क. ख. ग

शिवः सत्यो जगन्मिथ्या
इति यः सर्वदाब्रवीत्[1] ।
स योगी योगिराट् श्रेष्ठः
जगदारम्भ[2]साधकः ॥ ४४९ ॥

शीलानां साधकीं दीक्षां
निदानां[3] योगिनां प्रिये ।
यः प्रपेदे तपो भावात्[4]
सर्वं त्यजति हे प्रिये[5] ॥ ४५० ॥

मुक्तिदात्री[6] विलासाङ्गी[7]
दीक्षा षट्स्थलब्राह्मिणाम्[8] ।
भक्तमाहेश्वराणां च[9]
शरणानां मनोहरा ॥ ४५१ ॥

या सा मनोहरा विद्या
राजते[10] स्वेच्छयाप्रि

---

1 ब्रुवेत्–क. ख. ग
2 द्धाहन–क. ख. ग
3 निधानां–घ. च
4 तपः साध्यात्–क. ख. ग
5 स सर्वां त्यजति क्रियाम्–घ. च
6 मुक्तिदाता–क. ख. ग
7 विलासाङ्गि–क. ख. ग
8 ब्रह्मणाम्–क. ख. ग
9 राद्यानां–घ. च
10 रेजते–क. ख. ग

तां विद्यां योगिनः सर्वे
प्रसादब्राह्मिणो ययुः[1] ॥ ४५२ ॥

मोहैर्विचित्रैर्वादार्थैः
कलयामासुरद्रिजे[2] ।
संज्ञानं साधकं मुख्यं[3]
विज्ञानं तदनन्तरम् ॥ ४५३ ॥

प्रज्ञानं प्रतिपदारभ्य[4]
यथा चन्द्रमसः प्रिये ।
स्वरदीक्षां शुद्धदीक्षां
शैवदीक्षां मनोहरीम् ॥ ४५४ ॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रगन्धर्वाः
दधते[5] ब्रह्मवर्जिताः ।
दीक्षणां[6] वेदतत्त्वानां
शिखारूपां मनोरमाम्[7] ॥ ४५५ ॥

वीरमाहेश्वरीं[8] दीक्षां
रेणुकाद्याः पुरातनाः ।

---

1 ब्रह्मणः प्रिये—क. ख. ग.

2 मास पार्वति—क. ख. ग

3 गौरि—घ

4 प्रतितारभ्य—च

5 दधति—क. ख. ग

6 दीक्षानां—क. ख

नोहराम्—घ. च

श्वरां—च

दधते[1] ज्ञानभावेन
एते श्रेष्ठा भवन्ति ये[2] ॥ ४५६ ॥

देवदेव जगन्नाथ
व्योमकेश सदाशिव ।
दीक्षाचतुष्टयं ब्रूहि
कृपया नु[3] मम प्रभो ॥ ४५७ ॥

प्रेतलिङ्गार्चनरतिः[4]
विप्राणां ज्ञानवर्जिता ।
या सा प्रेतासनादीक्षा
स्वरदीक्षा भवेत्प्रिये[5] ॥ ४५८ ॥

आवहनं मन्त्रयुक्तं
प्रेतलिङ्गविसर्जनम् ।
तं नरं प्राकृतं दृष्टं
इत्याहुः प्रमथोत्तमाः ॥ ४५९ ॥

यज्ञोपवीतसंयुक्तं[6]
मौञ्जीदण्डधरं द्विजम् ।
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गं
ऊर्ध्वपुण्ड्रसमन्वितम् ॥ ४६० ॥

---

1 दधति–क. ख. ग
2 भवन्ति त ह–च
3 कथयामि–क. ख. ग
4 र्चनारीतिः–क. ख. ग
5 भवत्यये–घ. च
6 संयुक्त–क. ख.ग

स्वरदीक्षासमोपेतं
चण्डालं जड[1]देहिनम् ।
भूतात्मानं प्रिये गौरि
ताडयन्ति दिने दिने ॥ ४६१ ॥

किङ्कराः प्रेतराजस्य
शासितुं जगतां जनान्
स्वरदीक्षासमोपेतान्[2]
मन्त्रज्ञानविवर्जितान् ॥ ४६२ ॥

मायाबिलप्रविष्टाङ्गान्
माधवध्यानवेष्टितान् ।
कर्मचण्डालसंस्कारान्
तप्तमुद्राङ्कितप्रियान् ॥ ४६३ ॥

वायसश्वानवृत्तिस्थान्[3]
रेजे भूतगणः सदा ।
सूकराणां[4] समाजेषु
स्वरदीक्षायुतं नरम्[5] ॥ ४६४ ॥

प्रदीपयन्ति हे गौरि
प्रेतराजस्य किङ्कराः ।

---

1 चण्ड—क. ख. ग
2 समोपेतं—च
3 पायसाद्विकिरान्नस्थान्—क. ख.
4 सुराणां च—च
5 युतान् नरान्—च

स्वरदीक्षानरं[1] लोके
तप्तमुद्रासमन्वितम् ॥ ४६५ ॥

मृत्पुण्ड्रधारिणं गौरि[2]
न निन्दन्ति दिने दिने ।
ते यान्ति रौरवं घोरं
यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ४६६ ॥

पक्षिणां घूकश्चण्डालः
नृणां[3] स्वरसमन्वितः[4] ।
ऊर्ध्वपुण्ड्राङ्कितो दूष्यः[5]
वैष्णवो द्विज ईश्वरि[6] ॥ ४६७ ॥

चण्डाल इति ये सर्वे[7]
वालखिल्यपुरःसराः ।
मार्कण्डेयोदधीच्यत्रिः[8]
उपमन्युपुरः सराः- ॥ ४६८ ॥

आहुस्सदा तत्त्वहीनं
शुद्धाद्वैत[9]प्रवादिनम् ।

---

स्वरदीक्षान् नरान्-च
2 धारिणो ये तु-च
3 घूकचण्डालनृणां-क. ख. ग
4 समन्वित-क. ख. ग
5 ङ्कित दूष्य-क. ख. ग
6 वैष्णव त द्विज प्रिये-क. ख. ग
7 सर्वज्ञाः-घ. च
यदधीचोऽत्रिः-घ.च
शुद्धद्वैत-च

स्वरदीक्षायुतं विप्रं
चण्डालमिति पार्वति[1] ॥ ४६९ ॥

पश्य गौरि मम प्रीत्या
चलत्कुण्डलविभ्रमे
दीक्षाहीनजनैर्युक्त
पुत्रदार[2]समन्वितम् ॥ ४७० ॥

वीरमाहेश्वरैः सर्वैः
त्याज्यं तं नरदानवम् ।
न धारयति हे[3] गौरि !
रसा[4]पर्वतवेष्टितम्[5] ॥ ४७१ ॥

कालकण्ठं कलामूर्ति-
भूरुद्रं जङ्गमं सदा ।
निन्दिता सा च या बुद्धिः
शुद्धदीक्षा भवेत् प्रिये[6] ॥ ४७२ ॥

शुद्धदीक्षान्वितं विप्रं
पञ्चसूतकवर्जितम् ।

---

1 सर्वदा—क. ख. ग
2 पुत्रदारा—क. ख. ग
3 यति मां—घ
यति मां—च
4 रस—घ. च
5 वेष्टिता—क. ख. ग.
6 भवत्यये—घ. च

यागदानक्रियोपेतं
मेषमांससुरार्चिनम्[1] ॥ ४७३ ॥

सवन[2]त्रय संयुक्तं
पञ्चयज्ञप्रवर्तकम् ।
षट्कर्मनिरतं दूष्यं
कपालोपरमा [वा] न्वितम् ॥ ४७४ ॥

प्रायश्चित्तक्रियोपेतं
प्राकृतं जडदेहिनम् ।
पतितं कर्मपाषण्डं
कर्मब्रह्मेतिवादिनम् ॥ ४७५ ॥

चण्डालमिति हे गौरि
पश्य त्व नरदानवम् ।
अवै [वे] हि तं नरं भूतं
इति माहेश्वरप्रियात् ॥ ४७६ ॥

देवदानवगन्धर्व-
यक्षसिद्धखगाः[3] सदा
तं नरं कर्मचण्डालं
इति गौरि वरानने[4] ॥ ४७७ ॥

---

1 क्रियान्वितम्–क· ख· ग
2 सवर–घ. च
3 खगोरगा:–च.
4 सर्वंत्रपार्वति–च

ददर्श[1] सर्वदा लोके
कृतकृत्यं[2] नराधमम् ।
असौ द्विजः सदा लोके
भूरुद्रं पावनं गुरुम्[3] ॥ ४७८ ॥

निन्दयामासुः[4] तान् सर्वान्
शिवभक्ताः सुशीलकाः
न ताडयन्ति हे गौरि
त एते शुद्धदीक्षिताः[5] ॥ ४७९ ॥

भवन्ति निर्जले देशे
भूतप्रेतसमन्विते ।
चण्डालनिलयप्रान्ते
पूतिगन्धसमन्विते ॥ ४८० ॥

जायन्ते जन्तवः सर्वे
तान् जन्तून् शुद्धदीक्षितान्
अवेहि सर्वदा गौरि
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४८१ ॥

शुद्धदीक्षामरं दूष्यं
इत्याहुः प्रमथेतराः ।

---

1 ददर्शुः-क. ख: ग
2 कृत्य—क. ख. ग
3 सदा सर्वेदेवभूरुद्रंजङ्गमंशिवमू—च
4 निन्दयामासः—क ख. ग. घ
5 शुद्धदिशक्षयाः—क. ख. ग: ङ

शुद्धदीक्षायुतं विप्रं
क्रिमिवत् सर्वदाप्रिये ॥ ४८२ ॥

अवेहि सर्वदा कान्ते
चलत्कुण्डलवेष्टिते ।
विरुद्धं विश्वनिलय-
वैष्णवं वरदानवम् ॥ ४८३ ॥

कर्महीनं तप्तयुतं
कामदण्डसमन्वितम्[1]
किञ्चिज्ज्ञं कृपणं दीनं
शुद्धदीक्षासमन्वितम् ॥ ४८४ ॥

तं द्विजं[2] योगिनः सर्वे
दीक्षां कुर्वन्ति ये प्रिये[3]
मन्त्रहीनं नृणां कार्यं
मदमोहसमन्वितम् ॥ ४८५ ॥

धिक् धिक् वृथा मांसयुतं
इति ब्रह्मनृणीकृताः ।
इत्याहुः शार्वरीहीन-
शरच्चन्द्रमरीचिवत् ॥ ४८६ ॥

---

1 दण्डत्वचाभिदन्–च
2 तद्विजं–क. ख. ग. झ
3 शिक्षां कुर्वन्ति ये प्रिये–क. ख.
दीक्षां कुर्वन्ति मे प्रिये–च

दीक्षाहीनन्नृणां देहं
भस्मीकुर्वन्ति मानवाः ।
भूदानवानां यत्कार्यं[1]
वैष्णवानां वरानने ॥ ४८७ ॥

भेतालशाकिनीसङ्घो
हरत्याशु ध्रुवं प्रिये[2] ।
नृणां परमचण्डालाः
तप्तमुद्रासमन्विताः ॥ ४८८ ॥

मृत्पुण्ड्र[3]गन्धनिटिलाः[4]
भवन्ति भविनः प्रिये ।
वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षाशीलसमन्विताः[5] ॥ ४८९ ॥

वैष्णवेभ्यः सुवस्त्राणि[6]
रत्नान्यपि धनान्यपि ।
दापयन्ति सदा प्रीत्या
ते यान्ति यममन्दिरम् ॥ ४९० ॥

---

1 च तथा—च
2 हरत्येषां तनु प्रिये ।—च
3 मृत्पिड—क.
4 गोधिकोपेताः—क. ख. ग. झ
5 दीक्षां शीलसमन्वितम्—च
6 तेभ्यो भविभ्यो वस्त्राणि—च

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
वैष्णवान् वरदानवान्[1]
येन केनाप्युपायेन
ताडयेत् सर्वदा सुधीः ॥ ४९१ ॥

दग्धकीटस्य हे गौरि[2] !
वैष्णवस्य मुखं प्रिये !
ऊर्ध्वपुण्ड्रेण संयुक्तं
तप्तमुद्रासमन्वितम्[3] ॥ ४९२ ॥

पश्यन्ति मानवा नित्यं[4]
ते यान्ति यममन्दिरम् ।
वैष्णवस्य मुखं दृष्ट्वा
प्राणलिङ्गस्य मानवाः ॥ ४९३ ॥

नेच्छन्ति[5] सर्वदा गौरि !
ते यान्ति यममन्दिरम् ।
तस्याननं सदा लोके
दग्धकीटस्य हे प्रिये[6] ॥ ४९४ ॥

---

1 नरदानवान्–च
2 दग्धकीटकम्लेच्छस्य–च
3 मेण्ढ्रश्चर्म[मेढ्रचर्म] छेदकस्य क्षपणस्य निर्लिङ्गिनः–च
4 दृश्यन्ते मानवाः सर्वे–क, ख, ग, झ
5 तस्मात्तस्याननं लोके
नागलोके न दुर्मते ॥–च
6 येऽचयन्ति–च

वैष्णवस्य महाप्राज्ञाः[1]
प्रसाद ब्रह्मसेविताः ।[2]
वीरमाहेश्वराः सर्वे
दग्धं कुर्वन्ति हे प्रिये[3] ॥ ४९५ ॥

दग्धकीटस्य तस्याङ्ग-
दर्शनं यद्दिनं [ने] भुवि[4] ।
तद्दिनं दुर्दिनं मन्ये
तव त्वं नेक्षसि[5] प्रिये ॥ ४९६ ॥

इति बोधं महाश्रेष्ठं[6]
गुरुर्वे[7]दान्तपारगः ।
नवदीक्षान्वितं शिष्यं
बोधयेत् सर्वदा[8] सुधीः[8] ॥ ४९७ ॥

सगुरुर्गुरूणां प्राज्ञः
शिवसूत्रसमन्वितः ।
भवेदह ब्रुवा[ब्रवी] म्याशु
शृणु त्वं सुभ्रु विभ्रमे ! ॥ ४९८ ॥

---

1 महाप्राज्ञ:—च
2 सेवित:—च
3 वीरमाहेश्वरा वक्तुं
दग्धंपश्यन्ति नो प्रिये ॥
4 प्रिये—क. ख. ग. झ
5 न्यक्षसे—च
6 इतिबाधां माहश्रेष्ठां—क. ख. ग. झ
7 गुरो- च
8 सार्वदा—क. ख. ग. झ

यतीनां[1] दीक्षनिष्ठानां
प्राणलिङ्गधृतां सदा ।
प्रसादब्रह्मनिष्ठानां[2]
चक्रराज्ञां चरात्मनाम् ॥ ४९९ ॥

आधारकोशनिलयं
बोधाज्ञानं[3] मनोहरम् ।
शिवसायुज्यनिलयं[4]
पापक्षयकरं शुभम् ॥ ५०० ॥

भक्तिदं मुक्तिदं नृणां
विज्ञेयं वीर्यवर्धनम् ।
उद्वहन्तं महाश्रेष्ठं
ये वहेयुः सदा प्रिये ॥ ५०१ ॥

ते यान्ति मम सायुज्यं
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
विशुद्धं शुद्धदीक्षाकं
नरं मन्त्रविवर्जितम् ॥ ५०२ ॥

प्राकृतं प्रकृति[6]व्याप्तं
प्राणलिङ्गविवर्जितम् ।

---

1 यतिनां–झ
2 भावानां–च
3 रोधाज्ञानं–च
4 सदनम्–च
5 भुक्तेदं भूमिपालानां–क. ख. ग
6 प्रकृतं–च

दग्धकायं[1] तत्प्रयुतं
विष्णुसंस्कारपूर्वकम् ॥ ५०३ ॥

तं दूषितं प्रेतगणैः
प्रमथैः प्राणलिङ्गिभिः ।
अशेषैः विबुधैः सर्वैः
रेणुकाद्यैः पुरातनैः ॥ ५०४ ॥

निषिद्धं[2] शाश्वतं लोके
वेदवेदाङ्गपारगाः
उद्बोधयन्ति सततं
दग्धकीटमिति स्मृताः ॥ ५०५ ॥

दग्धकीटं नरं गौरि !
भीमपातकवेष्टितम् ।
पञ्चसंस्कारनिरतं
पञ्चसूतकवेष्टितम् ॥ ५०६ ॥

पापात्मानं[3] सदाश्रेष्ठाः
वीरमाहेश्वराः शुभाः ।
त्यजन्ति प्रेमया (?) लोके
मम सायुज्यकांक्षया[5] ॥ ५०७ ॥

---

1 छिन्नकार्य–घ·च

2 निषिध्य–क. ख. ग. झ

3 पापात्मनामिति–च

4 सायुज्यदायकाः–क. ख. ग. झ

भूरुद्र[1] जङ्गमान् भूमौ
ब्रह्मविष्ण्वि[2]न्द्रपूजितान् ।
निरञ्जनान् नित्यशुद्धान्[3]
निखिलागमवेष्टितान् ॥ ५०८ ॥

[4]विराड्रूपान् विश्वमूर्तीन्
विषयेन्द्रियभेदकान् ।
त्रिषष्टिशीलसम्पन्नान्
प्रमथाचारचारितान् ॥ ५०९ ॥

गुरु[5]पादोदकास्वादान्[6] ।
प्रसाद[7]ब्रह्मसेवितान् ।
षट्स्थलब्रह्मसर्वज्ञान्[8]
आत्मकोशप्रदीपकान् ॥ ५१० ॥

विश्वाधारान् विलासस्थान्
काषायवसनप्रियान् ।

---

1 भूरुद्रान्–च

2 ह्मापेन्द्रे–च

3 शुद्ध–च

4 विराडित्याद्यर्धपद्य चारितानि
त्यनन्तरं दृश्यते–च

5 गुरोः–च

6 श्रेष्ठान्–क. ख. ग.ङ

7 प्रसाद्–च

8 षट्स्थल ब्रह्मिणां प्रज्ञान्–च

वीरमाहेश्वरान् वीरान्
विदुषो मन्त्रपारगान् ॥ ५११ ॥

आद्यन्तशून्यान् विश्वेषां[1]
ब्रह्मानन्दप्रदायकान् ।
विश्वाधिकान् मुनिवरान्
पादुकापादचारिणः[2] ॥ ५१२ ॥

ये भक्ताः परमप्रीत्या[3]
दीक्षाकाले वरानने[4] ।
वित्तशाठ्यविनिर्मुक्ताः
ते यान्ति मम सादरम्[5] ॥ ५१३ ॥

सायुज्यजन्मरहितं
मानातीतं सुखोद्भवम् ।
रुद्रकन्यासमोपेतं
रुद्रगान्धर्ववेष्टितम् ॥ ५१४ ॥

गान्धर्वैः दानवैः सिद्धैः
यक्षैर्गुह्य[6]र्गरुडैः ।

---

1 विश्वेशान्–च
2 पादपातुकचारिणः–क. ख. ग. झ
3 येऽर्चयन्ति परप्रीत्या–च
4 काले तु शिष्टकाः–च
5 पूजयामासुस्ते यांति मम प्रीत्या वरानने–क. ख. ग. झ
6 गुह्यैः–क. ख. ग

पन्नगैः ऋषिभिः सर्वैः
अभेद्यं नन्दिवेष्टितम् ॥ ५१४ ॥

चण्डिनाट्यसमोपेतं[1]
भृङ्गिहास्यसमन्वितम् ।
वेदानामागमानां च
मृगधानां[2] मनोहरैः ॥ ५१५ ॥

स्वरैरुदात्तसंमिश्रैः
सप्तगानसमन्वितैः[3] ।
तालक्रिय[4]लयोपेतैः
किन्नरैर्वेष्टितं परम् ॥ ५१६ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
दीक्षाकाले सुराधिपाः ।
विष्णुब्रह्मेन्द्रवायव्य[5]-
कुबेरशशिभानवः[6] ॥ ५१७ ॥

मम भक्त्या[7] सदा गौरि !
ध्यातुं कांक्षन्ति योगिनः[8] ।

---

1 समोपेत–क. ख. ग. झ
2 मागधिवः–क. ख. ग. झ
3 समाकुलैः–च
4 किल–च
5 ब्रह्मोपेन्द्रेन्द्रमरुतः च
6 भानवाः–क. ख. छ
7 भक्ताः–च
गिनम्–क. ख. ग घ. छ

भूरुद्रजङ्गमं श्रेष्ठं
प्राणलिङ्गाङ्गलिङ्गिनम् ॥ ५१८ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
सभां ब्रह्मेन्द्रसेविताम् ।
सप्तमातृकानाढ्य[1]स्थां
मन्त्रन्यास[2]समन्विताम् ॥ ५१९ ॥

[3]ब्रह्मेन्द्रमौलिसङ्घट्ट
रत्नदीधितिपादुकाम्[4] ।
ऋग्यजुस्सामाथर्वा-
युर्वेदा[5]दिविष्टिताम् ॥ ५२० ॥

शिवात्मजीवतत्त्वानां
जडचैतन्यवर्जिताम् ।
पुरातनकथामाला
यामृतानन्दलहरीम् (?) ॥ ५२१ ॥

योगध्यानक्रियासक्त-
षट्स्थलब्रह्मवेष्टिताम् ।

---

1 सुनाढ्य–च

2 मातृन्यास–च

3 इतः परं "माहेश्वरान्विताम्" (P. 504) इत्यन्तो भागः च–झ पुस्तकयोः दृश्यते ।

4 थर्वगन्धवायुर्वेदा–झ

5 पादुकाः–च

अनिर्वाच्यपराकार-
विश्वब्रह्मविलासिनीम् ॥ ५२२ ॥

ध्यानगम्यां जनानन्द-
मतिधातृधुरन्धराम् ।
स्वशोभा[1]धर्मनिलयां
स्वपूर्तिध्यानगर्भिताम् ॥ ५२३ ॥

अहं वा वर्णितु लोके
ब्रह्मदिक्पालसेवितः ।
त्वं वा सुरेन्द्र[2] दिक्पाल-
नारीसेवापदान्वितः ॥ ५२४ ॥

असमर्थोऽसि हे गौरि
नैरोकः [3]किं करिष्यति[4] ।
किङ्कराः सर्वदिक्पालाः
ब्रह्मविष्णुसमन्विताः ॥ ५२५ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
प्रसादब्रह्मणां प्रिये !

---

1 स्वगर्भ—च

2 जहरि—च

3 नेष्महे च

4 करिष्यन्ति—च

5 प्रसादब्रह्मचेतसाम्—च

कथये शृणु[1] हे कान्ते
इतिहासं सुविस्मितम् ॥ ५२६ ॥

सत्यज्ञानसदानन्द-
ज्ञानगम्यस्य भूपतेः ।
प्रत्यर्थिजनभूपाल-
मौलितेजस्स्वतेजसः[2] ॥ ५२७ ॥

सर्वशीलक्रियाचार-
वेष्टितस्य महात्मनः ।
षट्स्थलब्रह्मतत्त्वार्थ-
बोधकस्य दिने दिने ॥ ५३८ ॥

चतुः षष्टिकालविद्या
नारी नाट्योपशोभिताम् ।
मुक्तिसोपानसंयुक्त-
पदवीं जन्मवर्जिताम् ॥ ५२९ ॥

रुद्राक्षकण्ठवलयः
प्राणलिङ्गिप्रसादकः ।
शस्त्रास्त्रकोदण्डयुद्ध-
रणसन्धानवेष्टिनः ।
ब्रह्माण्डपुण्डरीकाण्ड-
प्रसूनास्त्रस्य मे प्रिये ॥ ५३० ॥

---

1 अथवा यदि–झ
2 प्रत्यर्थि सुर दिक्पाल मौलिं शूलस्य तेजसः–झ
3 अयं श्लोकः च. पुस्तके नास्ति

ब्रह्माण्डभाण्डमध्यस्थ-
कोटिसूर्यप्रभात्मनः ।
सत्येन्द्रस्य महीपाल-
सङ्घः प्राकृतदेहिनः ॥ ५३१ ॥

दुद्रुवः शैवदीक्षाङ्ग
महद्भावं महोदयम् ।
सुरार्चितप्रभावात्म-
प्राणलिङ्गप्रतिष्ठितम् ॥ ५३२ ॥

एत मे ब्रूहि हे कान्ते
शृणु मन्त्रार्थपारगम् ।
पुराकृतयुगे गौरि !
त्रिकूटाख्यगिरौ शृणु ॥ ५३३ ॥

शृङ्गत्रितयरत्नाभ-
वेष्टितं वरुणान्वितम् ।
पुरसञ्ज्ञि (?) पुण्यवति
सौधराजप्रभान्वितम् ॥ ५३४ ॥

समुद्रमध्ये सूर्यस्य
प्रतिबिम्बमिव प्रिये !
उल्ललास चलच्चन्द्र-
मध्यतोयवृषान्वितम् ॥ ५३५ ॥

तां सञ्ज्ञिवेदवेदाङ्ग-
पारगो ब्रह्मसेवितः ।

सत्येन्द्रो भूपतिः श्रीमान्
सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ ५३६ ॥

त्रिकालगुरुपादाब्ज-
सेवा लोलम्बलोचनः ।
रुद्राक्षकण्ठवलय-
प्राणलिङ्गिप्रसादिनः ॥ ५३७ ॥

भूरुद्रजङ्गमाचार-
चक्रवर्ती जनाधिपः ।
माहेश्वरक्रियारूप[1]-
भक्तपावनतन्त्रकः[2] ॥ ५३८ ॥

शासितुं सर्वदा लोके
क्षालितुं भक्तिसागरे ।
भूरुद्रजङ्गमानां च
पादपूजान्वितः प्रिये ॥ ५३९ ॥

बभूव भूमि[3]पातोरो- (?)
द्वितीय इव षण्मुखः ।
सत्येन्द्रस्य प्रिये गौरि
कान्ता स्त्रीणां ललामका ॥ ५४० ॥

---

1 रूपं—च

2 तन्त्रकम्—

3 धामि—च

केवलाङ्गी सुशीला सा
भवते तस्य भूपतेः ।
तयोः पुत्रो गुणनिधिः
शिवशर्मा शुचिव्रतः ॥ ५४१ ॥

बभूव तस्य हे गौरि
सत्येन्द्रस्य नृपस्य[1] सः ।
देशिकेन्द्रो[2] गुरुश्रेष्ठः
रेणुको ब्रह्मसेवितः[3] ॥ ५४२ ॥

वीरमाहेश्वरीं दीक्षां
घण्टा[4]पञ्चकवेष्टिताम्[5] ।
अनादिवीरशैवानां
शीलाचारप्रवर्तकान् ॥ ५४३ ॥

बोधयामास हे गौरि !
सत्येन्द्रस्य महात्मनः ।
त सुतं मन्त्रदीक्षाङ्गं
वीरातिमु[6]निसेविताम् ॥
रेणुको भूपतेः शुद्धां
सभां माहेश्वरान्विताम् ॥ ५४४ ॥

---

1 सुतस्य–झ
2 देशिकेन्द्र–झ
3 सेवितम्–च
4 कलश–झ
5 वेष्टितम्–च
6 हराति–च

वर्णितुं न समर्थोऽपि[1]
भवती[2]त्याहुरास्तिकाः[3] ।
अशेषप्रमथाः सर्वे
तृणी[4]कृतपुरन्दराः ॥ ५४५ ॥

प्राणलिङ्गस्य तान् कन्या
नष्टबन्धनबन्धितान् ।
शक्तिगोलक[5] संस्थान-
चक्रषट्कप्रवर्तकान् ॥ ५४६ ॥

भूरुद्रजङ्गमाचार-
शीलक्रियाशुभान्वितान् ।
वीरमाहेश्वराणां च
कवचं भक्ताङ्गवेष्टितम्[6] ॥ ५४७ ॥

मन्त्राणां मातरं शान्ताम्
मातृकान्यास[7]वेष्टिताम् ।
षडक्षरीं महालोके
सच्चिदानन्दसंयुताम् ॥ ५४८ ॥

---

1 समर्थोऽहं–च
2 भवामी–च
3 सात्त्विकाः–क. ख. ग. झ
4 सर्वप्रणी–च
5 कोलक–क. ख. ग. घ. झ
6 वेष्टितान्–झ. देहवेष्टितम्–च
7 कन्यास–क. ख. ग

दत्त्वा माहेश्वरान् सर्वान्
स्तोतुं चक्रे भयान्वितः ।
भूरुद्रजङ्गमानां च
पादद्वन्द्वच्युतं रजः ॥ ५४९ ॥

ब्रह्मेन्द्रमौलिमध्यस्थं
जगत्पावनसाधकम् ।
जगतां धर्मसम्पत्ति-
लयवैन्दवगर्भितम् ॥ ५५० ॥

आदाय मन्त्रनिलयं
तत्परागं[1] शुभोदयम् ।
फाल[2]मध्ये प्रतिष्ठाप्य
राजते रेणुको गुरुः ॥ ५५१ ॥

तदारभ्य प्रिये गौरि !
धारयामि सदा परम् ।
वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं रजः ॥ ५५२ ॥

तस्य प्रभावजनितं
फलं भाग्योदयं प्रिये ![3]

---

1 तत्त्वरांज-च

2 फल—च

3 शिवे—च

हेरम्बस्कन्दचण्डीश-
नन्दिभृङ्गिरिटादयः ॥ ५५३ ॥

न्ति[1] सर्वदा गौरि !
तव तेषां रजः शुभम् ।
कथयामि शृणु प्रीत्या
धृत्वा मूर्ध्नोत्तरालके[2] ॥ ५५४ ॥

सौभाग्यत्वं स्वरूपत्वं
लभ्यते[3] तेन हि प्रिये !
वीरमाहेश्वराणां च
पाद[4]द्वन्द्वच्युतेन च ॥ ५५५ ॥

रजसा यत्कृतं लोके
तत्कर्मफलदायकम् ।
लभन्ते[5] योगिनः सर्वे
सायुज्यं तत्प्रभावतः ॥ ५५६ ।

वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतात् प्रिये ।

---

1 कांक्षन्ते-क. ख. ग

2 धृतोऽसि शुभलक्षणे-क. ख. ग

3 लभसि-च

4 पद-क. ख. ग

5 लभ्यन्ते-क. ख. ग

रजसः[1] सर्वदा कान्ते
जगल्लीलाक्षयं परम्[2]. ॥ ५५७ ॥

बभूव तद्रजः सर्वाः
ब्रह्मविष्ण्विन्द्रदेवताः ।
दधते सत्क्रियारूपं[3]
महता कर्मणा प्रिये ॥ ५५८ ॥

भागं[4] स्वेषां सुरेन्द्राणां
आधिपत्यं महोदयम्
प्राप्नुवन्ति सुराः सर्वे
स्तोतुं को वा बुधोत्तमः ॥ ५५९ ॥

समर्थो हि प्रिये कान्ते
तत्र योगीश्वरान् प्रियान्[5] ।
वीरमाहेश्वरान् सर्वान्
शैवदीक्षाप्रवर्तकान् ॥ ५६० ॥

ध्यात्वा[6] निमज्जयन्त्याशु
त एते मुनिपुङ्गवाः ।
भवेयुः सर्वदा लोके
प्रमथानन्दमूर्तयः ॥ ५६१ ॥

---

1 रजः - च
2 पथम्—च
3 रूप—क. ख. ।
4 भोगं— च. झ
5 प्रभून्—व झ
6 धृत्वा—च

रजसा तेन तत्सर्वं
जगदण्डक्षयं कृतम् ।
जगतां विलयं तेन
गतं ब्रह्मेन्द्रवेष्टितम् ॥ ५६२ ॥

जगतामुदयं तेन
लभ्यते परमाणुना ।
इत्याहुः तार्किकाः सर्वे
इति यत्तदसाम्प्रतम् ॥ ५६३ ॥

रजसा तेन शुद्धेन
पादद्वन्द्वच्युतेन यत् ।
अनादिवीरशैवानां
भूरुद्राणां महात्मनाम् ॥ ५६४ ॥

योगीश्वराणां दीक्षाङ्ग[1]-
प्रसादब्रह्मधारिणाम् ।
ब्रह्माण्डकोटिमध्यस्थ-
जगतामुदयं प्रिये ॥ ५६५ ॥

इत्याहुः सात्त्विकाः शुद्धाः
प्रमथाः ब्रह्मसेविताः ।
तेषां मनोहरज्ञानं
माधवेन्द्रप्रपूजितम् ॥ ५६६ ॥

---

1 दीक्षाङ्ग-च

यत्तत्त्वं वेदतनयः
सदा दधति हे प्रिये !
योगिनां मुक्तिजनकम्
राज्ञां वीर्यपितामहम् ॥ ५६७ ॥

भोगिनां भोगनिलयं
स्त्रीणां शीलगुणोदयम् ।
भक्तानां भक्तिदं ज्ञानं
उद्वहन्तं[1] सुरार्चितम् ॥ ५६८ ॥

वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं रजः ।
एते नराधमा लोके
निन्दयन्ति निरन्तरम् ॥ ५६९ ॥

ते यान्ति रौरवं घोरं
पूतिगन्धसमन्वितम् ।
विण्मूत्रमध्ये विवरं
शतकोटिकुलान्विताः ॥ ५७० ॥

वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं रजः ।
तद्ब्रह्मतत्त्वमित्याहुः
ते यान्ति मम मन्दिरम् ॥ ५७१ ॥

---

[1] ज्ञानमुद्योहित–च

वीरमाहेश्वराणां च
प्रसादाङ्गमहात्मनाम् ।
पादद्वन्द्वच्युतं दिव्य
रजो मेरुरभूदियम्[1] ॥ ५७२ ॥

वायोश्चलत्समुद्भूतं
आकाशस्यावकाचकम् ।
लग्नस्तेजोऽपां द्रविणं
धारणं च भुवः प्रिये[2] !
कैलासमेरुसिंहाद्रि- (?)
हिम[3] शैलमहीधराः[4] ॥ ५७३ ॥

औन्नत्यं धातुनिलय
अचलत्वं महोदयम् ।
प्रभुत्वं[5] पर्वतानां च
वरत्वं वरयोगिनाम् ॥ ५७४ ॥

अभेद्यत्वं सुरेन्द्रैश्च
दानवैः देवतारिभिः ।

---

1 यद्रजः कणकाद्रियात्—कः ख . ग

2 वायोश्चलनमुद्भूतस्पर्शनं च
दिने दिने—क. ख. ग. झ

3 ह्येवं—क. ख. ग. झ

4 महिभृताम्—च

5 प्रयत्व—क. ख. ग

कृतास्त्रशस्त्रसम्पन्नैः[1]
ब्रह्मविष्णुतृणीकृतै[2]ः ॥ ५७५ ॥

मधुशुम्भनिशुम्भाद्यैः
हेतिप्रमुखराक्षसैः ।
रजसा तेन महता[3]
लभ्यन्ते नगदायकाः ॥ ५७६ ॥

वरुणस्यालयं लोके
रजसा लभ्यते प्रिये !
गभीरत्वं समुद्रत्वं
नदीनां सर्वदा प्रिये[4] ! ॥ ५७७ ॥

पतित्वं परमैश्वर्यं
निधित्वं रत्नसन्ततिम्[5]
दधानत्वं[6] गुरुत्वं च
श्वशुरत्वं सदा[7]प्रिये ॥ ५७८ ॥

---

1 मन्त्रास्त्रशस्त्रसम्पन्नैः–च
2 पुरन्दरैः–च
इतः परं च पुस्तके–
" रजसा लभ्यते गौरि महदैश्वर्यमुत्तमम् "
इत्यधिकः पाठःदृश्य
3 रजसा जङ्गमस्याङ्घ्रे
4 नदीनां च प्रवाहताः–च
5 प्रजापतित्वमैश्वयनिधित्वं
रत्नसन्ततिम्–च
6 दध्वे लभेत्–च
7 मम–च

विष्णोः शौर्योदयं दद्यात्[1]
प्राकृतस्य जडात्मनः ।
वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं रजः । ॥ ५७९ ॥

हिमाद्रिः[2] सर्वदा लोके
गह्वरेषु शुचिव्रतः ।
स धत्ते तेन[3] रजसा
महतामवनीतले ॥ ५८० ॥

गुरुत्वं तव तातत्वं
रागिण्यकुटिलात्मनः[4] ।
मैनाकप्रमुखानां च
श्वशुरत्वं ममापि च[5] ॥ ५८१ ॥

शैलानां किन्नराणां च[6]
आवासत्वमियात् खलु[7] ।
रजताद्रिः सदालोके
मत्वा धत्ते रजोधृतः[8] ॥ ५८२ ॥

---

1 शौर्योदर्यांकस्य–क. ख. ग
2 हेमाद्रिः–क. ख. ग. झ
3 स धत्ते न–च
4 रागिण्यकुटिलात्मनः–च
5 श्वशुरत्व ममापीच
आधिपत्य महोदयम्–क. ख. ग
6 ओषधीनां किन्नराणां–च
7 आवासे लभ्यते प्रिये!–क. ख. ग
8 स ध[illegible] स्रजः प्रिये क. ख. ग

वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं शुभम्[1] ।
असौ तेन पवित्रेण
रजसा चाद्रिनायकः[2] ॥५८३॥

विश्वगर्भस्य ब्रह्माण्ड-
कोटिरोमधरस्य मे ।
आवासत्वं सदा गौरि
प्रमथानां महात्मनाम् ॥ ५८४ ॥

ब्रह्माण्डकोटिगर्भस्थ-
प्राणलिङ्गं हृदि धृताम् ।
अखण्डपरशुध्यान-
स्वच्छ[3] विग्रहधारिणाम् ॥ ५८५ ॥

जितमन्मथबाणानां[4]
यमिनां योगिनां प्रिये ।
किन्नराणां सुरेन्द्राणां
नगानां मेदिनीधृताम्[5] ॥ ५८६ ॥

लभते हे मयीशानि
सत सत्यं वदाम्यहम्[6] ।

---

1 च्युतेन च–च

2 रजताद्रिनाथकः–क. ख. ग

3 स्वेच्छा–च

4 वैकार–क. ख. ग

5 तले–क.

1 लभते मे प्रिये गोरि चित्रं सत्य वरानने–क. ख. ग

त्रिकूटो भूधरो लोके
यद्रजो ब्रह्मधारि यत्[1] ॥ ५८७ ॥

शृङ्गेषु सर्वदा गौरि !
स धत्ते यो महीधरः ।
रजसा तेन शुद्धेन
त्रिकूटत्वं वरानने[2] ॥ ५८८ ॥

गतं कलिङ्गराजेन्द्र[3]-
पुत्रत्वं च[4] पुनः पुनः ।
लभते[5] साधु यत्पृष्टं
पादद्वन्द्वरजः शुभम् ॥ ५८९ ॥

पवित्रमघनाशं च
सत्यज्ञानैकसाधनम् ।
असुरेन्द्राः शिरोमध्ये
धारयन्ति[6] किमद्भुतम् ॥ ५९० ॥

सर्वेषां शम्भुयोगीनां[7]
गुरुद्राणां पदच्युतम् ।

---

1 यद्रजब्रह्मधारितत्-क. ख. ग
2 त्रिकूटतत्त्वमायमौ-च
3 धराकलिङ्गराजेन्द्रः-
4 स-च
5 लभ्यते-क. ग
6 धार्यंतीति-क. ख. ग
7 योगानां-च

यद्रजः सर्वदा लोके
विराण्मूर्तीव राजते[1] ॥ ५९१ ॥

तद्रजः सर्वदा लोके
योगिभिः ज्ञानसाधनैः ।
वालखिल्यैः सहस्रैश्चा-
ध्युप[2]मन्युपुरस्सरैः ॥ ५९२ ॥

दीक्षाङ्गशैवसंस्कारैः
शतानन्दपुरूरवैः ।
सेव्यते स्वात्मविज्ञानं
आत्मसाधनपेशलात् ॥ ५९३ ॥

रजोदर्शनमारभ्य
ब्रह्मयोगीश्वराः सदा
वालखिल्यदधीच्यत्रि[2]-
शतानन्दपुरूरवाः[3] ॥ ५९४ ॥

सर्वकर्माणि संत्यज्य[4]
यद्रजः शाम्भवात्मकम्
वीरमाहेश्वराणां च
पादद्वन्द्वच्युतं शुभम्[5] ॥ ५९५ ॥

---

1 विराण्मूर्तिविराजिते–च
2 श्च उप–क. ख. ग
3 दधीचात्रि–च
4 पुरूरवैः च
5 कर्मान् परित्यज्य–घ. च
घ. पुस्तके एतावत्पर्यन्तमेव चतुर्थः प ल समाप्तः कृत
इतःपरं च प्रथमपटलारम्भः दृश्यते ॥

आत्मानमिव कायेषु
धार्यते ज्ञानसाधनात्[1] ।।
दीक्षां विद्युत्प्रभारूपां
मोक्षपूजां[2] मनोहराम्[3] ॥ ५९६ ॥

घट[2]पञ्चकसंयुक्तां
शिवागमपरिष्कृताम् ।
पञ्चब्रह्मान्वितां विद्यां
पञ्चसूतकवर्जिताम्[4] ॥ ५९७ ॥

पुरातनाः पुण्योदयाः[5]
कांक्षन्ति प्रभवो बुधाः ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन
दीक्षाहीनं नरं प्रिये ॥ ५९८ ॥

चतुर्वेदधरं विप्रं[6]
सर्वतत्त्वसमन्वितम् ।
सुराभाण्डोदकमिव
पश्य गौरि निरन्तरम्[7] ॥ ५९९ ॥

---

5 साधकान्-च
2 पुञ्जां-क. ख. ग
4 म ोरमाम्-च
1 कलश-क. ख. ग
2 वर्जिताः-क. ख. ग
3 पुण्यनिधयः-क. ख. ग
4 वापि-च
5 वरानने-क. ख. ग

दीक्षाविहीनं द्विजनायकं शिवे !
वेदाङ्गसंस्कारपलित[1] कायम् ।
प्रेतात्मसन्धानसुरार्चितं नरं
त्वं पश्य लोके सुरबिन्दुवद्यथा[2] ॥ ६०० ॥

---

1 परि–च
2 त्तदा–च

इति श्रीवीरागमे वीरशैवदीक्षा
स्वरूपपादरेणवर्णनं नाम
चतर्थः पटलः

———O———

## वीरागमोत्तरप्रथमभागगतानां श्लोकानां

## अकारद्यानुक्रमणिका


| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| **अ** | | |
| अकारि तस्य | 205 | 146 |
| अखण्डं चन्द्र | 109 | 18 |
| अखण्डज्योति | 89 | 162 |
| अखण्डमद्वैत | 103 | 218 |
| अग्निऋक्षं परि | 148 | 184 |
| अग्निक्रोधं | 109 | 20 |
| अग्निमध्ये प्रति | 73 | 97 |
| अग्निसंस्कार | 224 | 216 |
| अघोरवक्त् | 87 | 152 |
| अज्ञानि जन्म | 84 | 140 |
| अणुमात्रम् | 252 | 325 |
| अज्ञानतत्व | 199 | 116 |
| अज्ञानध्वान्त | 196 | 106 |
| अतिगण्डं | 116 | 51 |
| अत्युन्नततरं | 129 | 104 |
| अथवा मृण्मयान् | 186 | 66 |
| अध्यात्मं तत्व | 9 | 32 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| अनर्थसाधनं | 68 | 76 |
| अनाथाः प्राकृताः | 166 | 259 |
| अनाद्यविद्या | 196 | 105 |
| अनुद्भूतस्वर | 184 | 56 |
| अनेकशिव | 61 | 49 |
| अनेकानि वि चे | 171 | 4 |
| अन्तर्यागक्रिया | 180 | 41 |
| अन्नकोशं | 114 | 39 |
| अन्यैर्वि चित्रैः | 192 | 90 |
| अपांसुला मति | 95 | 184 |
| अभिन्नशक्ति | 251 | 324 |
| अभिषेकान्विता | 256 | 344 |
| अभेद्यत्वं सुरे | 313 | 575 |
| अर्को व्यार्धि | 112 | 33 |
| अर्गळेन समू | 101 | 209 |
| अर्चयित्वा मम | 171 | 6 |
| ,, समा | 185 | 60 |
| अविद्यायोग | 283 | 447 |
| अविद्यारहितां | 149 | 188 |
| अवेहि तत्व | 98 | 197 |
| ,, सर्वदा | 29 | 483 |
| अशेषप्रमथा | 275 | 418 |
| ,, | 4 | 12 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| अष्टबन्धसमो | 247 | 308 |
| अष्टबन्धानिव | 220 | 201 |
| अष्टावरण | 254 | 335 |
| ,, | 260 | 362 |
| असत्ख्याति | 183 | 25 |
| असमर्थोऽसि | 302 | 524 |
| अस्ति गौरि सुरैः | 62 | 53 |
| ,, | 161 | 236 |
| अहं ब्रुवामि | 49 | 2 |
| ,, | 222 | 207 |
| अहं मन्ये ध्रुवं | 151 | 196 |
| अहं वा वर्णितुं | 302 | 52 |
| अहं वा शिशुमा | 234 | 258 |
| अहं सदा महा | 51 | 10 |
| अहो वेदान्त | 165 | 254 |

आ

| | | |
|---|---|---|
| आगमज्ञान् सदा | 185 | 61 |
| आगमाचार | 125 | 86 |
| आगम्य मन्त्र | 94 | 180 |
| आग्नेयकलशे | 183 | 73 |
| आग्नेयीं ककुभं | 241 | 280 |
| आचार्यं प्रमथ | 189 | 76 |

| श्लोकानामादिः | पृष्टसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| आचार्यो मन्त्र | 221 | 209 |
| आणवानि च | 6 | 22 |
| आत्मज्ञान | 114 | 41 |
| आत्मनः सार | 9 | 31 |
| आत्मन्यनात्मता | 5 | 18 |
| ,, | 8 | 30 |
| आत्मवान् सात्त्वि | 23 | 88 |
| आत्मानं तत्त्व | 31 | 119 |
| आत्मानन्दं शिवा | 97 | 196 |
| आत्मानमात्मना | 89 | 160 |
| आत्मानमिव | 319 | 596 |
| आत्मानं शिव | 1 | 50 |
| आत्मानं सर्व | 13 | 46 |
| आदाय मन्त्रा | 308 | 551 |
| ,, मे प्रियं | 168 | 267 |
| आद्यन्तशून्यं | 104 | 221 |
| ,, | 299 | 512 |
| आधारकुण्डली | 280 | 434 |
| आधारकोश | 296 | 500 |
| आध्यात्मिकं | 9 | 33 |
| आनन्दं ब्रह्म | 15 | 56 |
| आनन्दयन्ति | 76 | 109 |
| आपगा यमुना | 84 | 141 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| आयुष्मान् | 116 | 50 |
| आराधयन्ति | 78 | 116 |
| आलम्बनयष्टि | 193 | 95 |
| आवहनं | 286 | 459 |
| आवासयन्ति | 18 | 53 |
| ,, | 96 | 191 |
| ,, | 228 | 232 |
| ,, | 229 | 237 |
| ,, | 230 | 241 |
| ,, | 230 | 243 |
| ,, | 232 | 250 |
| आवासयामास | 228 | 233 |
| आश्रयं वंश | 272 | 405 |
| आहरेत् सर्वद | 268 | 309 |
| आहुर्मम समी | 127 | 94 |
| आहुस्सदा | 289 | 469 |
| आहुस्सर्वगुणो | 111 | 29 |
| आहूय ऋत्विजः | 187 | 70 |
| आहूय देवताः | 215 | 183 |

इ

| | | |
|---|---|---|
| इच्छन्ति सर्वदा | 157 | 222 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकासंख्या |
|---|---|---|
| इति चाहुः | 71 | 88 |
| इति तद्वचनं | 97 | 192 |
| ,, | 274 | 411 |
| इति बाधाः प्रभ | 73 | 96 |
| इति बोधं | 295 | 497 |
| इति यत्तत्त्व | 14 | 53 |
| इति यत् सततं | 12 | 43 |
| इतिहासं महा | 262 | 369 |
| इत्याह भगवान् | 212 | 17 |
| ,, रेणुकः | 277 | 424 |
| ,, स्वर्ग | 209 | 161 |
| इत्याहुः कामिनि | 133 | 11 |
| ,, दीक्ष | 126 | 91 |
| ,, मम | 78 | 115 |
| ,, तत्त्व | 134 | 125 |
| ,, सर्वदा | 70 | 85 |
| ,, सात्त्विकाः | 311 | 566 |
| इदं पवित्रं | 168 | 268 |
| ,, | 242 | 285 |
| इदं माहात्म्यं | 47 | 178 |
| इन्द्राग्नियम | 164 | 251 |
| इलामध्ये सुषु | 40 | 152 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| इलावर्षे गन्ध | 61 | 47 |
| **ई** | | |
| ईशान्यकलशे | 188 | 27 |
| ईषणात्रय | 259 | 355 |
| **उ** | | |
| उत्तरात्रय | 107 | 10 |
| उत्पाटितुं | 165 | 252 |
| उद्वर्तवर्ता | 181 | 43 |
| उद्देशभेद | 178 | 36 |
| उद्बोधयन्ति | 6 | 21 |
| उद्योगयति | 154 | 210 |
| उपदेशं स्वीक | 4 | 14 |
| उपमन्युदधी | 202 | 133 |
| उपाधिवाद | 178 | 34 |
| **ऋ** | | |
| ऋक्षाण्यपि परि | 107 | 9 |
| ऋत्विजं शान्ति | 189 | 74 |
| ऋषयः सर्वदा | 42 | 160 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकासंख्या |
|---|---|---|
| ऋषिगोत्रान्व | 64 | 6 |
| ऋषीणामग्नि | 80 | 124 |
| **ए** | | |
| एकपादं | 108 | 12 |
| एकवारं त्रि | 245 | 297 |
| एकादशयती | 127 | 96 |
| एतन्मे ब्रूहि | 304 | 533 |
| एतस्मिन्नन्तरे | 71 | 89 |
| तेन मनुना | 203 | 136 |
| **ऐ** | | |
| ऐन्द्रान्मायावि | 120 | 68 |
| **ओ** | | |
| ओष्ठ मे रक्ष | 238 | 271 |
| ओहिलं तत्त्व | 207 | 151 |
| ,, | 216 | 185 |
| ओहिलो धर्म | 208 | 155 |
| **औ** | | |
| औन्नत्यं धातु | 313 | 574 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| | क | |
| कक्षपालावि | 270 | 400 |
| कचभारं | 272 | 407 |
| कण्ठं मे पातु | 236 | 265 |
| कथयामि तव | 161 | 235 |
| कन्दुकीकृत | 201 | 129 |
| कन्यालग्नं परं | 142 | 161 |
| करखङ्गध | 194 | 97 |
| करभीकृत | 202 | 136 |
| करोति मम | 57 | 33 |
| ,, जङ्गमं | 46 | 174 |
| ,, तद्गुरुः | 46 | 176 |
| ,, देहिनां | 41 | 156 |
| ,, एकादशी | 115 | 44 |
| करोमि तावतीं | 51 | 11 |
| कर्कटके | 122 | 74 |
| कर्कटं भास्करे | 137 | 137 |
| कर्मत्यागं | 152 | 201 |
| कर्महीनं | 292 | 48 |
| कवचं वेद | 246 | 301 |
| कलातीता | 121 | 73 |
| कलाशासन | 20 | 77 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| कश्यपात्रि | 147 | 181 |
| काङ्क्षन्ति सर्वदा | 309 | 554 |
| कान्ताजनानां | 243 | 291 |
| कामत्यागं | 172 | 21 |
| कार्तस्वरान्वितं | 203 | 135 |
| कार्तिके श्रवणे | 170 | [illegible] |
| कालकण्ठं | 289 | 47[illegible] |
| कालकर्मक्रिया | 184 | 55 |
| कालः शिवः | 158 | 223 |
| कालाधीनं | 160 | 234 |
| काश्यपात्रि | 58 | 38 |
| कास्यांश्च पित्तलान् | 186 | 64 |
| किङ्कराः | 287 | 46 |
| किमुपेक्ष्यसि | 213 | 175 |
| किरातं प्राकृतं | 269 | 397 |
| किरातस्य वचः | 276 | 420 |
| किरातो मृगया | 213 | 176 |
| कुङ्कुमागुरु | 205 | 144 |
| कुजस्फोटं | 137 | 139 |
| कुजादिपञ्च | 93 | 178 |
| कुण्डलीकृत | 86 | 147 |
| कुण्डली ज्ञान | 32 | 122 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| कुण्डलीयोग | 176 | 26 |
| कुमारगुरवे | 203 | 134 |
| कुर्वन्ति ते | 246 | 304 |
| कुलाभिमान | 64 | 59 |
| कुलीरं तु गते | 33 | 121 |
| कुलीरं सूर्यपुत्रे | 141 | 154 |
| कुहूः तुच्छित | 116 | 48 |
| कृतं सुराणां | 223 | 214 |
| कृत्वा प्रसन्न | 186 | 67 |
| कृष्णसारमृग | 265 | 378 |
| केतुमालापुरी | 92 | 173 |
| केतौ मीनं | 143 | 163 |
| केनचिन्मनु | 100 | 205 |
| केन्द्रत्रिकोण | 106 | 7 |
| केवलाङ्गीसु | 306 | 541 |
| कैलासशिखरे | 1 | 1 |
| कोटीनि ब्रह्म | 260 | 359 |
| कोपभीतिसमा | 120 | 67 |
| क्रमाणां क्रम | 82 | 133 |
| क्षयमासयुते | 148 | 186 |
| क्षयमासं | 145 | 175 |
| क्षयमासे महा | 146 | 177 |
| क्षुद्रयोग | 175 | 21 |
| क्षेमतारासमो | 109 | 19 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| | ख | |
| खगानां गमि | 83 | 139 |
| | ग | |
| गङ्गास्नानफलं | 245 | 298 |
| गण्डात् गण्डा | 117 | 53 |
| गजतुरग | 283 | 446 |
| गतस्पृहगणा | 183 | 53 |
| गते नृणां | 131 | 112 |
| गत्वा प्रदक्षिणं | 275 | 417 |
| गन्धर्वाणां | 243 | 289 |
| गच्छन्ति तां | 66 | 67 |
| गर्तं कलिङ्ग | 317 | 589 |
| गाण्डीवी च | 163 | 244 |
| गान्धर्वैःदान | 299 | 514 |
| गुणवान्सुश्रु | 161 | 239 |
| गुणाणवमिति | 6 | 20 |
| गुणोदयं | 173 | 13 |
| गुरुकाव्यबु | 107 | 11 |
| गुरुत्वं तव | 315 | 581 |
| गुरुं सदाशिवं | 34 | 127 |
| गुरुसौम्यौ | 128 | 98 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| गुरूणां च | 281 | 439 |
| ,, | 35 | 132 |
| गुरोः कारुण्य | 247 | 307 |
| गुरुपादोदक | 298 | 510 |
| गुरोर्वंशाव | 248 | 312 |
| गुह्यं पातु | 235 | 262 |
| गुढपापसमो | 224 | 218 |
| गूढपापासमो | 259 | 357 |
| गृहदारसमो | 194 | 99 |
| गोमेधिक | 168 | 266 |
| गोलकेरश्मि | 254 | 333 |
| ग्रहराज्ञि | 132 | 118 |
| ग्रहाणां नायकं | 83 | 137 |
| ग्रहैश्चन्द्रगुरु | 108 | 16 |
| **घ** | | |
| घटपञ्चक | 319 | 597 |
| घटे दीक्षन्विते | 125 | 87 |
| घनलिङ्गमिति | 194 | 98 |
| घुसृणैः कुमुदैः | 191 | 85 |
| **च** | | |
| चक्रेषु बिम्बि | 43 | 162 |

| श्लोकानामादिः | पृष्टसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| चण्डाल इति | 288 | 468 |
| ,, | 290 | 476 |
| चण्डिनाट्य | 300 | 515 |
| चतुरक्षर | 190 | 80 |
| चतुर्णां मध्य | 190 | 81 |
| चतुर्दशी | 115 | 46 |
| चतुर्भिस्त्वष्ट | 62 | 52 |
| चतुर्वेद | 58 | 36 |
| ,, | 319 | 599 |
| ,, | 224 | 219 |
| चतुष्षष्टिकला | 201 | 126 |
| ,, | 303 | 529 |
| चन्द्रताराबल | 106 | 6 |
| चन्द्रमानं | 160 | 232 |
| चन्द्रार्क वर्ति | 198 | 115 |
| चरमाद्रिपुरो | 92 | 171 |
| चरलग्नानि | 144 | 167 |
| चरित्रेण च | 219 | 197 |
| चलत्कुण्डल | 272 | 406 |
| चलत्तरङ्ग | 263 | 371 |
| चापलग्नं | 139 | 146 |
| चित्छेद तान् | 65 | 64 |
| ,, मे | 218 | 193 |
| चिच्छेद यन्ति | 25 | 9 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| चित्ते जाग्रं प्रति | 18 | |
| चित्रगुप्तसमो | 26 | 102 |
| चित्ररत्नाय | 202 | 131 |
| चूतपुष्पैः | [ | 86 |
| चेष्टासंयुक्त | 176 | 28 |
| | ज | |
| जगतां पितरं | 44 | 168 |
| जगतामधी | 282 | 443 |
| जगतामुदयं | 311 | 563 |
| जगता वेष्टितः | 99 | 201 |
| जडीकृत | 163 | 245 |
| ,, | 181 | 45 |
| जम्बुमालि | 29 | 110 |
| जलपानगतं | 256 | 345 |
| जलपानानि | 257 | 346 |
| जलमध्ये | 219 | 194 |
| जाग्रे चैतन्य | 11 | 38 |
| ,, प्राणं | 10 | 34 |
| ,, स्वप्ने | 103 | 216 |
| जायते तां मनो | 49 | 3 |
| ,, मनु | 271 | 423 |
| ,, सिंह | 123 | 78 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| जायन्ते तत्र | 30 | 116 |
| ,, जन्तवः | 291 | 481 |
| ,, मम | 36 | 135 |
| ,, वैष्णवाः | 28 | 109 |
| जायेत च्चित्रिंम | 5 | 16 |
| जितमन्मथ | 316 | 586 |
| जितेन्द्रियं | 54 | 23 |
| जिह्वाग्रेशिव | 47 | 179 |
| जीवज्ञानं मतो | 17 | 65 |
| जीवः शिव इति | 12 | 45 |
| ,, सुरेन्द्र | 77 | 112 |
| जीवः आत्मवता | 6 | 19 |
| जीवान्तरात्म | 29 | 111 |
| जीवो जड इति | 8 | 29 |
| ज्ञानदृष्टियुतां | 144 | 169 |
| ज्ञानविद्यामह | 179 | 37 |
| ज्ञानं सदा | 114 | 42 |
| ज्येष्ठाश्विश्राव | 145 | 171 |
| ज्योतिश्चक्रात्म | 159 | 230 |
| ज्योतिषाङ्गः | 162 | 243 |

झ

| | | |
|---|---|---|
| झषराशि | 136 | 132 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| | ड | |
| डिण्डिमा रवि | 229 | 235 |
| | त | |
| त एते मम | 44 | 166 |
| ,, सर्वदा | 35 | 134 |
| तं कालं | 143 | 162 |
| तत्कालं दीक्ष | 129 | 103 |
| तत्तेषां ज्ञान | 15 | 55 |
| तत्याजाशु | 277 | 426 |
| तत्रापि पञ्चमः | 99 | 203 |
| तत्वमस्यादि | 91 | 170 |
| ,, | 7 | 25 |
| तत्वानां शिव | 4 | 13 |
| तत्सर्वं साध | 3 | 10 |
| ,, | 97 | 194 |
| तथा देहं | 250 | 320 |
| तद्ज्ञानं | 14 | 51 |
| ,, | 8 | 28 |
| ,, | 112 | 32 |
| तदङ्कमोहि | 209 | 160 |
| तदब्दमध्ये | 145 | 174 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| तदारभ्य सुर | 219 | 196 |
| ,, प्रिये | 308 | 552 |
| ,, महा | 28 | 108 |
| तं दूषितं | 297 | 504 |
| तद्ग्रामे भक्ति | 46 | 175 |
| तद्दिनं योग | 149 | 189 |
| तद्दृष्टं कर्म | 135 | 131 |
| तद्देशं पालितुं | 23 | 90 |
| तद्योग योग | 119 | 64 |
| तद्व्रजः सर्वदा | 318 | 592 |
| तं द्विजं योगिनः | 292 | 485 |
| तन्तज्ञो मन्त्रि | 63 | 57 |
| तन्मण्डल | 135 | 128 |
| तन्मन्त्रं मन्त्र | 123 | 79 |
| तपोनिधिम् | 173 | 14 |
| तप्तमुद्राङ्कित | 24 | 91 |
| तप्तमुद्राविद | 199 | 118 |
| तप्तसंस्कार | 20 | 76 |
| तं मातङ्गप्रिये | 271 | 402 |
| तमालैः बिम्ब | 266 | 301 |
| तं मासं | 145 | 172 |
| तमोघ्नाय | 200 | 124 |
| तयोर्मध्यं | 135 | 130 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| तल्लग्नं दीक्ष | 142 | 157 |
| तव दीक्षां | 276 | 419 |
| तव पादतले | 215 | 182 |
| तंवीक्ष्य चान्ध | 67 | 73 |
| तं शिष्यं प्रति | 248 | 309 |
| तस्मात् सर्व | 294 | 491 |
| ,, | 124 | 85 |
| ,, | 146 | 178 |
| तस्य कर्म विनि | 151 | 198 |
| तस्य तद्वच | 67 | 72 |
| ,, | 214 | 180 |
| ,, | 277 | 425 |
| ,, | 160 | 233 |
| तस्य तीरे व्योम | 266 | 383 |
| तस्य दीक्षा फलं | 244 | 294 |
| तस्य नादं | 165 | 253 |
| तस्य प्रभाव | 308 | 553 |
| तस्य योगीश्च | 271 | 404 |
| तस्य राज्ञस्तदा | 28 | 106 |
| तस्य विप्रस्य | 24 | 92 |
| तस्य शिष्यस्य | 248 | 313 |
| तस्याङ्गं तप्त | 66 | 69 |
| तस्यार्कस्य | 216 | 187 |
| तस्याः प्रभाव | 94 | 179 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| तां कर्तरिं | 134 | 126 |
| तां दीक्षां मान | 226 | 224 |
| तान् दूतान् | 24 | 94 |
| तान् द्विजान् | 73 | 95 |
| ,, | 73 | 98 |
| तान् राक्षसान् | 22 | 85 |
| तां पुरीं पाल | 62 | 54 |
| ताम्रकुम्भान् | 186 | 65 |
| तां रेणुको मुनि | 95 | 185 |
| तां संजिवेद | 304 | 536 |
| तालुमूले भवे | 41 | 155 |
| तिमिरं जाय | 115 | 45 |
| तिलपुष्पसम | 273 | 408 |
| तिष्ठन्ति मम | 230 | 240 |
| ,, मे | 230 | 242 |
| तिष्यर्क्षं च | 110 | 22 |
| तुङ्गभद्रा नदी | 264 | 374 |
| तुभ्यं दास्यामि | 203 | 137 |
| तुलायनम् | 153 | 206 |
| तुलायां तु | 123 | 81 |
| तृणीकुर्वन्ति | 51 | 9 |
| ते चक्रुः सर्वदा | 569 | 393 |
| तेन दीक्षाप्र | 278 | 428 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| ते यान्ति पूति | 21 | 80 |
| ,, प्रेत | 156 | 217 |
| ,, मम | 281 | 440 |
| ,, ,, | 138 | 142 |
| ,, ,, | 220 | 199 |
| ,, ,, | 225 | 220 |
| ,, ,, | 296 | 502 |
| ते यान्ति रोषं | 22 | 84 |
| ,, | 226 | 225 |
| ,, | 312 | 570 |
| तेषां कोटीतले | 229 | 239 |
| तेषां जडीकृतं | 16 | 59 |
| ,, तद्वचनं | 24 | 93 |
| ,, पाद | 231 | 240 |
| ,, | 56 | 30 |
| ,, प्रपञ्चि | 18 | 69 |
| ,, ,, | 17 | 62 |
| ,, भक्ति | 167 | 261 |
| ,, मल | 20 | 74 |
| ,, मनो | 76 | 110 |
| ,, मोहा | 18 | 67 |
| ,, माहे | 51 | 12 |
| ,, ,, | 50 | 5 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्य |
|---|---|---|
| तेषां माहे | 44 | 169 |
| ,, ,, | 69 | 81 |
| ,, ,, | 120 | 65 |
| तेषामुपरि | 188 | 71 |
| तैस्त्रियैर्भाट | 265 | 380 |
| त्यजन्ति भाव | 20 | 75 |
| ,, विमल | 29 | 112 |
| ,, सततं | 159 | 227 |
| त्रिकालगुरु | 305 | 537 |
| त्रिपादो बल | 108 | 13 |
| त्रियं कमण्डलु | 109 | 17 |
| त्रिषष्टिशील | 174 | 18 |
| त्वचं मे पातु | 239 | 274 |
| त्वयार्जितमिदं | 274 | 412 |
| त्वं याहि रौर | 28 | 107 |

द

| | | |
|---|---|---|
| दग्धकीं नरं | 297 | 506 |
| दग्धकीटस्य | 294 | 492 |
| ,, | 295 | 496 |
| दत्त्वा दिनेदिने | 208 | 157 |
| दत्त्वा माहेश्वरान् | 308 | 549 |
| ,, सर्वगुणो | 220 | 200 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| दत्त्वा सर्वगुणो | 221 | 202 |
| ददर्श शाम्भव | 213 | 177 |
| ,, सर्वदा | 291 | 478 |
| दधते जङ्गमाः | 76 | 107 |
| दमाच्छमं शान्ति | 88 | 155 |
| दमादन्यत् | 87 | 153 |
| दलबीजस | 102 | 212 |
| दशाद्वारान्वि | 92 | 172 |
| दाडिमैर्दात्रि | 191 | 87 |
| दाडिमैरसम | 266 | 382 |
| दानवानां बल | 82 | 132 |
| दारिद्र्यादात्म | 276 | 422 |
| दिक्पालप्राण | 200 | 122 |
| दिगीशवृन्द | 162 | 242 |
| दिनेदिने च | 45 | 172 |
| दिव्यं च जीव | 11 | 40 |
| दिशमीशान | 242 | 283 |
| दीक्षाकाले प्रिये | 225 | 221 |
| दीक्षाङ्गमन्त्र | 96 | 189 |
| दीक्षाङ्गशैव | 318 | 593 |
| दीक्षां माहेश्व | 146 | 176 |
| दीक्षाविहीनं | 320 | 60 |
| दीक्षाहीनं | 293 | 487 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| दीक्षाहीनान् | 154 | 209 |
| दीपं कर्पूर | 221 | 204 |
| दुःखध्वंसः | 15 | 57 |
| दुत्तरैःपद्म | 191 | 84 |
| दुद्रुवुं शैव | 304 | 532 |
| दुराचाराःपाप | 3[illegible] | 145 |
| दुराचारान् | 6[illegible] | 58 |
| दुर्भिक्षं जायते | 210 | 164 |
| दृष्टे सूर्ये | 258 | 350 |
| दृष्ट्वा तत्पटलं | 256 | 342 |
| ,, मनोहरा | 27 | 105 |
| देवतानां | 217 | 190 |
| ,, | 74 | 10[illegible] |
| ,, | 7 | 26 |
| देवदान्व | 290 | 477 |
| देवदेव | 286 | 457 |
| ,, | [illegible]62 | [illegible]68 |
| ,, | 170 | 1 |
| ,, | 251 | 321 |
| ,, | 49 | 1 |
| ,, | 234 | 256 |
| ,, | 2 | 4 |
| देवदेवः शिवः | 1 | 2 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| देशिकेन्द्रं | 172 | 11 |
| देशिकेन्द्रः | 146 | 175 |
| ,, | 2 | 7 |
| ,, | 207 | 152 |
| ,, | 147 | 183 |
| ,, | 152 | 202 |
| ,, | 94 | 183 |
| ,, | 129 | 106 |
| देहं त्यक्त्वा मम | 252 | 328 |
| देहार्जितं | 271 | 403 |
| द्रव्योद्देश | 176 | 27 |
| द्रोणपुष्पैः | 190 | 83 |
| द्विजहोम | 199 | 119 |
| द्विजाधीनमिति | 65 | 63 |
| द्विजान् वर्णर | 268 | 391 |
| द्विजेभ्यो भक्ति | 225 | 222 |
| द्वितीयं द्वैत | 113 | 38 |
| द्विसप्ततिसह | 39 | 150 |
| | ध | |
| धर्मकोशं दमो | 81 | 129 |
| धर्मगुप्तं नृपं | 71 | 90 |
| धर्मगुप्तस्य | 67 | 74 |
| ,, | 75 | 104 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| धर्मज्ञः सत्य | 63 | 55 |
| धर्मज्ञः सत्य | 23 | 87 |
| धर्मशास्त्र | 227 | 228 |
| धारयन्ति सदा | 10 | 36 |
| धारिणं योग | 54 | 24 |
| धिक्धिक् वृथा | 292 | 486 |
| धूपधूम्रं | 207 | 154 |
| धूपाष्टकं भक्ति | 205 | 145 |
| ध्यात्वा निमज्ज | 310 | 561 |
| ध्यानगम्यं जना | 302 | 523 |
| ध्यानं चक्रः सदा | 90 | 163 |
| ध्यानयोग | 174 | 19 |
| ध्रुवतारासमो | 92 | 174 |
| ध्रुवं भवति | 256 | 343 |

न

| | | |
|---|---|---|
| न कुर्वन्तीति | 143 | 164 |
| नखपुष्पैः | 192 | 88 |
| न ताडयन्ति | 21 | 79 |
| नन्दिचण्डिद्वार | 254 | 337 |
| न निरुध्यामहा | 90 | 165 |
| न भवति महा | 75 | 106 |
| नमः खण्डेन्दु | 279 | 433 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| नमः शिवःशिवो | 189 | 77 |
| नमः सौमवि | 196 | 104 |
| नमः सूत्रशरी | 197 | 109 |
| नमस्कारप्र | 85 | 145 |
| नमस्सोमवि | 71 | 91 |
| नमो नमः | 165 | 255 |
| नमो वेदान्त | 166 | 256 |
| नवद्वारसमा | 182 | 49 |
| नवमी प्राण | 115 | 43 |
| नवरत्नसमो | 247 | 306 |
| न समर्थो हि | 86 | 148 |
| नारीकण्ठं | 274 | 414 |
| नासामूले मनो | 33 | 125 |
| नित्यविज्ञान | 184 | 57 |
| नित्यानन्दम् | 163 | 248 |
| निन्दयामासुः | 291 | 479 |
| निपेतुर्गगने | 65 | 66 |
| निरञ्जनं नि | 32 | 120 |
| निरीहं शाश्वतं | 137 | 136 |
| निरीश्वरार्थ | 16 | 61 |
| निरुध्दद्यमनो | 164 | 250 |
| निरोधयन्ति | 89 | 161 |
| निर्जाड्यं निर्वि | 192 | 91 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| निर्लेपकाय | 198 | 112 |
| निर्विकल्पं गुणा | 87 | 154 |
| निषिद्धं शास्त्र | 297 | 505 |
| नीलोत्पलदल | 263 | 373 |
| नृणां तत्त्ववि | 132 | 119 |
| नृणां भक्तिकरं | 234 | 257 |
| नृणां विपत्करं | 147 | 180 |
| ,, | 138 | 140 |
| नृपतिर्मणि | 95 | 186 |
| नृपं प्रतिदमो | 97 | 195 |
| नृपान् परम | 59 | 40 |
| नेच्छन्ति | 294 | 494 |
| नेश्महे वीर | 280 | 437 |
| नेश्महे हे | 83 | 138 |
| नैसर्गिकं | 108 | 14 |
| नैसर्गिकक्रिया | 182 | 47 |
| न्यासपञ्चक | 187 | 68 |

प

| | | |
|---|---|---|
| पक्षिणां घूक | 288 | 467 |
| पञ्चकोशात्मक | 201 | 127 |
| पञ्चब्रह्मसमो | 80 | 126 |
| पञ्चब्रह्मैक | 204 | 138 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| पञ्चभक्ष्यसमो | 205 | 142 |
| पञ्चमी पञ्च | 114 | 40 |
| पञ्चवर्णात्म | 136 | 134 |
| पञ्चविंशति | 19 | 114 |
| पञ्चसूतक | 279 | 432 |
| ,, | 199 | 120 |
| ,, | 224 | 217 |
| ,, | 58 | 37 |
| पञ्चाक्षरमयं | 204 | 139 |
| पञ्चेष्टकयु | 149 | 187 |
| पठन्ति विष्णु | 36 | 138 |
| पठन्ति ये | 220 | 198 |
| पठस्व परम | 101 | 211 |
| पतिते मम | 25 | 98 |
| पतित्वं पर | 314 | 578 |
| पपात सहसा | 275 | 415 |
| पप्रच्छ भक्ति | 95 | 187 |
| पम्पासरोवर | 264 | 376 |
| परिघः ( घात् ) | 118 | 60 |
| परित्यज्य महा | 146 | 174 |
| पर्जन्यायाद | 282 | 442 |
| पल्लवानि दला | 171 | 5 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| पवित्रमधना | 317 | 590 |
| पश्य गौरि | 289 | 470 |
| पश्यन्ति जङ्गमाः | 89 | 159 |
| पश्यन्ति जीव | 13 | 49 |
| पश्यन्ति मानवाः | 294 | 493 |
| पाञ्चरात्रागमा | 176 | 25 |
| ,, | 30 | 113 |
| पातादौ निर्दय | 152 | 200 |
| पातालं मम | 24 | 284 |
| पातालवर्के | 3 | 11 |
| पातु मे जग | 237 | 267 |
| पादाग्रे जङ्गमः | 235 | 260 |
| पादाग्रे वाक्पतिः | 232 | 249 |
| पादुकान्यस्त | 181 | 44 |
| पादमध्ये प्रति | 212 | 171 |
| पादोदकप्रसा | 193 | 93 |
| ,, | 221 | 206 |
| पादोदकेन | 258 | 352 |
| पापग्रहान्वि | 138 | 143 |
| पापात्मानं | 297 | 507 |
| पापारण्यकु | 279 | 431 |
| पायुं मे पातु | 235 | 263 |
| पावनाना पन्कि | 83 | 135 |

| श्लोकानामादिः | पटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| पिङ्गकेशां | | 247 |
| पितरं देव | 81 | 130 |
| पित्रर्क्ष आयु | 110 | 23 |
| पीठमध्ये तिल | 253 | 329 |
| पुण्ड्रेक्षुमक्षि | 30 | 114 |
| पुण्यवृक्षसमा | 263 | 372 |
| पुराकृतयुगे | 23 | 86 |
| ,, | 45 | 170 |
| ,, | 60 | 46 |
| पुराणवाद | 18 | 86 |
| पुराणानि विद्धि | 22 | 83 |
| पुरातनचरि | 249 | 314 |
| पुरातनाः पुण्यो | 319 | 593 |
| पुष्पवृष्टिः ववुः | 66 | 684 |
| ,, | 215 | 184 |
| पूजयित्वा मम | 171 | [illegible] |
| पूजयेत् तत्त्व | 221 | 205 |
| पूजां कुर्वन्ति | 52 | 14 |
| ,, | 58 | 39 |
| पूर्णचन्द्रस | 141 | 156 |
| पूर्वाभाद्रान् | 112 | 31 |
| प्रकृतिं विकृतिं | 49 | [illegible] |
| प्रकोष्ठे मे | 237 | 267 |

| श्लोकानामादिः | पृष्टसंख्या | श्लोकसंख्य |
|---|---|---|
| प्रक्षाल्य मन्त्र | 204 | 141 |
| प्रज्ञानं प्रति | 285 | 454 |
| प्रणवब्रह्म | 248 | 310 |
| प्रणवाज्जाय | 35 | 133 |
| प्रतिष्ठाप्य महा | 34 | 128 |
| प्रत्यक्षमोक्ष | 196 | 103 |
| प्रत्यर्थिराज | 267 | 385 |
| प्रत्युवाच मम | 207 | 153 |
| प्रत्येकं पूज | 195 | 102 |
| प्रदापयति | 247 | 305 |
| ,, | 287 | 465 |
| ,, | 112 | 30 |
| ,, | 121 | 70 |
| ,, | 117 | 54 |
| ,, | 117 | 52 |
| प्रधाननाडी | 40 | 151 |
| प्रपञ्चसार | 185 | 59 |
| प्रभाकरे घट | 130 | 107 |
| प्रमथेन्द्राय | 166 | 257 |
| प्रमादाद्वा | 250 | 319 |
| प्रवेशयन्ति | 255 | 341 |
| ,, | 143 | 165 |
| ,, | 142 | 159 |
| [illegible]तत्व | 222 | 208 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| प्रसादब्रह्म | 278 | 427 |
| प्रसादभाव | 189 | 79 |
| प्राकृतं प्रकृति | 296 | 503 |
| प्राणलिङ्गस्य | 307 | 546 |
| प्राणलिङ्गाय | 197 | 107 |
| प्राणलिङ्गी | 161 | 237 |
| प्राप्नुवन्ति | 136 | 135 |
| ,, | 38 | 144 |
| प्रायश्चित्तक्रियो | 290 | 457 |
| प्रेतलिङ्गार्चन | 286 | 458 |
| ,, | 200 | 121 |
| फल्गुणि [न्या] | 110 | 24 |
| **ब** | | |
| बबन्ध तस्य | 66 | 70 |
| बभूव तद्व्रजः | 310 | 558 |
| ,, तस्य | 306 | 542 |
| ,, भूमि | 305 | 540 |
| बम्भरै गारुडे | 265 | 379 |
| बवे बान्धव | 125 | 89 |
| बहुपातक | 276 | 421 |
| बाहू मे पातु | 236 | 266 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| बिभ्रन्ते तस्य | 86 | 151 |
| बुद्धि चित्ते प्रति | 41 | 154 |
| बैन्दवज्ञान | 197 | 110 |
| बोधयामि सदा | 227 | 231 |
| बोधयामास | 306 | 544 |
| ब्रह्मविष्णुसुमे | 72 | 93 |
| ,, | 278 | 429 |
| ब्रह्माण्डकूट | 219 | 195 |
| ब्रह्माण्डकोटि | 316 | 585 |
| ,, | 175 | 24 |
| ,, गर्भ | 197 | 111 |
| ,, ततयः | 232 | 251 |
| ,, ,, | 53 | 19 |
| ,, जनना | 91 | 169 |
| ब्रह्माण्डभाण्ड | 304 | 531 |
| ब्रह्माण्डभाण्ड | 80 | 123 |
| ब्रह्माण्डसूत्र | 250 | 318 |
| ब्रह्मास्त्रेण | 218 | 192 |
| ,, | 25 | 96 |
| ब्रह्मेंद्रमौलि | 308 | 550 |
| ,, | 310 | 520 |
| ब्रह्मेन्द्ररुद्र | 285 | 455 |
| ब्रूहि कालहर | 262 | 340 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| | भ | |
| भक्तपाप | 198 | 113 |
| भक्तभक्तिक्रियो | 182 | 50 |
| भक्तमाहेश्वरा | ·3 | 9 |
| भक्तानां तत्त | 140 | 150 |
| ,, | 133 | 123 |
| ,, भक्ति | 243 | 287 |
| ,, ,, | 139 | 145 |
| ,, अर्भकं | 81 | 131 |
| भक्तिं कुर्वन्ति | 44 | 167 |
| ,, | 78 | 117 |
| भक्तिंचमुक्तिदं | 296 | 501 |
| भक्तिसागर | 72 | 92 |
| भक्त्या ददाति | 19 | 72 |
| भद्रविष्टेर्भद्र | 126 | 92 |
| भर्जयामास | 27 | 103 |
| भवति ज्ञान | 257 | 348 |
| भवति प्राण | 130 | 109 |
| ,, ब्रह्म | 133 | 119 |
| ,, इति सुर | 70 | 83 |
| ,, इत्याह | 210 | |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| भवन्ति कुत | 246 | 302 |
| ,, तैः | 223 | 213 |
| ,, नाद | 36 | 137 |
| भवन्ति निर्जले | 291 | 480 |
| ,, न्यास | 3 8 | 143 |
| ,, मम | 50 | 7 |
| ,, ,, | 39 | 149 |
| भवानि कृत | 127 | 97 |
| भस्मत्रिपुण्ड्र | 80 | 125 |
| भस्मरे खां | 156 | 215 |
| भस्मीकरोति | 218 | 191 |
| भस्मीकुर्वन्ति | 78 | 118 |
| भ गंस्वेषां | 310 | 559 |
| भावतत्त्वंमनो | 19 | |
| भुक्तिप्रदंमु | 10 | 219 |
| भुवःस्तनमिव | 266 | 384 |
| भुपावनकरं | 249 | 315 |
| भूपुत्रे नाशनं | 128 | 101 |
| भूरुद्रजङ्गमे | 164 | 249 |
| भूरुद्रजङ्गमा | 151 | 195 |
| ,, | 150 | 193 |
| ,, | 212 | 17[illegible] |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| भूरुद्रजङ्गमा | 305 | 538 |
| ,, | 261 | 363 |
| ,, | 298 | 508 |
| ,, | 229 | 236 |
| ,, | 227 | 23 |
| ,, | 14 | 52 |
| ,, | 39 | 148 |
| ,, | 307 | 547 |
| ,, | 55 | 25 |
| ,, | 54 | 21 |
| ,, | 70 | 86 |
| ,, | 79 | 119 |
| भूरुद्रपावनं | 261 | 364 |
| भूरुद्रा जङ्गमाः | 139 | 148 |
| ,, | 7 | 24 |
| ,, | 17 | 63 |
| ,, | 16 | 60 |
| ,, | 16 | 58 |
| भूरुद्राणां | 122 | 75 |
| ,, | 118 | 57 |
| ,, | 169 | 269 |
| ,, | 150 | 194 |
| ,, | 231 | 246 |

| श्लोकानामादि: | पृष्टसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| भूरु द्राणां | 231 | 245 |
| ,, | 53 | 17 |
| ,, | 60 | 44 |
| भूरुद्रान् जङ्ग | 157 | 221 |
| ,, | 52 | 16 |
| भेतालशाकिनी | 293 | 488 |
| भोगिनां भोग | 312 | 568 |
| भौमवार: | 113 | 34 |
| भ्रमध्ये विश्व | 238 | 272 |

म

| | | |
|---|---|---|
| मङ्गलध्वान | 248 | 311 |
| मणिभद्रो गुरुं | 105 | 1 |
| ,, महा | 47 | 177 |
| मतङ्गपुत्रो | 262 | 367 |
| मत्तकाशीं | 273 | 409 |
| मत्वा तत्कर्म | 136 | 133 |
| मदान्धा:तत्त्व | 259 | 356 |
| मदाष्टकविनि | 173 | 16 |
| मधुशुम्भनि | 314 | 576 |
| मनोज्ञानं | 117 | 55 |
| मनोहरं महा | 75 | 103 |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| मन्त्रकुण्डाब्धि | 177 | 29 |
| मन्त्रसंस्कार | 152 | 199 |
| मन्त्राक्षरन्यास | 223 | 212 |
| मन्त्रणायातं | 307 | 548 |
| मन्त्रालवाल | 200 | 123 |
| मन्दं कुर्वन्ति | 72 | 94 |
| मन्ये द्विजाधिपं | 151 | 197 |
| मम भक्त्या | 261 | 365 |
| ,, | 300 | 518 |
| मलमासान्वि | 148 | 185 |
| मलिनं मन्द | 113 | 36 |
| मस्तके धृत | 57 | 34 |
| मस्तकेषु प्रति | 57 | 35 |
| महातत्त्वं शिव | 98 | 200 |
| महीपते मन्त्र | 104 | 220 |
| मातङ्गविक्रमं | 268 | 392 |
| मानुषाणां | 267 | 388 |
| मां पुत्रं | 281 | 441 |
| मायाबिलप्र | 287 | 463 |
| मायावादमहा | 174 | 20 |
| मायावादिमहो | 177 | 30 |
| मार्गशीर्षे क्षयं | 147 | 182 |
| मांसं नो पातु | 239 | 275 |
| माहेश्वरकुलो | 193 | 94 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| माहेश्वरः शिवो | 64 | 61 |
| मिथ्यातत्त्वं | 127 | 95 |
| मीनलग्ने | 125 | 88 |
| मुक्तिकान्ताङ्ग | 153 | 207 |
| मुक्तिदात्री | 284 | 451 |
| मुक्तिमूर्ति | 43 | 165 |
| मुक्तिमूलं | 71 | 87 |
| मुदा कुर्वन्ति | 280 | 435 |
| मुमुक्षुज्ञान | 79 | 20 |
| मुढकालं | 128 | 99 |
| मूढं नराधमं | 255 | 340 |
| मूलान्मनोहरं | 111 | 28 |
| मृगर्क्षमिन्द्रिय | 11 | 25 |
| मृगाधिपैश्चित्र | 264 | 377 |
| मृत्पुण्ड्र | 293 | 489 |
| ,, | 288 | 466 |
| मृत्पात्रमध्य | 204 | 140 |
| मेदो मे पातु | 239 | 276 |
| मेरुतुल्यैः | 168 | 265 |
| मेषलग्ने महा | 121 | 71 |
| मैत्रं (त्रात्) | 111 | 27 |
| मोक्षदं शुभ | 34 | 130 |
| मोक्षनारीरति | 182 | 48 |
| मोक्षलक्ष्मीः | 229 | 238 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| मोहैर्विचित्तै | 285 | 453 |
| | य | |
| यः करोति | 131 | 114 |
| ,, | 129 | 105 |
| यक्षगन्धर्व | 3 | 8 |
| यतीनां तत्त्व | 126 | 90 |
| यज्ञोपवीत | 286 | 460 |
| यतिराजं नरं | 270 | 401 |
| यतीनां दीक्ष | 296 | 499 |
| ,, देव | 162 | 240 |
| यस्त्वेषां | 138 | 141 |
| यत्तत्वं प्रद | 119 | 62 |
| ,, यत | 124 | 84 |
| ,, तार | 312 | 567 |
| ,, वेद | 122 | 77 |
| ,, सर्वदा | 42 | 161 |
| यध्दयानं योग | 42 | 158 |
| यः पठेदाशु | 245 | 299 |
| यस्मिन् चरित्रे | 75 | 105 |
| यस्मिन् दिने | 149 | 191 |
| यागदीक्षां | 155 | 212 |
| याचयामास | 208 | 156 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| यां दीक्षां च | 153 | 205 |
| यान्ति यानगणे | 85 | 146 |
| या मतिस्तत्त्व | 123 | 80 |
| यया मनोहरा | 284 | 452 |
| या विद्याकल्पि | 33 | 12 |
| या सा पुरातना | 13 | 47 |
| युद्धं बभूव | 26 | 101 |
| ये कुर्वन्ति सदा | 69 | 82 |
| ये काङ्क्षन्ति सदा | 76 | 108 |
| ये कारयन्ति | 135 | 129 |
| ये कुर्वन्ति | 142 | 158 |
| ये निन्दन्ति | 69 | 80 |
| ये पठन्ति सदा | 74 | 101 |
| ,, मम | 244 | 293 |
| ये पश्यन्ति | 32 | 121 |
| ,, | 32 | 123 |
| ,, | 33 | 126 |
| ,, | 31 | 118 |
| ,, | 43 | 163 |
| ये भक्ताःपरम | 52 | 15 |
| ,, | 299 | 513 |
| ये सर्वदा मा | 222 | 211 |
| योगध्यानक्रिया | 301 | 522 |
| योगरूढि दुरा | 178 | |

| श्लोकानामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| योगार्णवमिति | 5 | 17 |
| योगिनस्तस्य | 273 | 410 |
| ,, | 270 | 399 |
| योगिनां योग | 35 | 131 |
| योगीश्वराणां | 311 | 565 |
| यो जनो यश्च | 253 | 331 |
| **र** | | |
| रक्ष रक्ष सुर | 235 | 261 |
| रजसा तेन | 311 | 562 |
| ,, | 311 | 564 |
| रजसायत्कृतं | 309 | 556 |
| रजोदर्शन | 318 | 594 |
| रत्नकुट्टिम | 93 | 177 |
| रत्नश्टङ्कैः स्वर्ण | 62 | 51 |
| रत्नसङ्कीर्ण | 61 | 48 |
| रत्नाकरस्य | 93 | 175 |
| रथवाजिसमा | 167 | 262 |
| रदनान् पातु | 238 | 270 |
| रसशोणित | 181 | 46 |
| रहसि प्रमथ | 206 | 148 |
| राजिकैगधि | 192 | 89 |
| ाज्यार्थान् सत | 59 | 41 |

| श्लोकनामादिः | पृष्ठसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| रुद्रकन्यासमा | 55 | 26 |
| ,, | 27 | 104 |
| रुद्रसूक्तेन | 99 | 202 |
| रुद्राक्षकण्ठ | 303 | 530 |
| ,, | 195 | 100 |
| ,, | 194 | 96 |
| रुद्राणि जगतां | 119 | 63 |
| रेणुकस्य यदा | 91 | 168 |
| रोगघ्नं | 242 | 286 |
| रौद्रेक्षम् | 110 | 21 |
| रौरवं नरकं | 153 | 204 |

ल

| | | |
|---|---|---|
| लभते होम | 316 | 587 |
| लभन्ते सर्वदा | 56 | 31 |
| लभ्यते तस्य | 214 | 178 |
| लयतप्ताग्नि | 209 | 162 |
| ललाटमध्ये | 31 | 117 |
| लिङ्गोद्भवं | 189 | 78 |
| लोकानां लोक | 82 | 134 |

व

| | | |
|---|---|---|
| वक्त्रं मे पातु | 237 | 269 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| वज्रयोगं परि | 140 | 141 |
| वज्रशीला तदा | 64 | 62 |
| वरीयानात्म | 118 | 59 |
| वरुणस्यालयं | 314 | 577 |
| वर्णि ऽन सम | 307 | 545 |
| ,, ब्रह्म | 211 | 167 |
| ,, यम | 211 | 168 |
| ,, वायु | 211 | 166 |
| वसां पातु | 240 | 277 |
| वहेयुर्न्यांय | 234 | 249 |
| वापीकूपत | 210 | 163 |
| वामभागं मनः | 240 | 278 |
| वायवीं पातु | 241 | 282 |
| वायसश्वान | 287 | 464 |
| वायुयोगक्षय | 111 | 26 |
| वायून् चलन | 90 | 164 |
| वायोश्चलत् | 313 | 573 |
| वारनारीस | 93 | 176 |
| वारुणीं तु दिशं | 241 | 281 |
| वालखिल्यादि | 232 | 252 |
| वासं करोति | 267 | 387 |
| वासयामास | 228 | 234 |
| विकाराज्जायते | 98 | 199 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसं० |
|---|---|---|
| विगृह्य देवता: | 65 | 65 |
| विचित्रैमै: श्वत | 61 | 50 |
| विज्ञानं ब्रह्म | 15 | 54 |
| विडम्बयन्तं | 88 | 156 |
| विण्मूत्रमिव | 253 | 332 |
| विद्रावयन्ति सत | 7 | 23 |
| विद्वांसं मुक्ति | 172 | 10 |
| विधातृप्रमु | 103 | 217 |
| विधिवादवि | 177 | 31 |
| विराटरूपान् | 298 | 509 |
| विलासवाद | 178 | 35 |
| बिलिखेत् तत्त्व | 189 | 75 |
| विशोधयन्ति | 26 | 100 |
| विश्वगर्भवि | 183 | 54 |
| विश्वगर्भस्य | 316 | 584 |
| विश्वाधारान् | 299 | 511 |
| विषुवत्पञ्च | 159 | 221 |
| विविधानि मला | 8 | 27 |
| विषुवतोरय | 169 | 271 |
| विष्कम्भं च | 116 | 49 |
| विष्णो: शौर्यादि | 315 | 579 |
| विसृज्य मुक्ति | 67 | 71 |
| विस्तार्य हरि | 212 | 170 |

| श्लोकानामादिः | पटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| वीरभद्रविरु | 142 | 160 |
| वीरमाहेश्व | 228 | 231 |
| ,, | 226 | 227 |
| ,, | 226 | 226 |
| ,, | 223 | 215 |
| ,, | 231 | 247 |
| ,, | 233 | 254 |
| ,, | 233 | 255 |
| ,, | 185 | 62 |
| ,, | 139 | 147 |
| ,, | 141 | 152 |
| ,, | 141 | 155 |
| ,, | 202 | 132 |
| ,, | 144 | 168 |
| ,, | 150 | 192 |
| ,, | 155 | 211 |
| ,, | 155 | 214 |
| ,, | 158 | 225 |
| ,, | 160 | 231 |
| ,, | 167 | 263 |
| ,, | 170 | 2 |
| ,, | 121 | 72 |
| ,, | 131 | 111 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| वीरमाहेश्च | 132 | 117 |
| ,, | 133 | 122 |
| ,, | 139 | 1 4 |
| ,, | 105 | 4 |
| ,, | 106 | 5 |
| ,, | 113 | 35 |
| ,, | 309 | 557 |
| ,, | 312 | 569 |
| ,, | 312 | 571 |
| ,, | 313 | 572 |
| ,, | 316 | 583 |
| ,, | 285 | 456 |
| ,, | 289 | 471 |
| ,, | 300 | 517 |
| ,, | 301 | 519 |
| ,, | 302 | 526 |
| ,, | 306 | 543 |
| ,, | 269 | 395 |
| ,, | 281 | 438 |
| ,, | 283 | 445 |
| ,, | 245 | 296 |
| ,, | 246 | 303 |
| ,, | 94 | 182 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| वीरमाहेश्व | 96 | 190 |
| ,, | 97 | 193 |
| ,, | 98 | 198 |
| ,, | 102 | 213 |
| ,, | 90 | 166 |
| ,, | 68 | 75 |
| ,, | 68 | 78 |
| ,, | 70 | 84 |
| ,, | 60 | 45 |
| ,, | 55 | 28 |
| ,, | 50 | 6 |
| ,, | 30 | 115 |
| ,, | 39 | 147 |
| ,, | 40 | 153 |
| ,, | 23 | 89 |
| ,, | 10 | 35 |
| ,, | 11 | 41 |
| ,, | 19 | 71 |
| ,, | 2 | 5 |
| वीरागम | 243 | 290 |
| वीर्यवृद्धि | 120 | 66 |
| वृश्चिके (कः) | 124 | 83 |
| वृषभं भूसुते | 134 | 124 |

| श्लोकानामादिः | पृष्टसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| वेदमूर्ध्निगतं | 115 | 47 |
| वेदागमानां | 282 | 444 |
| वेदार्थवेष्टि | 154 | 208 |
| वेदात्मानं | 172 | 9 |
| वेदादौ वेदमध्ये | 102 | 214 |
| वेदान्तवेद्यं | 54 | 22 |
| ,, | 79 | 121 |
| वेदावासं | 244 | 292 |
| वेदाश्च सर्वे | 100 | 204 |
| वेष्टितं दिव्य | 167 | 264 |
| वैधृति धृति | 121 | 69 |
| वैशेषिकार्थ | 174 | 17 |
| वैष्णवस्य | 295 | 495 |
| वैष्णवाः कर्म | 21 | 78 |
| ,, तप्त | 259 | 354 |
| वैष्णवेभ्यः | 293 | 490 |
| ,, | 22 | 82 |
| व्रजन्ति नान् | 26 | 99 |
| ,, धर्म | 158 | 224 |
| व्रतिनां व्रतदं | 243 | 288 |
| व्रतिनो मन्त्र | 52 | 13 |
| व्यतिपातो व्याधिरूपं | 118 | 58 |
| व्योमकेशः | 105 | 3 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| **श** | | |
| शकुनिः शाम्भवं | 126 | 93 |
| शक्तिगोलक | 50 | 8 |
| ,, | 257 | 349 |
| ,, | 249 | 317 |
| शक्तिपीठोत्थि | 255 | 338 |
| शङ्खचक्रगदा | 55 | 27 |
| ,, | 211 | 169 |
| शनैश्चरे च | 129 | 102 |
| शम्भुं निरञ्जनं | 1 | 3 |
| शम्भोर्माहात्म | 105 | 2 |
| शमादन्यज्ज | 88 | 157 |
| शस्त्रध्यष्टिलौ | 217 | 189 |
| शस्त्रघातसमो | 25 | 97 |
| शान्तं भक्तिगुणो | 68 | 77 |
| शान्तं भद्रगुणो | 43 | 164 |
| शालितण्डुल | 187 | 69 |
| शासितुं सर्व | 305 | 539 |
| शिखावती | 206 | 150 |
| शिरः पातु | 239 | 273 |
| शिव इत्यक्षरो | 100 | 206 |
| शिवतत्त्वमिति | 13 | 48 |

| श्लोक न मादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| शिवतत्त्वाद्रुद्र | | 15 |
| शिवदीक्षा | 260 | 358 |
| ,, | 258 | 351 |
| ,, | 261 | 366 |
| ,, | 94 | 181 |
| ,, | 156 | 216 |
| ,, | 85 | 144 |
| शिवव्रती | 214 | 179 |
| शिवः शिववतां | 119 | 61 |
| शिवः सत्थो | 284 | 449 |
| शिवसंस्कार | 159 | 282 |
| शिवसूत्रमयं | 11 | 39 |
| शिवसूत्रान्वि | 149 | 190 |
| शिवसूत्रेण | 249 | 316 |
| शिवागम | 269 | 394 |
| शिवात्मजीव | 301 | 521 |
| शिवाधीनं | 77 | 11 |
| शिवेनजायते | 88 | 158 |
| शिशुमारो | 217 | 188 |
| शिष्यान् प्रति | 143 | 166 |
| शिष्यैः सह | 131 | 113 |
| शीलानां साध | 284 | 450 |
| शुद्धदीक्षान्वि | 289 | 473 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्य |
|---|---|---|
| शुद्धदीक्षान | 291 | 482 |
| शुभग्रहान्वि | 140 | 151 |
| शून्यं यथा | 280 | 436 |
| शृङ्गत्रितय | 304 | 534 |
| शृङ्गेषु सर्वदा | 317 | 588 |
| शैलानां किन्न | 315 | 582 |
| शैवपञ्चाक्ष | 141 | 153 |
| श्रीमान् मन्त्र | 63 | 56 |
| श्रुणु गौरि | 113 | 37 |
| श्रुत्वा स्तोत्रं | 167 | 260 |
| श्रौतादिकमतो | 175 | 23 |
| श्वानयोनिशत् | 258 | 353 |
| | ष | |
| षट्चक्रचक्र | 166 | 258 |
| षट्तर्कतार्कि | 81 | 127 |
| षट्पात्रसाध | 179 | 39 |
| षट्शाम्भव | 124 | 82 |
| षट्स्थल | 162 | 241 |
| ,, | 269 | 396 |
| ,, | 53 | 20 |
| षट्स्थल ब्रह्म | 56 | 29 |
| ,, | 260 | 360 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| षडक्षर | 173 | 15 |
| ,, | 101 | 208 |
| षडध्वमान | 201 | 128 |
| षडशीतियु | 153 | 203 |
| षड्वर्गशुद्धि | 106 | 8 |

स

| | | |
|---|---|---|
| स आह भगवान् | 195 | 101 |
| स कालः काल | 132 | 115 |
| स कि ातोऽपि | 270 | 398 |
| संक्रान्तिद्वय | 145 | 173 |
| ,, हीन | 144 | 170 |
| सगुरुर्गुरू | 295 | 498 |
| स जीवो ज्ञान | 12 | 42 |
| सज्जायां बघ्न | 251 | 322 |
| स तु देहं प्रि | 252 | 327 |
| सदाध्यापनं | 48 | 180 |
| सदानन्दं नि | 79 | 122 |
| स धीरः सात्त्वि | 257 | 347 |
| सनत्कुमारो | 102 | 215 |
| सप्तकोटिम | 100 | 207 |
| ,, | 193 | 92 |
| सप्तमातृनि | 267 | 386 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| सप्तमातृल | 254 | 336 |
| सप्तव्यसन | 175 | 22 |
| सप्तसंस्थक्रि | 180 | 40 |
| सप्तसंस्थाप | 38 | 146 |
| स भवेत् तेन | 253 | 330 |
| स भवेन्मम | 222 | 209 |
| समर्थो भवति | | 158 |
| समर्थो हि प्रिये | 310 | 560 |
| समस्तसम्पत्स | 222 | 210 |
| स मातङ्ग | 274 | 413 |
| ,, | 275 | 149 |
| समुद्रमध्ये | 304 | 535 |
| समूढमिति | 255 | 339 |
| सम्पत्ता | 108 | 15 |
| सयाति मम | 244 | 295 |
| ,, | 246 | 300 |
| ,, | 252 | 326 |
| ,, | 16 | 270 |
| सयाति रौरवं | 251 | 323 |
| स योगी च | 283 | 448 |
| ,, | 42 | 159 |
| सरीसृपाणां | 77 | 111 |
| सरीसृपाः सदा | 233 | 253 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसं० |
| --- | --- | --- |
| सर्वकर्माणि | 318 | 595 |
| सर्वतत्त्वात्म | 34 | 129 |
| सर्वधर्मान् | 157 | 219 |
| सर्वदा जङ्गमं | 86 | 150 |
| सर्वमन्त्रान् | 101 | 210 |
| सर्वलोके | 84 | 142 |
| सर्ववेदान्त | 279 | 430 |
| सर्ववेदार्थ | 161 | 238 |
| सर्वशाकस | 205 | 143 |
| सर्वशीलक्रि | 303 | 538 |
| सर्वागमस | 2 | 6 |
| सर्वासां मातृ | 37 | 142 |
| समस्तशास्त्र | 45 | 171 |
| सर्वेषां शम्भु | 317 | 591 |
| सवनत्रय | 290 | 474 |
| ,, | 155 | 213 |
| सविकल्पार्थ | 177 | 32 |
| सर्वज्ञानस | 303 | 527 |
| सव्यं पायात् | 240 | 279 |
| संसारसागरो | 77 | 114 |
| सहस्रदल | 81 | 281 |
| ,, | 197 | 108 |
| साद्यारब्यतत्त्व | 19 | 70 |

अकाराद्यनुक्रमणिका


| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| सायुज्यं | 157 | 220 |
| सायुज्यजन्म | 299 | 514 |
| सा!विद्याख्ये | 41 | 157 |
| सिद्धगन्धर्व | 264 | 375 |
| सिद्धविद्याधर | 37 | 140 |
| सिद्धसाध्यस | 206 | 149 |
| सिद्धेस्तत्त्वयु | 118 | 56 |
| सिंहलग्न | 122 | 76 |
| सुखदु:खानि | 59 | 43 |
| सुवर्णनिवि | 1 71 | 7 |
| सुषुप्तियोग | 183 | 51 |
| सुषुप्तौमोहः | 17 | 64 |
| ,, स्वप्ने | 10 | 37 |
| सूक्ष्मवस्त्राणि | 268 | 389 |
| सूर्ये चापं | 130 | 110 |
| सूर्ये मकर | 130 | 108 |
| सौभाग्यत्वं स्व | 309 | 555 |
| सौम्ये चास्तं | 128 | 100 |
| सौरवादक्रिया | 180 | 42 |
| स्तोतुं तत्त्वसमो | 227 | 229 |
| स्तोतुं सुरेन्द्र | 84 | 139 |
| स्तोतुं सदा | 159 | 226 |
| स्तोत्रं कुर्वन्ति | 69 | 79 |
| ,, | 91 | 167 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्या |
|---|---|---|
| स्नानसन्ध्या | 179 | 38 |
| स्निग्धमन्त्र | 86 | 149 |
| स्फोटकं द्विवि | 137 | 138 |
| स्मितवानात्म | 96 | 188 |
| स्मृतास्ते रौरवं | 260 | 361 |
| स्वरदीक्षा | 287 | 461 |
| स्वरव्यञ्जन | 199 | 117 |
| स्वरातीतं गुण | 37 | 139 |
| स्वरैरुदात्त | 300 | 516 |
| स्वर्णवस्त्राणि | 21 | 81 |
| स्वर्णस्वरूपान् | 185 | 63 |
| ह | | |
| हर शम्भो | 213 | 28 |
| हव्यकव्यवि | 201 | 125 |
| हस्तमस्तक | 184 | 58 |
| ,, | 225 | 223 |
| हिमाद्रिः सर्वदा | 315 | 580 |
| हिंसां कुर्वन्ति | 59 | 42 |
| हृत्पद्मकर्णि | 37 | 141 |
| हृत्पद्मपीठ | 85 | 143 |
| हृत्पद्ममध्ये | 36 | 136 |
| हृदयं पातु | 236 | 264 |

| श्लोकानामादिः | पुटसंख्या | श्लोकसंख्य |
| --- | --- | --- |
| हृदि प्राणं प्रति | 12 | 44 |
| हृषीकविषया | 163 | 246 |
| हेरम्बषण्मुख | 216 | 186 |
| हेरम्बः सर्वदा | 56 | 32 |
| हेरम्बस्कन्द | 230 | 244 |
| ,, | 254 | 334 |
| हे स्व मिन् | 215 | 181 |
| होमदीक्षासमा | 156 | 218 |


इति वीरागमोत्तर-पटलचतुष्टय-

श्लोकानामकाराद्यनु-

क्रमणिका समाप्ता

Veershaiva
&
Lingayata

Tamila
shaiva

(2)